वन्दे मातरम्

राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती के अवसर पर

अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

29 वाँ अंक

2024-25

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता 700 001

वन्दे मातरम्

सत्यमेव जयते

'वंदे मातरम्'

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

उनत्तीसवां(29 वां) अंक 2024-25

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता– 700 001

वन्दे मातरम्

पत्रिका परिवार

संरक्षक : श्री अतुल प्रकाश

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

परामर्शदातृ समिति : श्रीमती शैलजा खरे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री अल्तमश गाजी, उपमहालेखाकार(पेंशन,लेखा एवं वीएलसी)

श्री शंभू दयाल, उप महालेखाकार (निधि)

श्री रेबती रंजन पोद्दार, व. लेखा अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)

संपादक : श्री अरुण कुमार, हिंदी अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)

उप-संपादक : श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

सहायक : श्री अतुल कुमार,सहायक लेखा अधिकारी

श्री राकेश भारती, वरिष्ठ अनुवादक

श्री आशीष कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

श्री सचिन प्रसाद, कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादकमंडल का सहमत होना
आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते है।

वन्दे मातरम्

श्री अतुल प्रकाश
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स,कोलकाता – 700001

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका 'वंदे मातरम्' का 29वां अंक राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालयी परिवार की श्रद्धा एवं निष्ठा को प्रमाणित करता है। इस वर्ष हिंदी को भारत संघ की राजभाषा बने 75 वर्ष पूरे हुए। हिंदी की इस अबाधित यात्रा ने पूरे देश को भाषाई तौर पर बहुत मजबूत किया है। इस अंक में संकलित रचनाएँ सामाजिक परिप्रेक्ष्य के कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को उजागर करने में सफल हुई हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी को ढेरों बधाई। आगामी अंकों के लिए रचनात्मक एवं संपादकीय स्तर पर उत्कृष्टता हेतु आपके विचारों एवं सुझावों का स्वागत है।

अतुल प्रकाश
महालेखाकार

वन्दे मातरम्

श्रीमती शैलजा खरे
वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)

संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 29 वें अंक का सफल प्रकाशन हो रहा है, जो कार्यालय परिवार के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा में यह एक सकारात्मक योगदान है। संपादक मंडल और रचनाकारों के योगदान के लिए हार्दिक बधाई और अभिनंदन।

पत्रिका के भावी अंकों के लिए सभी पाठकों की समालोचना की प्रत्याशा रहेगी जिससे आगामी अंकों को और भी गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।

सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

शैलजा

शैलजा खरे
वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)

संपादकीय

संपादक की कलम से .....

प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा हिंदी दिनांक 14 सितम्बर, 2024 को हीरक जयंती समारोह मनाने जा रही है एवं इस अवसर पर हमारे कार्यालय की गौरवमयी अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 29वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । कार्यालय में एवं कार्यालय के बाहर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है एवं इसी पुनीत कार्य में 'वन्दे मातरम्' पत्रिका पिछले कई वर्षों से समर्पित है । हमारे कार्यालय के रचनाकारों के विचार केन्द्र सरकार के अन्य कार्यालयों में एवं आमजन तक पहुंचाने में पत्रिका एक सशक्त माध्यम है । राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा नियम, राजभाषा अधिनियम एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य का अनुपालन सुनिश्चित कराने में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है ।

हिंदीतर भाषी क्षेत्र में कार्यालय होने के बावजूद कार्यालय के प्रबुद्ध एवं हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही प्रत्येक वर्ष 'वन्दे मातरम्' पत्रिका के दो अंकों का प्रकाशन किया जा रहा है । यह अपने-आप में एक गर्व की बात है । पत्रिका प्रकाशन में परामर्शदात्री समिति के सदस्य, सभी रचनाकारों, उपसंपादक एवं हमारे सहकर्मी का पूर्ण सहयोग रहा है । पत्रिका का प्रकाशन होने से कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी लेख, कहानी, कविता आदि लिखने का प्रयास करते हैं जिससे कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का माहौल तैयार होता है, उनमें रचनात्मकता एवं सृजनशीलता का विकास होता है ।

'वन्दे मातरम्' पत्रिका के आवरण पृष्ठ को अधिक आकर्षक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है । पत्रिका में विविध प्रकार की रचनाओं का समावेशन किया गया है । सभी रचनाकारों द्वारा रचित विभिन्न प्रकार की रचनाएँ पत्रिका को और अधिक रोचक बनाती है । समय -समय पर कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ भी प्रस्तुत की गई है । पत्रिका के कवर पृष्ठ पर सफेद कास के फूल का मनोरम दृश्य आकर्षक है । ऐतिहासिक विश्व प्रसिद्ध हुगली नदी के अंदर से होकर जाने वाली मेट्रो लाईन के दृश्य को पत्रिका के कवर पृष्ठ पर प्रमुखता से स्थान दिया गया है । राजभाषा की सेवा में समर्पित 'वन्दे मातरम्' पत्रिका के कवर पेज पर 'राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती' कोटेशन शामिल किया गया है ।

'वन्दे मातरम्' पत्रिका पिछले कई वर्षों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में समर्पित रही है और आगे भी रहेगी, यही हमारी कामना है । पत्रिका आपके कर-कमलों में सादर समर्पित है । आप सभी विद्वान पाठकों के सुझाव पत्रिका के अगले अंक के लिए प्रेरक एवं मार्गदर्शी साबित होंगे।

शुभकामनाओं सहित ।

जय हिंद, जय हिंदी ।

संपादक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA,
THIRUVANANTHAPURAM – 695 001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/[illegible] दिनांक 09.05.2024

सेवा में
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, [illegible],
कोलकाता- 700001

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : [illegible] /14/2023-24/16 दिनांक 10.04.2024

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। [illegible] पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ [illegible], ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका 'वंदे मातरम्' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
[illegible]
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit) Chhattisgarh, Raipur

क्र./हिन्दी कक्ष/पत्राचार/2023-24/[illegible] 318
दिनांक Date : 01-05-2024

प्रति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन हिंदी सेल
भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखा एवं हक),
पश्चिम बंगाल-700001

विषय:- अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक का प्रेषण।
संदर्भ :-[illegible]/14/2023-24/16 दिनांक 10.04.2024

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक की पत्रिका प्राप्त हुई। [illegible]

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

[illegible]
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पता - विधानसभा, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 492005 (छत्तीसगढ़)
Post - Vidhansabha, Zero Point, Raipur - 492005 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : [illegible] • फैक्स/Fax : [illegible] • ईमेल/Email : [illegible]

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
डी जी ए सी आर भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110 002
DGACR Building, Indraprastha Estate, New Delhi -110 002

[illegible]/2024-25/ [illegible] दिनांक: 30.04.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय: हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 10.04.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक की प्रति [illegible] प्राप्त हुई। [illegible]

इसके अतिरिक्त [illegible]

पत्रिका के [illegible] संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
[illegible]
हिंदी अधिकारी

Ph. : 91-11-[illegible]
Fax : 91-11-[illegible]
e-mail : [illegible]
Website : [illegible]

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110 002

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT,
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

सं. [illegible] पत्रि./23/2023-24/05 दिनांक 03.05.2024

सेवा में,
व. लेखा अधिकारी
(प्रशासन हिंदी सेल)
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महालेखाकार(लेखा एवं हक)
पश्चिम बंगाल 700001

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, [illegible]

[illegible]

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
[illegible]
संपादक एवं हिंदी अधिकारी

दूरभाष / Phone : +91-11-23702357, फैक्स / Fax : +91-11-23702359, E-mail : [illegible]

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH 160017

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय:- अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 28वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" का 28वां अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व साजसज्जा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएं
1	श्री सुभाष चंद्र मंडल	एक कहानी
2	श्री संजय कुमार	[illegible]
3	सुश्री [illegible]	[illegible]
4	सुश्री [illegible]	कविता
5	श्री [illegible] कुमार	[illegible]

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

Signed by Ekta
Date: 29-04-2024 13:18:09

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011

दिनांक [illegible].04.2024

प्रति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सेल)
महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग ,2 गवर्नमेंट प्लेस पश्चिम, कोलकाता-700001

विषय : अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 28वें अंक प्राप्ति बावत।
संदर्भ : आपके पत्र क्र.पी.ए.जी.ए.ई./02/05/रा.भा./14/2023-24/18 दिनांक 10.04.2024।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "वंदे मातरम्" के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर [illegible], एक शायरी, [illegible] आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। [illegible] पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट न. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH 160 020
सत्यमेव जयते

दिनांक/Dated [illegible].04.2024

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी हिन्दी कक्ष
[illegible]
महालेखाकार (लेखा एवं हक.), प. बंगाल

विषय - अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका वंदे मातरम् के 28वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका वंदे मातरम् के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। इनमें [illegible] आदि रचनाएँ काफी [illegible] हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की [illegible] है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय
हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General
(Audit-II), West Bengal

[redacted]

2 6 APR 2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्नमेंट प्लेस पश्चिम, कोलकाता – 700001

To,
The Sr. Accounts Officer/Hindi Cell,
O/o The Accountant General (A & E), West Bengal,
Treasury Building, 2, Government Pl, B.B.D. Bagh,
Kolkata, West Bengal 700001

महालेखाकार (लेखा एवं हक) प. बं.
A.G. (A&E) West Bengal
RCD. 2024-25
22 अप्रैल 2024
16996

विषय: अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 28 वें अंक के प्रेषण के संबंध में

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 28 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। [illegible]

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में [illegible] पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

5th MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-[illegible], FAX: [illegible], e-mail: [illegible]

वन्दे मातरम्

अनुक्रमणिका

क्र. स.	रचना का शीर्षक	रचनाकार का नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	विधा	पृष्ठ
1	बलिदान	अतुल प्रकाश	महा लेखाकार	यात्रा वृतांत	1
2	जाने कहाँ गए वो दिन...	रेबती रंजन पोद्दार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	4
3	हिंदी हमारी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा	संजय कुमार	डी ई ओ	लेख	9
4	महिला सशक्तिकरण	सौमी बंदोपाध्याय	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	13
5	अजामिल -वो पापी जिसने स्वर्ग प्राप्त किया	आनंद कुमार पांडेय	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	15
6	आखिरी सफर (श्मशान)	धनेश कुमार	डी ई ओ	कविता	18
7	कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	सुनीता राउत	एम टी एस	रिपोतार्ज	20
8	बेरोजगारी - एक कहानी	आरती कुमारी	लेखाकार	कहानी	22
9	डीपफेक	सोनू कुमार –II	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	26
10	स्क्रीन में उलझा बचपन	सुस्मिता सरकार	वरिष्ठ लेखाकार	लेख	30
11	समोसा भारत का स्नैक्स सम्राट	पंकज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	लेख	34
12	एस्पिरेंट	सचिन प्रसाद	कनिष्ठ अनुवादक	लेख	36
13	एक नारी	अंशु बाला	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	40
14	जीवन का नया अध्याय	अमित कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	42
15	शिकार की अनोखी कहानी	सुभाष चंद्र मंडल	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	46
16	भ्रमण – स्टेच्यू ऑफ यूनिटी	अरुण कुमार	हिंदी अधिकारी	यात्रा वृतांत	48
17	टूटी चप्पल	कौशल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	52
18	मंदिरों का गाँव मलूटी	पंकज कुमार तिवारी	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	55
19	मोबाइल युग	अभिजीत दत्ता	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	59
20	मौन स्वीकृति	प्रियंका संजीव सिंह	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	61
21	सभ्यता की निर्मिति	आशीष कुमार	कनिष्ठ अनुवादक	लेख	65
22	सुनो जानेवाले	श्रीजिता नाग	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	69
23	पछतावा	आस्था गुप्ता	लेखाकार	कहानी	71
24	स्वाधीनता का सुख	तुषार बरन मारिक	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	कविता	74
25	प्रकृति का बदला	राकेश भारती	वरिष्ठ अनुवादक	लेख	75
26	क्षण भर का जीवन	अंकित कुमार झा	एम टी एस	कविता	79
27	नई पोस्टिंग	अतुल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	81
28	काव्य सुधा	तापसी आचार्य बसाक	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	85
29	क्या जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण में मदद करेगा एआई (AI)	अनुज साव	लेखाकार	लेख	86

बलिदान

मुझे यात्रा करने का शौक है और मुझे यह अत्यधिक पसंद भी है। यात्रा करने के कारण बहुत सारी जानकारी भी प्राप्त हो जाती है जो किताबों या फाइलों में नहीं वर्णन की जा सकती है। यात्राएं, हमें नए स्थानों पर जाने तथा नए लोगों से मिलने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करती हैं। वहां की अनेक चीजों के अच्छी तरह जान पाते हैं। नए स्थानों की यात्रा करने से उस स्थान का अच्छे प्रकार से अवलोकन कर सकते हैं। हम अपने मन में ऐसी तस्वीरें बना लेते हैं जो कभी नहीं भूलते। किसी भी प्रदेश की प्राकृतिक स्थिति क्या है, वहां लोग कैसे रहते हैं, खान-पान क्या है, क्या सुविधाऐं उपलब्ध हैं, वहां के आचार-विचार आदि के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति में अवलोकन की शक्ति अधिक होती है, उनको यात्रा करने का आनंद कुछ ज्यादा ही आता है। अवलोकन और ज्ञान में बहुत गहरा संबंध है। जैसा कि आप जानते होंगे, नेतृत्व करने के लिए सुनना - बोलने की अपेक्षा ज्यादा जरूरी है। सुनने में भी अवलोकन का महत्वपूर्ण योगदान है, तो प्राय: यह कोशिश करनी चाहिए कि मनन कर ध्यान से सुने। अवलोकन के आयाम काफी विस्तृत होते हैं। अवलोकन के विषय में ज्ञान उस व्यक्ति-विशेष पर निर्भर करता है। जैसा ज्ञान प्राप्त होता है तथा उसका जीवन में बहुत उपयोग होता है क्योंकि वही एक सीमा निर्धारित करती है। दूसरे के चर्या से अवलोकन की सीमा का विस्तार होता है। इसलिए ज्ञान-विमर्श होते रहना चाहिए। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ, कई यात्राओं के दौरान मुझे ऐसा अनुभव हुआ है। एक लेखक के अनुसार बचपन में यात्रा करना शिक्षा का एक भाग है एवं बड़े होने पर यह अनुभव का एक भाग है। कुछ लोग अलग तरह से भी सोचते हैं उनके लिए

प्राकृतिक स्थलों में जाना, महल एवं किलों में जाना, पुरातन एवं खंडहरों में एवं पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालयों में जाना, यह कितना उपयोगी होगा, इस पर विचारों में काफी विभिन्नता देखने को मिलेगी। वह यह भी कहते हैं कि व्यक्ति इनके बारे में पढ़ सकता है अथवा तस्वीरें देख सकता हैं, जिनमें विश्व की महत्वपूर्ण जगहों को देखा जा सकता है। किंतु वह भूल जाते हैं कि सत्य को पास से देखने, उसे छूने एवं महसूस करने से एक अलग प्रकार की संतुष्टि एवं रोमांच की अनुभूति होती है। कार्य करने के बाद यात्रा स्वाभाविक रूप से मन को प्रसन्न करने वाला होता है

यात्रा के दौरान मुझे देश में बहुत सारे जगहों पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिसके लिए मैं सौभाग्यशाली हूँ। जिसकी वजह से भारत एवं उसकी आत्मा के बारे में मुझे ज्ञान हुआ। भारत के अनगिनत ऐतिहासिक भवनों और महलों की सुंदरता देखने को मिली। इस क्रम में मैंने केरल, नागालैंड, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तराखंड, हिमाचल-प्रदेश, पश्चिम-बंगाल, इत्यादि कुछ अधिक काल तक प्रवास किया और इसके अलावा भी अन्य शहरों में, अन्य जगहों पर गया हूँ। मुझे विदेश में भी कुछ जगहों पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ, तो मुझे वहां की भी वेश-भूषा और रहन-सहन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। फिर मैंने गौर किया, मनुष्यों की बात करें तो देखने में कैसा भी हो, हँसता, रोता, इत्यादि एक जैसा ही है। यानि इस धरा पर अगर मनुष्यों की बात करें तो बहुत सारे अलग गुण-व्यवस्था के अंतर रहे हैं लेकिन सबका मौलिक स्वभाव एक जैसा ही है। इसलिए मुझे सारा विश्व ही अपना लगता है। कोई पराया नहीं लगता है। अगर हम अर्थव्यवस्था की बात करें तो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था दूसरे देश की अर्थव्यवस्था के साथ बहुत जुड़ी हुई होती है। जैसे भारत में शुरू से जो लोग साबूदाना खाते है वास्तव में वह टैपिओका से बनता है और यह 19वीं सदी में भारत में लाया गया था जिसका उपयोग पकवानों और विशेषकर फलाहार में खूब होता है। टैपिओका का उत्पादन सर्वप्रथम ब्राजिल में

हुआ था। गेहूँ भी हम बड़े चाव से खाते है। उसका भी प्रयोग भारत में 60 के दशक में अकाल के दौरान बढ़ा।

आज जिसको हम अपना मान कर चलते हैं वह भी किसी-न-किसी देश के विचारों के आदान-प्रदान से हमारी संस्कृति में आया है। बहुत सारे जगहों पर भेद-भाव देखने को मिलता है, तो मेरा ऐसा मानना है, मौलिक रूप से देखा जाए तो भेद-भाव कम हो सकते है।

अभी परखना तो मुझे बहुत था लेकिन मुझे समझ तभी आया जब मैं यात्रा कर रहा था। यात्रा के क्रम मेंमैं एक स्थान पर गया तो वहां पर्यावरण को देखकर मैं बहुत हर्षित हुआ। यहांहमे प्रकृति की सुंदरता देखने को मिली। उसी क्रम में मैंने एक छोटी-सी भेड़ देखी जो कि दूसरी पहाड़ी पर थी, वह नीचे उतर रही थी औरकुछ देर बाद ऑखों से ओझल हो गई। फिर मैं आगे की ओर बढ़ा और कुछ देर यात्रा करने के बाद जब मैं गंतव्य पर पहुँचा तो वह भेड़ मेरे पीछे थी। मैं आश्चर्यचकित रह गया और सोचा कि क्या वह मुझसे मिलने आई थी। मैंने हाथ बढ़ाया तो वह मेरे गोद में आ गई, मेरे मित्र ने तस्वीर भी लिया, वह आज भी मेरे मस्तिष्क में अंगित है। मेरे मित्र ने भी भेड़ के साथ तस्वीर लेनी चाही मगर भेड़ उनके पास नही गई। मनुष्यों के साथ भी पशुओं का लगाव हो जाता है, संबंध चाहे पूर्व जन्म का हो, या वर्तमान जन्म का, यह तो कोई नहीं जानता है, लेकिन यह मात्र एक संयोग नहीं है। यह सब देखने के बाद आपकी यात्रा का अनुभव और भी उत्तम हो जाता है। एक बार ऐसे ही यात्रा के क्रम में एक जगह मुझे एक पॉच साल का छोटा-सा बच्चा दिखा, सौम्य, गंभीर, मुखमंडल और मनोहर था। वह बिल्कुल चुप था। मैंने उससे पूछा, 'तुम इतने शांत क्यों हो',क्या चाहिए तुम्हें ?। उसने बड़े ही सरल भाव से उत्तर दिया 'बलिदान'।

यात्राओं से मनुष्य का कायाकल्प हो जाता है। ज्ञान अर्जन में अति सहायक होती है एवं निर्णय करने के लिए आयाम परिदृश्य इत्यादि की सीमा बढ़ा देती है।अत: कार्य के बीच यात्रा का आनंद लेना चाहिए। भारत में विभिन्न स्थानों की यात्राओं की सूची बनाई जाए तब शायद बहुत जन्मों में भी मनमोह करने वाली यात्रा के अनुभव समाप्त नहीं होगी।

शुभ कामनाओं सहित।

अतुल प्रकाश
महालेखाकार

जाने कहाँ गए वो दिन...

पिछले अंक में मैंने महान संगीत निर्देशक श्री एस. डी. बर्मन द्वारा रचित धुनों पर चर्चा की थी। आशा है कि मेरे पाठकगण श्री एस. डी. बर्मन द्वारा रचित कुछ सदाबहार गीतों को याद करेंगे और आनंदित होंगे।

इस अंक में मैं महान संगीत निर्देशक शंकर जयकिशन जी द्वारा निर्मित कुछ अविस्मरणीय गीतों को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

शंकर जी का पूरा नाम था – शंकर सिंह रघुवंशी। उनका जन्म 15 अक्टूबर, १९२२ को हैदराबाद में हुआ था और जय किशन जी का पूरा नाम था जयकिशन दयाभाई पांचाल था। उनका जन्म ०४ नवम्बर, १९२९ को गुजरात में हुआ था। शंकर जी तबला बजाया करते थे और जयकिशन जी हार्मोनियम। जब ये दोनों एक साथ मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में संगीत संचालन करने लगे तब हिंदी फिल्मी गीतों की परिभाषा बदल गई थी। उस समय के बड़े – बड़े संगीत निर्देशक भी अचंभित रह गए। इन दोनों ने एक साथ मुंबई में बहुत फिल्मों में संगीत निर्देशन किया और कई सौ सुंदर गीतों को बनाया। प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक और निर्माता अपनी फिल्मों में इनको लेने के लिए कतार में खड़े रहते थे।

इन दोनों ने एक साथ 1971 तक फिल्म इंडस्ट्री में काम किया और 1971 में जयकिशन जी का देहांत हो गया। उसके बाद शंकर जी ने अकेले 1987 में अपनी मृत्यु तक, बहुत संगीत संचालन किया लेकिन वो सब दोनों के नाम से ही प्रकाशित हुआ

इन दोनों से प्रेरित होकर बाद में मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में और भी युगल संगीतकार आए और काम भी किया। आप जानते ह कल्याणजी आनंदजी और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल की जोड़ी भी ऐसे ही मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में लोकप्रिय हुई। शंकर जयकिशन जी ने दो प्रसिद्ध गीतकार के लिए सबसे ज़्यादा संगीत निर्माण किया। एक हैं - शैलेंद्र और दूसरे हैं - हसरत जयपुरी। महान कलाकार और फिल्म निर्देशक राज कपूर इनकी जोड़ी को खूब पसंद करते थे और उनकी जितनी हिट फिल्में हुई उनमें संगीत संचालन का काम इसी जोड़ी को सौंप देते थे और उनके बनाए गीत आज भी प्रसिद्ध और हिट हैं। इन गीतों को आवाज़ दिया है – मुहमद रफ़ी, लता मंगेशकर, मुकेश और मन्ना दे ने। इस लेख में हम ऐसे कुछ गीत याद करेंगे।

वर्ष – १९५६ राज कपूर और नर्गिस द्वारा अभिनीत फ़िल्म 'चोरी चोरी' रिलीज़ हुई। हसरत जयपुरी के बोल पर दो गीतों का संगीत संचालन किया था शंकर जयकिशन जी ने और गाया था महान गायक मन्ना दे और लता मंगेशकर ने और दोनों गाने बहुत लोकप्रिय हुए। दोनों गाने हैं:-

क) "आजा सनम मधुर चाँदनी में हम"।

ख) "ये रात भीगी भीगी"।

शंकर जयकिशन जी के संगीत संचालन पर लता मंगेशकर जी ने बहुत गीत गाया है और उसमें से कुछ गाने ऐसे भी हैं जो आज भी लोग सुनते हैं- जैसे कि

वर्ष 195। में फ़िल्म 'आवारा' रिलीज़ हुई थी जिसमें राज कपूर और नर्गिस ने मुख्य भूमिका निभाई थी। शैलेंद्र जी के बोल पर शंकर जयकिशन जी ने संगीत दिया था। गीत था 'घर आया मेरा परदेसी।'

वर्ष 1956 की फ़िल्म 'चोरी चोरी' थी। हसरत जयपुरी के बोल पर लता जी ने गीत गया था - 'पंछी बनू, उड़ती फिरूँ', जिसे सुनकर आज भी दिल गगन पर उड़ने लगता है।
वर्ष 1959 की फ़िल्म 'अनाड़ी', हीरो और हीरोइन थे राज कपूर और नर्गिस। गीतकार थे 'शैलेंद्र' और गाया था लता जी 'तेरा जाना, दिल के अरमानों का लूट जाना'। एक टूटे हुए दिल की आवाज़ सुनकर अश्रुधार निकल जाती है।
उसी फ़िल्म में मुकेश जी और लता जी का एक गाना है जिसे आज भी सुनकर दिल खुश हो जाता है। वो गीत है 'वो चंद खिला, वो तारे हँसे'।
लता जी का एक और सुपरहिट गीत है जो आज भी सब लोग गुनगुनाते हैं। वो फ़िल्म थी 'दिल अपना और प्रीत पराई', जो 1960 में रिलीज़ हुई थी और वो गीत है 'अजीब दास्ताँ है ये, कहाँ शुरू कहाँ खत्म'। इस गाने के गीतकार थे शैलेंद्र जी और इस फ़िल्म में अभिनय किया था राज कुमार और मीना कुमारी ने।

राज कुमार, मीना कुमारी और राजेंद्र कुमार की एक फ़िल्म थी जिसका नाम था 'दिल एक मंदिर', जो वर्ष 1963 में रिलीज़ हुई थी। इस फ़िल्म के भी गीतकार थे शैलेंद्र जी और लता जी का गाया हुआ एक गीत था 'रुक जा रात ठहर जा रे चंदा'। ये गीत आज भी दिल को छू जाता है।

वर्ष 1964 में शम्मी कपूर और साधना की फिल्म 'राजकुमार' रिलीज़ हुई थी। शैलेंद्र जी के बोल पर लता जी की आवाज़ में शंकर जयकिशन जी ने एक धुन सजाया था, जिसके बोल थे 'आजा आई बहार', जिसे सुनकर जवान लड़कियों का दिल आज भी मचल उठता है।

राजेंद्र कुमार और साधना की एक और फिल्म थी 'आरज़ू' जो वर्ष 1965 में रिलीज़ हुई थी। लता जी ने उसमें एक गीत गाया था 'बेदर्दी बालमा तुझको मेरा मन याद करता है'।

वर्ष 1966 में एक फिल्म बहुत हिट हुई थी, जिसमें जय मुखर्जी और आशा पारेख ने अभिनय किया था, जिसका नाम 'लव इन टोक्यो' था। इस फिल्म में भी लता जी का गाया गीत बहुत प्रसिद्ध हुआ था –'सायोनारा सायोनारा, वादा निभाऊंगी सायोनारा'।

वर्ष 1966 में फ़िल्म 'आम्रपाली' में लता जी ने गाया था –'तुम्हें याद करते - करते'। इस फ़िल्म में अभिनय किया था सुनील दत्त और वैजयंती माला ने। शंकर जयकिशन जी का कम्पोज़ किया हुआ ये गीत बहुत हिट हुआ था।

ऐसे ही मुहमद रफ़ी साब ने शंकर जयकिशन जी की धुनों पर बहुत से गीत गाये हैं। वर्ष 1961 में 'जंगली' फ़िल्म रिलीज़ हुई थी जिसमें शम्मी कपूर और सायरा बानो ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इस फ़िल्म में रफ़ी साब ने एक गीत गाया था 'एहसान तेरा होगा मुझ पर' - यह कितना हिट हुआ था, ये बताने की ज़रूरत नहीं है।

वर्ष 1964 की एक फ़िल्म 'साँझ और सवेरा' में रफ़ी साब ने सुमन कल्याणपुर के साथ एक युगल गीत गाया और दूसरा आशा भोंसले के साथ 1967 में आई फ़िल्म 'एन इवनिंग इन पेरिस' में गाया। 'साँझ और सवेरा' फ़िल्म का गीत था 'अज हूँ ना आए बालमा, सावन बीता जाए'। 'एन इवनिंग इन पेरिस' का गीत था 'रात के हमसफ़र, सब के घर रोशनी'।

शंकर जयकिशन जी ने वर्ष 1966 में रिलीज़ हुई फ़िल्म 'सूरज' जिसमें राजेंद्र कुमार ने मुख्य भूमिका निभाई थी, उसके एक लोकप्रिय गाने 'बहारों फूल बरसाओ' को कम्पोज़ किया था, जिसे रफ़ी साब ने गाया था।

वर्ष 1967 में आई फ़िल्म 'एन इवनिंग इन पेरिस' में रफ़ी जी का गाया हुआ एक और गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था, जिसके बोल थे 'आज ऐसा मौका फिर'।

वर्ष 1951 में फ़िल्म 'आवारा' रिलीज़ हुई थी जिसमें राज कपूर और नर्गिस ने मुख्य भूमिका निभाई थी। शैलेंद्र जी के बोल पर शंकर जयकिशन जी ने संगीत दिया था। गीत था 'घर आया मेरा परदेसी।'

वर्ष 1956 की फ़िल्म 'चोरी चोरी' थी। हसरत जयपुरी के बोल पर लता जी ने गीत गया था - 'पंछी बनू, उड़ती फिरूँ', जिसे सुनकर आज भी दिल गगन पर उड़ने लगता है।
वर्ष 1959 की फ़िल्म 'अनाड़ी', हीरो और हीरोइन थे राज कपूर और नर्गिस। गीतकार थे 'शैलेंद्र' और गाया था लता जी 'तेरा जाना, दिल के अरमानों का लूट जाना'। एक टूटे हुए दिल की आवाज़ सुनकर अश्रुधार निकल जाती है।
उसी फ़िल्म में मुकेश जी और लता जी का एक गाना है जिसे आज भी सुनकर दिल खुश हो जाता है। वो गीत है 'वो चंद खिला, वो तारे हँसे'।
लता जी का एक और सुपरहिट गीत है जो आज भी सब लोग गुनगुनाते हैं। वो फ़िल्म थी 'दिल अपना और प्रीत पराई', जो 1960 में रिलीज़ हुई थी और वो गीत है 'अजीब दास्ताँ है ये, कहाँ शुरू कहाँ खत्म'। इस गाने के गीतकार थे शैलेंद्र जी और इस फ़िल्म में अभिनय किया था राज कुमार और मीना कुमारी ने।

राज कुमार, मीना कुमारी और राजेंद्र कुमार की एक फ़िल्म थी जिसका नाम था 'दिल एक मंदिर', जो वर्ष 1963 में रिलीज़ हुई थी। इस फ़िल्म के भी गीतकार थे शैलेंद्र जी और लता जी का गाया हुआ एक गीत था 'रुक जा रात ठहर जा रे चंदा'। ये गीत आज भी दिल को छू जाता है।

वर्ष 1964 में शम्मी कपूर और साधना की फिल्म 'राजकुमार' रिलीज़ हुई थी। शैलेंद्र जी के बोल पर लता जी की आवाज़ में शंकर जयकिशन जी ने एक धुन सजाया था, जिसके बोल थे 'आजा आई बहार', जिसे सुनकर जवान लड़कियों का दिल आज भी मचल उठता है।

हिंदी - हमारी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा

हिंदी –हिंद का सितारा,हिंद की आन,बान और शान ! हिंदी ने हमे विश्व में एक नयी पहचान दिलायी है। हिंदी - यह मात्र एक भाषा ही नही है,बल्कि पूरब से पश्चिम को,उत्तर से दक्षिण को जोड़ने की भाषा है। आज पूरे विश्व में हिंदी ने भाषाओं में अपनी पहचान को आसमान की बुलंदियों पर ले गयी है। हिंदी पूरे विश्व में करीब-करीब ६५२ मिलियन लोग बोलते हैं, जो कि वैश्विक आबादी का कुल ८.५% है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14.09.1949 को संविधान सभा ने एकमत निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही राजभाषा होगी । इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समीति वर्धा के अनुरोध पर सन्१९५३ से सम्पूर्ण भारत में प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को 'हिंदी' दिवस के रूप मे मनाया जाता है। धीरे – धीरे हिंदी भाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया है। अब हमारी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत ही पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह भी है कि हमारी भाषा हमारे देश कि संस्कृति और संस्कारों का प्रतिविम्ब है। आज विश्व के कोने-कोने से अनेकों देश के विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिये भारत का रूख कर रहे हैं।

हमारी इस भाषा को आगे ले जाने में हमारे देश की सरकारों का भी बहुत बड़ा योगदान है। हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जो कि हिंदी के एक महान कवि भी थे।उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी में अपनी बातों को रखा था तब दुनिया भर में 'हिंदी' का मान-सम्मान काफी ऊँचा हुआ थाऔर वैश्विक स्तर पर हिंदी का डंका बजा था। उस समय स्व. अटल जी द्वारा पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की राजभाषा आधिकारिक रूप से गूंजी थी। उनके भाषण के बाद दुनिया के नेताओं ने तालियाँ बजाकर और खड़े होकर अभिवादन किया था।
वैसे हमारा देश विविधताओं वाला देश हैऔर हमे सभी भाषाओं,धर्मो,संस्कृतियों, रहन-सहन, खान-पान का सम्मान करना चाहिये,लेकिन हमें एक भारतीय होने के नाते हमारे देश में भाषाओं में उत्कृष्ट सम्मान रखने वाली'हिंदी' सभी भारतीयों को जरूर आनी चाहिये,साथ ही हमें हिंदी का सम्मान करना भी सीखना होगा।

हिंदी को आगे बढ़ानेमें हमारे देश के कवियों,कहानीकारों,उपन्यासकारों तथा हमारे बॉलीवुड का भी बहुत बड़ा योगदान है। पुराने कविकुल में कबीर, सूरदास,कालीदास,तुलसीदास,बाबा नगार्जुन,जयशंकर प्रसाद,सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती, गोपल दास 'नीरज', सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' आदि। नये कवियो मे कुंवर बैचैन, गीतचतुर्वेदी, अशोक वाजपेयी,कुमार विश्वास इत्यादि।

हमारी फिल्मी दुनिया जिसको कि हम सब बॉलीवुड के नाम से जानते हैं,हिंदी को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी गाने, कहानियों, फिल्मों के माध्यम से हमारी फिल्में वैश्विक स्तर पर काफी ही सुदृढ़हुईहैं। हिंदी फिल्मों के महान कलाकार स्व. राज कपूर का भी काफी योगदान रहा है। इन्हें हम सब 'शोमैन' के नाम से भी जानते हैं। दर्शकों मेंउन्हें लेकर कितना पागलपन था शायद इसे बताने की जरूरत नहीं है। उन्होंने अपनीफिल्मों के माध्यम से हिंदी को पूरे रूस,कजाखिस्तान,आर्मेनिया आदि में पहुंचा दिया है। उनके लिये रूस में काफी दिवानगी देखने को मिलती थी। अब भी अगर कोई भारतीय रूस घूमने के लिये जाता है तो वहा के लोग पूछते है कि आप कहाँ से हो और हम बताते है कि हम भारत से है,तब वे बोलते है कि ओहो आप 'लैंड ऑफ़ राज कपूर' मतलब आप उसी भूमि से आये हो जिस भूमि के राज कपूर साहब थे। वर्तमान कवियोंमें हम सभी ने कुमार विश्वास का नाम सुना ही है, जिंहोने अपनी कविता 'कोई दिवाना कहता है' के माध्यम से हिंदी को जन-जन तक पहुंचाया। उनका हिंदी के प्रति इतना श्रद्धावलगाव शायद ही इस वर्तमान समय मे किसी और का होगा। हिंदी भाषा के प्रति इतनी सच्ची श्रद्धा व लगाव शायद ही इस वर्तमान समय मे किसी और का होगा। उनकी हिंदी भाषा का उच्चारण,शुद्धता एवं बोलने की शैली भी आम जनमानस में काफी प्रिय रहा है। वर्तमान समय मे वह 'अपने-अपने राम'के राम कथा के माध्यम से आमजनो में हिंदी का विस्तार कर रहे है।

हमारी पिछली पीढ़ी के हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के शागिर्द अमीर'खुसरो' पहले ऐसे मुस्लिम कवि और शायर थे जिन्होने ८०० साल पहले अपनी नज़्मो में हिंदी का इस्तेमाल शुरू किया था। वैसे भी हम सब विद्यालयों मे खुसरो की रूबाईयॉ पढ़ चुके हैं।उन्होंने लिखा था

फारसी बोली आई ना
तुर्की ढूंढी पाई ना
हिंदी बोली आरसी आये
'खुसरो' कहे कोई न बताये !

मशहूरो-मारूफ सूफी और शायर हज़रत अमीर खुसरो जिन्हे तुर्की और फ़ारसी को हिंदी से जोडने का श्रेय दिया जाता है। इनकी(खुसरो) हिंदी और तुर्की की मिली नज़्म जो की काफ़ी प्रसिद्ध थी-

जे हाले-मिस्किन मकुन तगाफुल दुराये नैना बनाये बतियॉ,
कि-ताब-ए-हिज्रा दराज चू जूल्फ ओ-रोज़-ए-वसलत चू उम्र-ए-कोतह
सखी पिया को जो मै ना देखू तो कैसे काटू रतिया !

जब से गूगल ने रोमन अक्षरोंके माध्यम से हिंदी लिखने की सुविधा मोबाईल फोन और कम्प्यूटर पर मुहैया करायी है तब से हिंदी मे लिखने वालो की तादाद कई गुना बढ गयी है। आप फेसबबुक,इंस्टाग्राम,ब्लॉग या वेबसाईट देंखे हिंदी मे ऑनलाईन सामग्री तेजी से बढ़ रही है। यह समय हिंदी भाषा का स्वर्णिम काल है। मीडिया (पत्रकारिता) जगत मे

हिंदी का वर्चस्व बढता जा रहा हैयहाँ तक कि हाल के दिनो मे सेलीब्रेटीज़ के सोशल मीडिया 'ट्विटर' अकाउंट हिंदी मे स्टेट्स लिखने की प्रवृति बढ़ी है। पिछले ७०वर्षों से साहित्य की शिक्षादेने वाले विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के हिंदी विभागो में अब मीडिया और उससे जुड़े माध्यमों की शिक्षा के उपर जोर बढ़ा है।

हिंदी भाषा को कर्णप्रिय बनाने या कह लीजियए घर-घर तक ले जाने मे हमारे 'रामचरित मानस' या फिर 'हनुमान चालीसा' का भी काफी योगदान रहा है। हमलोग बालपन से ही यह किताब और चालीसा पढ़ते और सुनते आये हैं। मैंपिछलेदिनों'प्रवीण कुमार झा' जो की नोर्वे (यूरोप) में एक विशेषज्ञ चिकित्सक हैं, उनका लिखा एक उपन्यास जिसका नाम 'कुली लाइंस' है पढ़ रहा थ,जिसमे १८७० ई. से लेकर १९१५ ई. तक भारत से मौरीशस,ब्रिटीश गयाना,ट्रिनिडाड एवं टोबैगो,जमैका,ब्रेनाडा, सेंट लूसिया,नटाल,सेंट किट्स,सूरीनाम,फिजी,पूर्वी अफ्रिका,सेशेल्स आदि देशो मे अंग्रेजो ने गन्ने की खेती के लिये गिरमीटियो (अग्रिमेंट का अपभ्रंश रूप) को ले गये और वे वही पर रच-बस गये। लेखक ने अपने किताब के माध्यम से ये बताया है कि करीब-करीब २०० वर्षों से ऊपर हो गये है उनको पलायन किये हुए लेकीन वे अभी भी हिंदी को किसी–न-किसी रूप मे बचा कर रखे हुए हैं और यही सब बातें हम सब भारतीयों के लिये हिन्दी के प्रति गर्व की बात है। अप्रवासी भारतीयों मे हिंदी की रूचि एवं हिंदी का वैश्विक संवर्धन करने और विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सरकार के अथक प्रयासों से ११ फरवरी २००८ को मौरिसश में'विश्व हिंदी सचिवालय' की स्थपाना की गयी। विश्व हिंदी सचिवालय' मौरिशस हर वर्ष विशेषांक के रूप मे विश्व हिंदी पत्रिका का वार्षिक अंक भी निकालता है,जिसमें विश्व में हो रही हिंदी की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस पत्रिका मे विश्वके कोने-कोने से हिंदी विद्वानों,रचनाकारों,शिक्षाविदों,भाषाविदों,तकनीकविदों,अध्येताओं,पत्रकारों आदि की रचनाएँ होती हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारीतक,साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा को आसानी से बोल समझ सकता/लेता है। यही इस भाषा के पहचान और खूबी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नही होती है। हिंदी की सबसे बड़ी ताकत यही है कि वह अनेक शैलियों में बोली जाती है। उसे एक रूप में देखना उसकी बोलियों की मजबूत विरासत से उसको काटने की कोशिश ही कही जायेगी। परंतु हिंदी के आगे बढ़नेमें कुछ रुकावटें भी हैं,जैसे पहले जहाँ विद्यालयों,महाविद्यालयोंमें अंग्रेजी का माध्यम ज्यादा नहीं होता था,वही आज उनकी मांग बढ़ने के कारण देश के नामी-गिरामी विद्यालयों/स्कूलों मेंपढ़ने वाले बच्चे हिंदी में पिछड़ रहे हैं। भारत मे रहकर भी हिंदी को ज्यादा महत्व न देना भी हमारी भूल है। आजकल अंग्रेजी बाज़ार के चलते दुनिया भर में हिंदी जानने और बोलने बालो को तुच्छ नज़रो से देखा जाता है,जो कि कतई सही नहीं कहा जा सकता है।

हम हमारे ही देश मे अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैऔर हम ही अपनी हिंदी भाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं,जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासीकी नज़र में होनी चाहिये। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या हवाई यात्रा में जब गर्व से हम अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते है तब उनके दिमाग में हमारे प्रति एक गंवार की छवि बनती है। घर पर जब हमारे या आपके बच्चे अतिथियों को अंग्रेजी कविता सुना दे या दो-चार लाईन अंग्रेजी मे बोल ले तो हम सब वाहवाही करने लगते हैं और अपने आप और अपने बच्चे पर गर्व महसूस करने लगते हैलेकिन हम यह भूल जाते हैं कि जितनी गर्व हम अंग्रेजी भाषा के लिये करते है,उससे कही ज्यादा उत्तरदायित्व हमारी हिंदी के प्रति बनती है।

जहां हमारी भाषा को विदेशियों द्वारा पढ़ा-लिखा और बोला जा रहा है,वही हमारे देश में हिंदी केवल खानापूर्ति के लिये रह गई है। हिंदी हमारे लिये स्वाभीमान और गर्व की भाषा तब ही बन सकती है जब हम पहले अपने घर/देश में बोलने में व्यापक रूप से प्रयोग मे लाएँगे तथा इसे व्यापक रूप से आगे बढ़ाने के लिये स्कूलों में भी हिंदी को अंग्रेजी से ज्यादा तरहीज़ देंगे। हम ये उम्मीद करते हैं कि हम-सबों के प्रयास से आने वाले समय मे हिंदी पूरे विश्व के कोने-कोने में बोले जानेवाली भाषा के रूप विकसित होगी,तब हम सबों का प्रयास सार्थक होगा।

और अंत में अल्लामा-इकबाल की प्रसिद्ध चंद पंक्तियां !

यूनान ओ मिस्र ओ रूमा सब मित गये जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा !
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम वतन हैं हिंदोस्तां हमारा !

संजय कुमार
डी.ई.ओ

महिला सशक्तिकरण

चूंकि महिलाएं हर जगह अपनी उपस्थिति, आवाज और शक्ति का दावा कर रही हैं, वे न केवल मेज पर एक सीट का दावा कर रही हैं, बल्कि चमकने के लिए अपनी जगह भी बना रही हैं। चुनौतियों के बावजूद महिलाओं ने बाधाओं को तोड़ना जारी रखा है और नए रास्ते बनाए हैं, जिससे अनगिनत आम लोगों को उनका अनुसरण करने का अवसर मिला है। बोर्डरूम से लेकर कक्षाओं तक, अग्रिम पंक्ति से लेकर पर्दे के पीछे तक,उन्होंने बार-बार उन जगहों पर बदलाव लाया है, जहां इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

चाहे वह देखभाल का कर्तव्य हो,मातृत्व हो, स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे हों या सीखने के मामले हों – महिलाओं को अपने करियर के विभिन्न चरणों में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, बाधाओं को पार करना पड़ता है। पुरुष केवल सांत्वना देने के लिए हटे हैं, किसी सक्रिय समर्थन के लिए नहीं, ताकि वे आगे बढ़ सकें। भारत में बाहुबल से बुद्धिबल की ओर संक्रमण के साथ समाज परिवर्तन को अपनाने के लिए तैयार है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी उनकी राजनीतिक प्रेरणा के सबसे प्रमुख उदाहरणों में से एक था। उदाहरण के लिए, हम इस संबंध में नेताजी की आज़ाद हिन्द वाहिनी का उदाहरण दे सकते हैं, जहां महिलाओं ने बड़ी भूमिका निभाई थी। अधिक उचित ज्ञान और दूसरों के फीडबैक से वे सीख सकती हैं कि राजनीति में कैसे सफल हों और अपने प्रभाव को कैसे चैनलाइज करें।

सभी सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में आयु और जाति के भेदभाव के बिना सभी महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व की मांग करना, हमारे देश में महिलाओं के उत्थान के लिए प्रमुख मुद्दा है। महिलाओं में अपार क्षमताएं हैं और उन्हें उस क्षमता का उपयोग करने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। इस संबंध में सभी महिलाओं के लिए समान प्रतिनिधित्व आवश्यक है, ताकि वे किसी भी हीन भावना से ग्रस्त न हों।

जब महिलाएं कार्य की दुनिया में आगे बढ़ती हैं, तो वे अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करने, अपने अधिकारों को समझने के लिए बेहतर स्थिति में होती हैं। लेकिन जिस तरह कोई भी नौकरी नहीं चलेगी, उसी तरह काम भी उत्पादक होना चाहिए और स्वतंत्रता, समानता, सुरक्षा और सम्मान की स्थिति होनी चाहिए। वेतन पारदर्शिता, समान मूल्य के कार्य के लिए समान वेतन, जैसे उपाय लिंग वेतन अंतर को कम करने में मदद कर सकते हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग सहित उन क्षेत्रों में महिलाओं की सार्थक भागीदारी बढ़ाना जहां उनका वर्तमान में कम प्रतिनिधित्व है,उनके सशक्तिकरणकी कुंजी है।

ऐसी दुनिया में जहां लिंग के प्रति जड़तापूर्ण मानदंड, महिलाओं को रूढ़िवादी भूमिकाओं और सामाजिक दबावों तक सीमित रखते हैं, आत्म-अभिव्यक्ति को दबाते हैं और उन्नति में बाधा डालते हैं, महिलाएं दृढ़ संकल्प के साथ पारंपरिक सीमाओं से परे साहसपूर्वक बाधाओं को चुनौती दे रही हैं और सीमाओं को पार कर रही हैं। भावना देहरिया ने हाल ही में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की। शिखर तक की उनकी यात्रा में लचीलापन और दृढ़ संकल्प के अमूल्य सबक हैं। प्रत्येक शिखर पर विजय के साथ उन्होंने याद दिलाया है कि कोई भी बाधा दुर्गम नहीं है। वह महिला सशक्तिकरण का प्रतीक हैं।

घर और करियर को संभालना काफी कठिन है, लेकिन किसी भी महिला का जीवन बिना किसी परेशानी के नहीं गुजर सकता। बच्चे और बॉस परेशान हो जाते हैं, पति-पत्नी या परिवार दूर हो जाते हैं। वित्तीय संघर्ष, स्वास्थ्य चुनौतियाँ और कानूनी परेशानियाँ सभी एक ही समय में आ सकती हैं। एक ही समय में अलग-अलग प्राथमिकताएँ उभरती हैं और उस समय महिलाएं सहायता प्रणाली पर बहुत अधिक निर्भर होती हैं।

महिलाओं के समावेशन की दिशा में पहला कदम परिवर्तन है। अधिकांश लोग परिवर्तन से नफरत करते हैं, लेकिन परिवर्तन की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसलिए अब समय आ गया है कि चीजों को सही किया जाए।

महिलाएं सामाजिक परिस्थितियों और पितृसतात्मक परम्पराओं से ऊपर उठकर अपने जीवन पर नियंत्रण रख रही हैं। वे समझ चुकी हैं कि आर्थिक सशक्तिकरण ही उनके स्वतंत्र जीवन की कुंजी है। पश्चिम बंगाल, ओड़ीशा, कर्नाटक, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश जैसे कई राज्य सरकारों ने महिलाओं को सीधे लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से कई योजनाएँ शुरू की हैं, चाहे वह नकद हो या वस्तु। महिलाएं अब अपना वित्तीय निर्णय लेने के लिए परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर नहीं हैं। पिछले साल केंद्र सरकार ने महिलाओं के लिए दो साल की एकमुश्त बचत योजना शुरू की थी। इसका मुख्य कारण निवेश में उनकी भागीदारी बढ़ाकर महिलाओं को सशक्त बनाना है। नारा होना चाहिए "महिला सशक्त करें, राष्ट्र सशक्त करें"।

भविष्य वह है:- वह बोलती है, वह प्रभावित करती है, वह प्रेरित करती है। कुछ महिलाएं जो अपने कार्यक्षेत्र में मशाल वाहक हैं, वे सभी महिलाओं के सपनों और आकांक्षाओं के लिए वास्तविक प्रेरक हैं। हम इस संबंध में कुछ मानदंडों का हवाला दे सकते हैं। कैप्टन श्वेता सिंह नागरिक उड्डयन की महानिदेशक हैं। सुषमा रावत ओएनजीसी की अन्वेषन निदेशक हैं। युक्ता मुखी, पूर्व मिस वर्ल्ड, पर्यावरण कार्यकर्ता हैं। सखी मालिक हमारी ओलंपिक पहलवान हैं। संगीता रेड्डी, अपोलो अस्पताल की संयुक्त प्रमुख हैं और कई अन्य हैं। महिला सशक्तिकरण का एक और बेहतरीन उदाहरण हमारी वर्तमान महिला अध्यक्ष श्रीमती द्रौपदी मुर्मू हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई सरकारी योजनाएं शुरू की गई। इस संबंध में हमारा ध्यान आकर्षित करने में विफल नहीं होनी चाहिए। वे निम्नलिखित तरीके से क्रमबद्ध हैं:-

- उज्ज्वला गैस योजना
- भाइयों और बहनों को तीन लाख रुपये का ऋण देने के लिए विश्वकर्मा योजना
- शक्ति निवास
- महिला सशक्तिकरण का केंद्र
- बालिकाओं को समर्थन देने के लिए सुकन्या समृद्धि
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
- महिला हेल्पलाइन

भारत की कुल जनसंख्या में महिलाओं की संख्या लगभग 50% है। इसलिए इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता की वे एक बहुत बड़ी ताकत हैं – बेटी के रूप में, माँ के रूप में, नेता के रूप में, कार्यबल के रूप में -महिलाएं सभी मामलों में सफल हैं। इस संबंध में महिलाओं के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण बदलना चाहिए। महिलाओं को पुरुषों के हाथों की कठपुतली नहीं समझा जाना चाहिए, जिसे वे अपनी इच्छानुसार रौंद सकें। महिला सशक्तिकरण में सफलता की कुंजी महिला शिक्षा है। महिलाओं को सभी प्रकार के शोषण से बचाने के लिए केंद्रीय सत्ता में सरकार द्वारा मुख्य रूप से आर्थिक और सामाजिक मोर्चे पर सुरक्षात्मक उपाय जोरदार तरीके से किए जाने चाहिए और यहीं महिला सशक्तिकरण की सफलता निहित है।

अंत में हमें इस संबंध में महापुरुष स्वामी विवेकानंद के अनमोल शब्दों को याद रखना चाहिए – "जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। एक पक्षी के लिए केवल एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है"।

सौमी बंदोपाध्याय
• सहायक लेखा अधिकारी

अजामिल - वो पापी जिसने स्वर्ग प्राप्त किया...

जासु नाम सुमिरत एक बारा उतरहि नर भाव सिंधु अपारा –

प्राचीन काल में अजामिल नामक एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण था। उसके पिता ने उसे बहुत अच्छी शिक्षा और संस्कार दिये थे और वो भी सदैव अपने पिता की सेवा एवं ईश्वर की साधना में लगा रहता था। उसके पिता ऐसे आदर्शपुत्र को प्राप्त कर अपने आप को धन्य समझते थे। समय आने पर उन्होने अजामिल का विवाह एक सुंदर और सुशील ब्राह्मण कन्या से कर दिया। एक आदर्श पुत्र की भांति ही अजामिल एक आदर्श पति भी साबित हुआ और दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

एक बार अजामिल पूजा के लिए पुष्प लेने वन को गया। वापस आते समय उसने देखा कि एक व्यक्ति सरब के नशे में धुत्त एक अति सुंदर वेश्या के साथ रमण कर रहा है। अपने संस्कारों के कारण उसने बहुत प्रयास किया कि उस ओर ना देखे, किन्तु उस वेश्या के रूप ने उस पर ऐसा जादू किया कि वो चाह कर भी स्वयं को उस ओर देखने से रोक ना सका। थोड़ी देर बाद जब वो घर वापस आया तो उसका मुख मलिन था। अजामिल उस स्त्री को अपने मन से निकाल नहीं पा रहा था। पूजा, पाठ, धर्म, कर्म इत्यादि में उसकी कोई रुचि ना रही। अंतत: एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण का वो पुत्र अपने हृदय से हार कर वेश्या के निवास पर जा पहुंचा। बहुत दिनों तक उसने अपने सभी संस्कारों को भूलाकर उस स्त्री के साथ भोग विलास में लिप्त रहा। वो उसके रूप पर ऐसा मोहित हुआ कि उस वेश्या को वो अपने घर पर लेकर आ गया। उसके पिता और स्त्री को उसके इस बदले रुप पर विश्वास नहीं हुआ। अजामिल ने धर्म से स्वयं को विमुख कर लिया और उस वेश्या के साथ सदैव भोग – विलास में लिप्त रहने लगा। जब पानी सिर से ऊपर चला गया तो उसके पिता ने उसे उसके कृत्य के लिए झिड़का और उसे आज्ञा दी कि वो तत्काल उस स्त्री को घर से निकाल दे। किन्तु अजामिल ने उलट अपने पिता और अपनी नवविवाहिता पत्नी को धक्के देकर उन्ही को घर से निकाल दिया। अब तो वो और स्वच्छंद रूप से भोग विलास में रम गया। उसके पास जो धन तो वो सारा समाप्त हो गया किन्तु उस वेश्या की सभी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए ब्राह्मण पुत्र चोरी, डकैती एवं हत्या जैसा जघन्य अपराध करने से भी न चुका। धीरे – धीरे वही उसका व्यवसाय बन गया। समय बिता और उस वेश्या से अजामिल को पुत्र प्राप्त हुए और पुनः वो गर्भवती हुई। अजामिल उस पूरे प्रदेश में अपने कुकर्मों के कारण कुख्यात हो गया।

एक बार ऋषियों का एक समूह उस गाँव में आया। मार्ग में उन्होने वहाँ के निवासियों से पूछा कि वो कहाँ रात्रि व्यतीत कर सकते हैं। तब लोगों ने मज़ाक ही मज़ाक में उन्हें अजामिल के घर ये बोल कर भेज दिया कि वो बड़ा सच्चरित्र व्यक्ति है और उसे वास्तविक कर्मों से अनभिज्ञ जब वे ऋषि अजामिल के घर पहुंचे तो वो लूट पात के लिए बाहर गया हुआ था। उसकी अनुपस्थिति में उसकी गर्भवती स्त्री ने ऋषियों को भोजन कराया और कहा कि वो जल्द

खाकर वहाँ से चले जाएँ अन्यथा यदि अजामिल वापस आ गया तो बहुत बिगड़ेगा। अब ऋषियों को अजामिल की सच्चाई मालूम पड़ी, किन्तु उसका उद्धार करने के लिए उन्होने कहा कि अब इतनी रात्रि वो कहाँ जाएँगे, इसलिए आज भर उन्हें वहीं रहने दिया जाए। जब अजामिल वापस आया तो अपने घर पर ऋषियों का झुंड देख कर बहुत क्रोधित हुआ। उसने उन सभी को मार कर भगाना चाहा किंतु उसकी स्त्री ने उसे ये कह कर रोक दिया कि केवल एक ही रात की बात है इसलिए उन्हें वहीं रहने दे। उसकी बात मान कर अजामिल ने उन ऋषियों को एक रात अपने घर में रहने की आज्ञा दे दी। अगले दिन सूर्योदय होते ही अजामिल ने उन ऋषियों को जाने को कहा। तब ऋषियों ने कहा कि क्या वो उन्हें कुछ दक्षिणा दे सकता है। अब अजामिल तो खुद चोर ठहरा, उन्हें धन कहाँ से देता। उसने सीधे – सीधे बोल दिया कि उसके पास उन्हें दक्षिणा में देने को कुछ नहीं है। तब ऋषियों ने कहा कि दक्षिणा में उन्हें धन नहीं चाहिए, बस वो अपने होने वाले पुत्र का नाम नारायण रख दे। अजामिल को लगा वो सस्ते में छूटा। उसे अपनी संतान का नाम कुछ तो

रखना ही ताब वो नारायण हो या कुछ और उससे क्या फर्क पड़ता है। उन ऋषियों से छुटकारा पाने के लिए उसने उन्हें वचन दे दिया कि वो अपनी होने वाली संतान का नाम नारायण रखेगा। समय आने पर उसकी स्त्री ने 10 वें पुत्र को जन्म दिया और वचन के अनुसार अजामिल ने उसका नाम नारायण रख दिया। अब दैव योग से वो पुत्र अजामिल को सबसे प्रिय हो गया।

समय का चक्र यूं ही चलता रहा और अजामिल अपने पाप कर्म में लिप्त रहा। समय बीता और अजामिल वृद्ध हो गया। जब उसका अंत समय आया तो अजामिल के कर्मों के अनुसार उसे नर्क में ले जाने के लिए भयानक यमदूत उसके सामने उपस्थित हुए। मृत्यु शैय्या में पड़ा अजामिल उन भयानक दूतों को देख कर भयभीत हो गया और ज़ोर से अपने पुत्र को नारायण – नारायण कह पुकारने लगा। जैसे ही यमदूतों ने अजामिल पर अपना पास फेंका, उसी समय वहाँ विष्णुदूत पहुंचे और युद्ध कर उन यमदूतों से अजामिल को छुड़ाया। यमदूतों ने उनसे पूछा कि वो उसे क्यों बचा रहे हैं। अजामिल ने जीवन भर पाप के अतिरिक्त कुछ किया ही नहीं है और इसके कर्मों के अनुसार यमराज की आज्ञा से वे उसे नर्क ले जाने आए हैं। तब विष्णु दूतों ने कहा कि भले ही अजामिल ने जीवन भर पाप किया है किंतु अज्ञानतावश ही सही उसने अपने अंत समय में श्री हरी का नाम स्मरण किया है। अत: वे किसी भी मूल्य पर उसे नर्क जाने नहीं दे सकते। अब तो दोनों पक्षों में अपने – अपने तर्कों के आधार पर विवाद हो गया किंतु विष्णु दूतों ने यमदूतों को उसे नर्क ले जाने नहीं दिया। थक कर यमदूत यमराज के पास पहुंचे और उन्हें सारा वृतांत सुनाया। तब यमराज ने हँसते हुए कहा कि विष्णु दूत सही कह रहे हैं। चूंकि अजामिल ने अंजाने में ही सही किन्तु भगवान विष्णु का नाम लिया है, उसे स्वत: ही एक वर्ष का जीवन और मिल गया हा अब इस एक वर्ष के जीवन में उसके किए कर्म के अनुसार उसे स्वर्ग अथवा नर्क प्राप्त होगा। उधर अजामिल ने अब देखा तो सोचने लगा कि यदि जीवन भर उनकी भक्ति में रमा रहता। उसे बहुत पश्चाताप हुआ और उसने अपने बचे हुए एक वर्ष में स्वयं को विष्णु भक्ति में लगा दिया। वो सोते – जागते सदैव नारायण की ही भक्ति में डूबा रहता था। एक वर्ष बाद उसकी आयु पूर्ण हुई तो यमदूत पुन: उसे लेने आए किंतु इस बार उन्होने बड़ी नम्रता से अजामिल को अपने साथ स्वर्ग चलने को कहा। अंतत: जीवन पर्यंत केवल पाप कर्म करने वाला अजामिल केवल श्री हरि का नाम स्मरण करने के कारण स्वर्ग को प्राप्त हुआ। इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि भगवत भजन से ही मनुष्य मात्र का उद्धार संभव है।

आनंद कुमार पांडेय
सहायक लेखा अधिकारी

आखिरी सफर (शमशान)

जीते जी किसी ने पूछा नहीं,
कैसी है ये ज़िंदगानी !
मरने के बाद वही लोग,
दे रही हैं पीपल में पानी!!

जब तक साथ थे,
रोज़ होती थी मारा – मारी!
माता – पिता विलाप कर रहे हैं,
कौन संभालेगा उनकी ज़िम्मेवारी!!

एक साथ खाया खेला,
पर कलह थी हिस्सेदारी!
भाई रो कर हमसे पूछ रहा,
कौन करेगा उसकी पहरेदारी!!

जीते जी किसी ने पूछा नहीं,
कैसी है ये ज़िंदगानी !
मरने के बाद वही लोग,
दे रही हैं पीपल में पानी!!

पत्नी जो हमेशा थी साथ मेरे,
कभी – कभी करती थी हमसे ऐतराज!
बिलख – बिलख कर कह रही,
अब कभी नहीं होउंगी आपसे नाराज़!!

जो कहोगे, वो मानूँगी,
आपकी बात कभी न टालूँगी!!
एक बार आँखें तो खोलो प्रिय,
सारा प्यार तुम पे लुटाऊँगी!!

जीते जी किसी ने पूछा नहीं,
कैसी है ये ज़िंदगानी !
मरने के बाद वही लोग,
दे रही हैं पीपल में पानी!!

बेटा जो कल तक डरता था,
पर वो बेहिसाब मुझपे मरता था!
बोला... कभी न कम होने दूंगा आपकी आन,
देकर मेरी मूँछों को शान!!

पाकेट में पैसा था जब तक,
थे हमारे हजारों रिश्तेदार!
पैसे खत्म हो ही,
हुआ न एक भी वफादार!!

जीते जी किसी ने पूछा नहीं,
कैसी है ये ज़िंदगानी !
मरने के बाद वही लोग,
दे रही हैं पीपल में पानी !!

अब समझ आया ...
ज़िंदगी में कौन है ख़ास!
न घर – परिवार, न दोस्त – यार,
जो भी साथ जाएगा,
वो है बस कर्म और परोपकार !!

जीते जी प्यारा न था,
मरने के बाद आया सबको प्यार!
बहुत अच्छा इंसान था धनेश कुमार,
आज कह रहा सारा घर परिवार !!

जीते जी किसी ने पूछा नहीं,
कैसी है ये ज़िंदगानी !
मरने के बाद वही लोग,
दे रही हैं पीपल में पानी!!

धनेश कुमार
डी ई ओ

कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

आज पूरे विश्व में योग बहुत लोकप्रिय हो गया है। स्वस्थ जीवन जीने के लिए इससे सहज और कोई उपाय नहीं हो सकता। हमारे कार्यालय में भी इस वर्ष 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन २१ जून, २०२४ को सुबह ९:०० बजे से ०९:४५ तक ट्रेजरी बिल्डिंग्स इंस्टीट्यूट हॉल में बड़े उत्साह से किया गया। इस अवसर पर योग से संबन्धित लाभों को साझा करने के लिए एक व्याख्यान – सह – सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें 'योगा लाइफ', कोलकाता के सहयोग से कार्यालय के कार्मिकों को इसकी उपयोगिता के विषय में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख सहित बहुत से कार्मिकों ने सहभागिता की। सभी ने 'योगा लाइफ' के संरक्षकों के दिशा – निर्देशों का अनुपालन करते हुए कई योग मुद्राओं का अनुकरण किया और उन सभी से होने वाले मानसिक – शारीरिक लाभों की चर्चा भी की गई।

योग सिर्फ शारीरिक ही नहीं बल्कि, चतुर्मुखी विकास का एक सहज माध्यम है। आज की व्यस्त दिनचर्या में सबका जीवन मशीनी हो चुका है। इस कारण से अवसादग्रस्त हो जाना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। सैंकड़ों मशीनों से घिरे होने के बाद भी मन या मस्तिष्क के तनाव को दूर करने का कोई ठोस उपाय नहीं है। इस परिस्थिति से उबरने में योग की एक सकारात्मक भूमिका हो सकती है। इस बात का भी उल्लेख इस सेमिनार में किया गया और उस सभागार में उपस्थित सबों ने इस पर अपनी सहमति भी व्यक्त की।

इस एक दिवसीय सेमिनार में उपस्थित कार्यालय परिवार के सदस्यों ने खूब बढ़ चढ़कर भाग लिया और इसे सफल बनाया। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस वर्ष की भांति आने वाले वर्षों में भी ऐसे ही उत्साहवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे, जिससे कार्यालय परिवार लाभान्वित होगा।

सुनीता राउत
एम टी एस

बेरोजगारी एक कहानी

'प्रातःकाल का समय...

अंधेरे को चीर कर फैली सूरज की किरणें....

चारों तरफ ऊर्जा छितरायी हुई ....

पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नर-नारी सभी अपने नितकार्यों में व्यस्त ..।

दौड़ता- भागता जीवन... दौड़ती भागती सडकें... सड़कों पर दौड़ती गाडियाँ...

गाड़ियों में भागते से लोग...।

बचपन तक की फुरसत नहीं...

छोटे-छोटे नाजुक से कंधे, भविष्य का बोझ सम्भाले दौड़ रहें हैं। कुछ पैदल, कुछ बसों में, कुछ निजी वाहनों पर सवार....।

सुकून का कहीं नामोनिशान खोजें तो ...सड़क के उस किनारे खड़े घने से बरगद के वृक्ष के नीचे जमी एक छोटी-सी चाय की टपरी दिख रही है। जहाँ थोड़े फुरसत के क्षण दिखाई पड़ रहे हैं।

हमारे देश में चाय की एक छोटी-सी टपरी भी बड़े कमाल की और दिलचस्प जगह होती है। बचपन, यौवन और वृद्धावस्था एक साथ तीनों के दर्शन हो जाते हैं। ये जगह उन विशेष जगहों में उच्च श्रेणी पर आती है जहाँ बैठ कर कर घर-परिवार, देश- विदेश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक इत्यादि हर स्तर की समस्याओं पर बड़ी-बड़ी चर्चाएं होती है, समस्याओं के समाधान खोजे जाते हैं। उच्च, मध्य और निम्न वर्ग एक चाय की टपरी के नीचे आकर भारतवर्ष की अनेकता में एकता के कहावत को चरितार्थ करते हैं।

हमारे देश में वैसे तो बहुत सारी समस्याओं के हल खोजे जाने बाकी है। परन्तु एक समस्या जो कि बहुत भयंकर रूप से मुँह पसारे खड़ी है वह है बेरोजगारी की समस्या। कहना गलत न होगा भारत की अधिकांश जनसंख्या गरीबी और भूखमरी से पीड़ित है उसका मुख्य कारण है बेरोजगारी। आज-कल इसी समस्या पर चारों तरफ से जोर-शोर से व्याख्यान किये जा रहे है, नारेबाजियां की जा रही हैं, जुलूस निकाले जा रहे हैं। परन्तु परिणाम में कुछ विशेष अन्तर तो नहीं दिख रहा है। चाय-की टपरी पर एक किनारे चार-पाँच लोगों का एक समूह बैठा इसी गम्भीर मुद्दे पर अपने अपने विचार साझा कर रहा है।

मुकेश – "अरे क्या बताए भाई ? अब देश में महंगाई ने कमर तोड़ के रख दी है। सब्जियाँ अनाज तो जैसे सोने के भाव से दिन- दुगुने, रात- चौगुने बढ़ रहे हैं। कहाँ कटौती करें कहाँ खर्च करें, समझ में ही नहीं आता। रात-दिन मगजमारी करो तो चार पैसे घर में जाता है जो घर की राशन-पूर्ति में कब भस्म हो जाते हैं पता ही नहीं चलता।"

रघु – "हाँ मुकेश भैया ! तुम ठीक ही कह रहे हो। कल की बाजार से टमाटर खरीदने गया तो मेरे

मन्टु – "हाँ। खाने-पीने का यही हाल है तो बताओ घर के और खर्च कहाँ से पूरे हो। घर में माँ बीमार है। उन्हें ढंग से अनाज- पानी ही नहीं दे पा रहा। दवाई और डॉक्टर का खर्च कहाँ से निकाले?"

सुकेश – "सरकार हमें कोई छोटी मोटी नौकरी भी तो नहीं दिला पा रही जिससे घर तो ठीक से चला सके।"

रघु – "हाँ। हमारी सरकार ती वोट लेने समय जो लम्बे-चौड़े वादे करती है तो सब तो सब्जबाग ही है। सरकार जीत जाती है और हम वहीं के वहीं रह जाते हैं।"

पिन्टु – "ऊपर से कोई अपने यहाँ काम पर बुलाता है तो ढंग से मजूरी भी तो नहीं देता। मैने तो इसलिए इसके-उसके घर काम पर जाना भी छोड़ दिया है। घर पर आजकल आराम करता हूँ..."

अरे पिन्टु...! – सामने से प्रणय जी जो सड़क के दक्षिणी छोर पर स्थित दो-मंजिला मकान में रहते हैं और अभी कुछ महीनो पहले ही एक प्रतिष्ठित अधिकारी के पद से सेवानिवृत हुए है। पिन्टु को आवाज लगाते हैं।

अरे पिन्टु...! तुझको एक सप्ताह पहले मैंने फोन किया था। घर पर बाथरूम के नल की टोटी खराब हो गयी है। तू तो बोला था कि ठीक कर के जाएगा और अब तक नहीं आया। - प्रणय जी बोले।

पिन्टु – "हाँ साहब..। हमको अच्छे से याद है। मैं तो आने ही वाला था। मगर क्या करूँ? आजकल इतना काम का प्रेशर है कि क्या बतायें ? मरने की भी फुरसत नहीं अपने को। और आपको तो पता ही है कि अपने हाथों में जो हुनर है वो आस - पास के दस मुहल्ले के लोगों में भी नहीं है। इसीलिए तो सब हमको ही बुलाते हैं। मैं चाहे एक महीने बाद ही क्यों ना जाऊ – पिन्टु खिखियाते हुए बोला।"

प्रणय जी - नहीं। नहीं। हमारे पास इतना दिन इंतजार करने का समय नहीं। अगर तेरे पास समय नहीं तो अभी बता दे मैं कहीं और इंतजाम करूंगा।

पिन्टु – "अरे! नहीं - नहीं साहब ! आप तो अपने पहचान वाले है। आपका काम तो करना ही पड़ेगा। चिन्ता मत कीजिए। मैं आज शाम ही काम से लौटते वक्त आपके घर के नल को देखता जाऊंगा।" "ये बात तो तू मुझे 2 दिन पहले भी बोल रहा था....। प्रणय जी खिसियाते हुए बोले" – "नहीं साहब। आज कसम से मैं आपके यहाँ जाऊँगा" - पिन्टु खींसे निपोरता बोला।

प्रणय जी के वहाँ से जाते ही रघु बोला – "क्यू बे पिन्टू ? तू तो अभी बोल रहा था कि तेरे पास काम नहीं है। घर पर निठल्ला बैठा है। अरे भाई ! तू बहुत भोला है। समझता नहीं है। ये सब पॉलिटिक्स है। पॉलिटिक्स ... ! इन बाबूलोगों को जितना इंतजार करवायेंगे उतनी ही ज्यादा अपने काम की कीमत वसूल पायेंगे और जितना देर काम करने में लगेगा उतने ही मजबूर होकर ये अपने जेब ढ़ीले करेंगे।"

पर... पर... भाई।

अरे ! तू ये पर-वर छोड़। चर चल - तुझे और एक कप चाय पिलाता हूँ।

दिन का समय.....!

प्रणय जी के घर के भीतर से नवजात शिशु के रोने की आवाजें आ रही है। कुछ देर में भीतर से नाईन मनोरमा आँचल में हाथ पोछती घर के आंगन में प्रवेश करती है और प्रणय जी की बीवी सुभद्रा जी को आवाज लगाती है।

जिज्जी... ! ओ जिज्जी... !

सुभद्रा जी – "क्या बात है मनोरमा ? जरा अहिस्ता बोल। अभी-अभी ती मुन्ना सोया है। उठ जायेगा।"

अरे जिज्जी... ! उसी के बारे में तो बात करनी थी हमको। हम इ हफ्ता तो 200 रुपिया घंटा में मालिश - नहवाअन करवा दिये बहु- बच्चा को। पर कल से हम 400 रुपया हर दिन के हिसाब से लेंगे और इ हफ्ता का हमारा हिसाब भी पूरा कर के हमको दे दो ताकि कल से नया हिसाब चल सके।

सुभद्रा जी – "ये भी कोई बात हुई सुभद्रा ! एक ही बार में दो गुना पैसे मांग रही हो। हमारी इतने में बात तो नहीं हुई थी।"

मनोरमा – "अरे जिज्जी... ! उ तो हम तोहार लिहाज करे है। इसलिए इतना कम में मान गये रहें। पर अभी का तुम देख लो। हमको इधरै पासैं में और दुई गो घर में काम मिल गया है। उहाँ भी 400 रुपिया का हिसाब तय कर आयी हूँ। तुम्हारा तुम देख लो और हमको अभी के अभी बता दो। और हाँ। इस हफ्ते का हिसाब भी पूरा करके अभी दे दो। सुभद्रा जी मन मसोस कर इस हफ्ते के 1400 रुपये मनोरमा के हाथों में थमाती है और कल से नये दर पर काम करवाने को मान जाती है।"

मनोरमा – "अरे ! बुरा मत मानना जिज्जी। हमलोग भी आखिर क्या ही करे। महँगाई का जमाना है और ई सरकार दिन-दिन हर चीज का दाम बढ़ाये जा रही है। हम गरीब लोग भी करे तो क्या करें? छोरा 21 साल और छोरी भी 20 की हो गई। इनका बाप पिन्टु भी दिन-भर वहाँ चाय-टपरी पर बैठा गप्पबाजी करते रहता है। ये नहीं कि सरकार एक छोटी-मोटी नौकरी ही दिलवा दे तो घर-संसार चल सके। पर अपनी तो सरकार ही निकम्मी है।"

सुभद्रा जी – "हमने तो तुमको पहले भी कहा था कि एक काम कर। जितने दिन बहु का जापाचल रहा है। उतने दिनों के लिए अपनी लड़की को हमारे घर भेज दिया कर ताकि वो 2 वक्त का खाना बना दिया करे और घर के कुछ अन्य कामों में भी मेरी मदद करवा दिया करे। इस उमर में अब हमसे सब-कुछ अकेले नहीं संभलता। पर तुझको तो पैसे ही कम पड़ रहे थे। घर के कुछ कामों के लिए तुझे 5000 रूपये कम पड़ते हैं। तुमलोगों को भले काम का रोना रोते रहो लेकिन पैसे दुगने चाहिए।"

मनोरमा दाई मुँह बनाते हुए – "अच्छा जिज्जी ! चलती हूँ। कल आऊँगी।"

उधर मनोरमा के घर के बाहर का नजारा देखिए - मनोरमा का छोरा बिट्टू घर के बाहर खड़े बरगद के पेड़ के नीचे पड़ा बीड़ी फूंक रहा है। सामने से किराना दुकान के मालिक नितिन जी चले आ रहे हैं।

नितिन जी – "क्यों रे बिट्टू ? आजकल क्या कर रहा है? बिट्टू (सकपकाते हुए) - कुछ नहीं चाचा। हमलोगों को कौन सा सरकार घर बैठे रोजगार दे रही है। बस यूं हीं बेरोज़गार बनकर घूम रहे हैं।"

नितिन जी – "एक काम कर। कल से मेरी दुकान पर आ जाया कर। 10000 रुपये महीने के ले लेना।"

बिट्टू – "अरे ना-ना चाचा। 10000 रुपये में आजकल क्या ही होता है ? 20000 रुपये दोगे तो मैं सोचूँ भी। नितिन जी (बड़बड़ाते हुए चल दिए) - इनलोगों को भले ही काम ना मिले वो मंजूर है। पर कम पैसे पर काम नहीं करेंगे।"

बिट्टू जो हमारे युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। पुन: बीड़ी फूंकने और दोस्तों के साथ गप्प लड़ाने में व्यस्त हो जाता है।

इस प्रकरण में विभिन्न वर्गों के लोगों की आपकी बातचीत के माध्यम से ही हमारे देश में तत्कालिन बेरोजगारी का परोक्ष और अपरोक्ष रूप का चित्रण हो जाता है। ये बात तो सत्य है कि देश की सरकार वोट लेने के समय बेरोजगारी को मुद्दा बनाकर जितने लम्बे-चौड़े वायदे करती है उसके दसवें भाग पर भी अमल नहीं करती। फलतः देश का शिक्षित युवा वर्ग तंग होकर गलत रास्तों पर चल पड़ता है। परन्तु बेरोजगारी का एक दूसरा रूप यह भी है कि समाज का एक अन्य वर्ग भले ही भूखे मरने को तैयार है परन्तु कम कीमत पर कार्य करने को तैयार नहीं।

आरती शर्मा

लेखाकार

डीपफेक

फर्जी तस्वीरें और वीडियो का सामने आना या वायरल होना कोई नयी बात नहीं है जब से तस्वीरें और फिल्म अस्तित्व में हैं, लोग धोखा देने या मनोरंजन के नाम पर जालसाजी/ छेड़छाड़ करते रहे हैं। इंटरनेट से लोगों के बड़े पैमाने पर जुड़ने और इसके उपयोग में तेजी आने के बाद से भ्रामक फोटो, वीडियो आदि में तेजी आयी है। परंतु अब फोटोशॉप जैसे एडिटिंग सॉफ्टवेयर की सहायता से केवल इमेज को बदलने या किसी वीडियो को एडिट कर उसे दूसरा रूप देने के बजाय अन्य तकनीक के जरिये नकली फोटो, वीडियो, ऑडियो आदि को सामने लाया जा रहा है। जिसके बारे में यह पता लगाना मुश्किल है कि वे असली हैं या नकली। यह सब किया जा रहा है एक तकनीक 'डीप फेक' के माध्यम से।

हाल ही में अमेरिका सहित भारत में कई सेलिब्रिटिस की फर्जी फोटोज - वीडियो वायरल हुआ जो डीपफेक तकनीक के माध्यम से हेर फेर कर बनाया गया था जो बिल्कुल वास्तविक लग रहा था। तकनीक का यह दुरुपयोग बेहद चिंतित करने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस तकनीक को लेकर चिंता भी जताई है और मीडिया को इस संबंध में लोगों को जागरूक करने को कहा है।

डीपफेक क्या है ?

डीप फेक डीप, लर्निंग और फेक का सम्मिश्रण है। इसमें वीडियो और फोटो को कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर ऐसे एडिट किया जाता है कि उसमें मूल शख्स की जगह कोई दूसरा शख्स नजर आए। ऐसे वीडियो या फोटो देखने में बिल्कुल असली जैसे प्रतीत होते हैं।

डीपफेक नाम की शुरुआत 2017 में तब हुई थी जब डीपफेक नाम के रेडिट यूज़र ने मशहूर हस्तियों के अश्लील वीडियो पोस्ट किए थे।

डीप फेक बनाने में कृत्रिम विविधता का एक रूप का उपयोग होता है जिसे डीप लर्निंग कहा जाता है। इससे ऐसी काल्पनिक घटनाओं की छबिया बनाई जा सकती है जो कभी घटित ही नहीं हुई हो। डीपलर्निंग मशीन लर्निंग का है एक भाग है, जो बड़े डाटा आर्टिफिशियल सेट से सीखने के लिए आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है। यह मानव मस्तिष्क की कार्य प्रणाली से प्रेरित होता है।

डीप फेक कैसे काम करता है?

डीप फेक के तहत नकली वीडियो बनाते समय संबंधित व्यक्ति के विभिन्न कोणों से फोटो को मूल चेहरे पर आरोपित कर दिया जाता है। डीप फेक के तहत घटनाओं को इमेज तैयार करने के लिए डीप लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमता और फोटोशॉप जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

डीप फेक सॉफ्टवेयर के डेवलपर आमतौर पर जेनरेटिव एडवर्शियल नेटवर्क का उपयोग करते हैं।जेनरेटिव एडवर्शियल

नेटवर्क(GAN) में दो न्यूरल नेटवर्क होते हैं। जनरेटर जो नकली मीडिया बनता है। डिस्क्रिमिनेटर जो यह निर्धारित करता है कि मीडिया नकली है या असली। डीपफेक जेनरेशन तकनीक में आमतौर पर संबंधित व्यक्ति की कई फोटो और वीडियो की आवश्यकता होती है। इंटरनेट पर उपलब्ध पर डाटा सेट के कारण मशहूर हस्तियां, राजनीतिक हस्तियां जैसे हाई प्रोफाइल व्यक्ति आसान लक्ष्य बन जाते हैं।

डीपफेक की चिंताएं -

डीप फेक वीडियो बनाकर लोगों, संगठनों और समाज को नुकसान पहुंचाया जा सकता है।

लोगों के बीच राज्य विरोधी भावनाओं को भड़काने के लिए इसका दुरुपयोग किया जा सकता है। डीप फेक का इस्तेमाल चुनाव जैसी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को नुकसान पहुंचाने के लिए किया जा सकता है।धार्मिक भावनाओं को आहत करने के लिए इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

गलत सूचना और दुष्प्रचार :

डीप फेक का उपयोग राजनेताओं या प्रसिद्ध हस्तियों का नकली वीडियो बनाने के लिए किया जा सकता है। इससे गलत सूचना फैल सकती है, जिससे पब्लिक ओपिनियन में बदलाव आ सकता है।

निजता संबंधी चिंताएं : डीपफेक के द्वारा किसी व्यक्ति की सहमति के बिना दुष्प्रचारक कंटेंट का उपयोग करते हुए उसकी गलत छवि को दर्शाया जा सकता है। इससे निजता के उल्लंघन के साथ-साथ प्रतिष्ठा को संभावित नुकसान हो सकता है।

विश्वास का कम होना : डीपफेक का प्रचलन मीडिया कंटेंट की विश्वसनीयता को चुनौती देता है। इससे लोग जो कंटेंट देखते हैं और सुनते हैं उस पर मुश्किल से भरोसा करते हैं।

डीपफेक तकनीक का इस्तेमाल

फिल्म में इसका प्रयोग रचनात्मक प्रभाव प्राप्त करने के लिए, किसी व्यक्ति की आवाज और समरूपता से संबंधित विशेषताओं का उपयोग करने के लिए किया जा सकता है।

व्यापार में खुदरा विक्रेता कपड़ों के वर्चुअल ट्राई के लिए वर्चुअल मॉडल प्रदान कर सकते हैं।

अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में पेशेवरों को प्रशिक्षित करने में सहायता प्रदान कर सकता है।

डीपफेक से कैसे निपटें

डीपफेक का पता लगाने के लिए प्रभावी गुण विकसित करना अपने आप में एक चुनौती है। गूगल, मेटा और माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी टेक फर्मों ने डीपफेक तकनीक की निंदा की है।

माइक्रोसॉफ्ट ने गलत सूचनाओं से लड़ने के लिए एक एंटी डीपफेक तकनीक बनाया है जिसे माइक्रोसॉफ्ट वीडियोऑथेंटिकेटर कहा जाता है। जो डीप फेक की पहचान में मदद करेगा।

नियम एवं कानून

एक उचित विनियामक ढांचा जो डीपफेक के निर्माण और वितरण को हतोत्साहित करेगा।

भारत में डीपफेक तकनीक के नियमन के लिए कोई विशेष कानूनी प्रावधान नहीं हैं।

हालांकि कुछ कानून अप्रत्यक्ष रूप से डीपफेक संबंधी मुद्दों का निराकरण करते हैं जैसे

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 66E : इसके तहत किसी व्यक्ति की छवि को मास मीडिया में कैप्चर करना, प्रकाशित करना या प्रसारित करना उसकी निजता का उल्लंघन है।

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 66D:यह उन व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का प्रावधान करती है जो किसी व्यक्ति को धोखा देने या उसका प्रतिरूपण करने के लिए दुर्भावना पूर्ण इरादे से संचार उपकरणों या कंप्यूटर संसाधनों का उपयोग करते हैं।

भारतीय कॉपीराइट अधिनियम : यह कॉपीराइट के उल्लंघन के लिए दंड का प्रावधान करता है।

व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक 2022 : इसमें व्यक्तिगत डेटा के दुरुपयोग के खिलाफ कुछ सुरक्षा देता है। हालांकि यह डीप फेक से स्पष्ट तौर पर संबंधित नहीं।

इसके अलावा केंद्र सरकार ने गलत सूचना और डीपफेक की पहचान करने के लिए सोशल मीडिया मध्यस्थों को एक एडवाइजरी जारी की है।

डीपफेक की पहचान करना, गलत सूचना और डीप फेक के पहचान करने के लिए उचित व यथोचित प्रयास किए जाने चाहिए।

जल्द से जल्द कार्रवाई: ऐसे मामलों पर सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 के तहत निर्धारित समय सीमा के भीतर शीघ्र कार्रवाई की जानी चाहिए।

उपयोगकर्ताओं के लिए सावधानी: उपयोगकर्ताओं को ऐसी जानकारी,सामग्री शेयर नहीं करनी चाहिए।

समय अवधि: ऐसी किसी भी सामग्री के संबंध में रिपोर्ट किए जाने पर 36 घंटे के भीतर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से

हटाना होगा।

ठोस कार्रवाई: सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 द्वारा निर्धारित समय सीमा के भीतर कार्रवाई करने और सामग्री सूचना तक पहुंचने से रोकने के लिए प्रावधान करने चाहिए।

आगे की राह:

कानूनी ढांचे को मजबूत करना: कानून और विनियमों को लागू करने और उन्हें अपडेट करने की आवश्यकता है। यह विशेष रूप से डीप फेक और संबंधित कंटेंट के निर्माण वितरण और दुर्भावना पूर्ण उपयोग को रोकने के लिए आवश्यक होगा।

जवाबदेही

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास को बढ़ावा देना: डीप लर्निंग प्रौद्योगिकीयों का जवाबदेही के साथ उपयोग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी तकनीकी के विकास में नैतिक प्रथाओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की जिम्मेदारी और जवाबदेही तय करना: इसके तहत एक समान मानक बनाने की आवश्यकता है जिसका अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी चैनल पालन कर सके। उदाहरण के लिए यूट्यूब ने यह घोषणा की है कि जिसमें क्रिएटर को यह बताना होगा की सामग्री ए आई (AI) टूल का उपयोग कर बनाई गई है या नहीं।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डीपफेक के दुरुपयोग से निपटने के लिए साझा मानक प्रोटोकॉल तैयार करने की आवश्यकता है।

अनुसंधान और विकास में निवेश: डीपफेक प्रौद्योगिकियों, उनकी पहचान के तरीकों और दुरुपयोग के विरुद्ध उपाय पर वर्तमान में कई अनुसंधान किया जा रहे हैं। इन अनुसंधानों को बढ़ावा देने के लिए अधिक संसाधन आबंटित किए जाने चाहिए।

उपभोक्ताओं के लिए मीडिया साक्षरता: नई प्रौद्योगिकी और उसकी उपयोग के बारे में जनता में जितनी अधिक जागरूकता होगी, उतना ही अधिक वे मीडिया के बारे में गंभीर रूप से सोचने में सक्षम होंगे और सावधानी बरतेंगे।

सोनू कुमार –II
सहायक लेखा अधिकारी

•

स्क्रीन में उलझा बचपन

आरव स्कूल यूनिफॉर्म पहने कुर्सी पर बैठा है। उसकी मां उसके बेतरतीब बालों पर कंघी कर रही है। उसके पापा उसके पैरों को मोजे में डाल रहे हैं। सामने टेबल पर रखे मोबाइल फोन पर लगातार रील्स चल रहे हैं। आरव की आंखें मोबाइल के स्क्रीन पर जमी हुई हैं। वह बीच-बीच में नए रील चला रहा है। रील्स भी बड़े बेतुके से हैं- कोई कुर्सी पर बैठने जा रहा है, तभी पीछे से दूसरा आकर उसकी कुर्सी पीछे खींच लेता है, बैठने वाला गिर पड़ता है। हँसी की आवाज गूँजती है। कोई किसी को बेवजह चपत लगा रहा है। किसी रील में कोई महिला अजीब ढंग से नाच रही है। किसी वीडियो में कोई कपड़े धो रहा है। कोई बर्तन धो रहा है। कोई खाना पका रहा है। कोई कार के बंद दरवाजे को चाबी के बिना खोलने की तरकीब सिखा रहा है। ऐसे सभी कार्य आठ वर्षीय आरव के लिए निरर्थक है। पर वह 20-30 सेकेंड के इन बेवजह वीडियो को चाव से देखे जा रहा है। वह नाश्ता कर चुका है। स्कूल बस के हॉर्न की आवाज़ सुनकर उसकी माँ आरव को लगभग घसीटते हुए सीढ़ियोंसे उतारती है। आरव गुस्से से चीखते चीखते हुए अपनी माँ के हाथ को छुड़ाने के प्रयत्न करता है। उसे मोबाइल फ़ोन पर विडियो देखना है।

आरव दोपहर को स्कूल से घर आते ही मोबाइल लेकर बैठ जाता है। मोबाइल पर कार्टून देखते-देखते ही खाना

खाता है। जैसे तैसे होमवर्क पूरा कर वह या तो वह टीवी ऑन कर सामने बैठ जाता है या मोबाइल फोन पर लग जाता है। कभी लेट कर कभी बैठे-बैठे कभी खड़े-खड़े लगातार वह मोबाइल पर गेम खेलता है, घटिया, निम्न रुचि के कथित 'फनी वीडियो' देखता है। अनुमान है कि वह रोज 6 घंटे मोबाइल पर समय बीताता है। यह केवल आरव की कहानी नहीं है। दुनिया भर के तमाम बच्चों की जीवन शैली लगभग ऐसी हो गई है।

मोबाइल फोन कभी बात करने का साधनमात्र हुआ करता था। पर इसे इंटरनेट, कैमरा जैसी सुविधाओं से लैस करते ही इसकी भूमिका काफी व्यापक हो गई है। स्मार्टफोन में खेल, शिक्षा, मनोरंजन, समाचार आदि से जुड़ी सभी सामग्रियां तुरंत प्राप्त हो जाती हैं। मोबाइल फोन पर सोशल साइट्स पर मित्रता करने से लेकर बातचीत, टेक्स्ट मैसेज, तस्वीर और वीडियो आदि भेजना और प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है। इन जटिल और अंतहीन सामग्रियों का बाल मन पर बेहद बुरा पर असर पड़ता है। इंटरनेट का जाल इतना उलझाने वाला है कि बच्चे एक बार इसके गिरफ्त में आ जाए तो उस पर तमाम ऐप्स का शिकंजा कसता चला जाता है। बाल मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि बाल मन बेहद कल्पनाशील होता है। उसकी जिज्ञासा इतनी अधिक होती है कि वह प्रतिपल नई-नई चीजें जानना चाहता है। इंटरनेट का मायावी संसार उसकी अपेक्षाओं के ठीक अनुकूल है। वीडियो गेम्स को ऐसे डिजाइन किए जाते हैं कि प्रत्येक बढ़ते लेवल में उसका स्वरूप बदलता जाता है। चुनौतियां बढ़ती जाती हैं और साथ में तनाव भी। सोशल साइट्स पर कुछ परिचित चेहरे होते हैं तो ढेरों अपरिचित चेहरे भी। अनजान लोगों से चैटिंग में

बच्चों को रोमांच की अनुभूति होती है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि ये अपरिचित मीठी - मीठी बातें कर बच्चों को, विशेषकर किशोरवय को फांस लेते हैं। फिर ब्लैकमेल कर उनका शोषण किया जाता है। zफनी वीडियो के नाम पर असंख्य मूर्खतापूर्ण सामग्री उपलब्ध हैं। बच्चों का सहज व सरल मन उस निकृष्ट सामग्री में रुचि लेने लगता है। इस प्रकार बच्चों की अभिरुचि निम्नगामी हो जाती हैं।

प्रगति की दौड़ में यह बेहद चुनौतीपूर्ण समय है। टेलीविजन या सिनेमा में तो जो सामग्री दिखाई जाती है, उसका निर्माण तथा संपादन कुशल एवं प्रोफेशनल व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। कंटेंट के निर्माण की प्रक्रिया में कई लोग शामिल होते हैं जैसे कि निर्देशक, लेखक, संगीतकार, अभिनेता-अभिनेत्री आदि। परंतु सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव में आजकल सभी ऑडियो-विजुअल कंटेंट मोबाइल फोन की सहायता से बनाकर इंटरनेट पर अपलोड कर रहे हैं। इन सामग्रियों को कई ऐसे व्यक्ति भी बना रहे हैं जिन्हें कला, साहित्य, तकनीक, संगीत या सबंधित विषय क्षेत्र में दक्षता प्राप्त नहीं है। ऐसे निम्न स्तरीय सामग्रियां बच्चों के विकसित होते मन मस्तिष्क पर बेहद बुरा प्रभाव डालते हैं।

वे वीडियो में दिखाए गए स्तरहीन सामग्री की नकल करते हैं, जिससे उनके बौद्धिक स्तर का पतन होना सुनिश्चित है। दुखद बात यह है कि इन सामग्रियों पर रोक लगाने का कोई साधन नहीं है। स्मार्टफोन एवं कंप्यूटर स्क्रीन पर पल-पल बदलते दृश्य एवं बदलती सामग्री के कारण बच्चों का अध्ययन और मनन में मन नहीं लगता है। गंभीर अध्ययन के लिए पर्याप्त समय,धैर्य,परिश्रम और लगन की आवश्यकता होती है। बच्चे क्लासरूम में बोर हो जाते हैं। शिक्षकों की बातें ऊब पैदा करती हैं, क्योंकि बच्चे प्रत्येक 30 सेकंड में कंटेंट चेंज करने के अभ्यस्तात हो गए हैं। लगातार स्मार्टफोन के उपयोग करते रहने से उससे निकलने वाली नीली रोशनी बच्चों की आंखों के लिए बेहद नुकसानदेह होता है। सुस्ती और आलस्य के कारण उसके मन में एक प्रकार का विषाद उत्पन्न हो जाता है। अतः उन्हें माता-पिता और शिक्षकों द्वारा दिए गए सलाह बिल्कुल नहीं सुहाता। एक तरफ पढ़ाई का दबाव और दूसरी तरफ स्क्रीन पर आभासी जगत का खिंचाव। ऐसे में वह अभिभावकों की नेक सलाह को कैसे स्वीकार कर सकता है क्योंकि वह तो स्वयं ही अंदर से अव्यवस्थित और उलझा हुआ होता है। स्मार्टफोन के स्क्रीन की चकाचौंध में सुधबुध खोया बालमन वास्तविक दुनिया से दूर होता जाता है। स्मार्टफोन एवं कंप्यूटर के आने से पहले बचपन कितना निर्मल, स्वाभाविक और प्रफुल्लित हुआ करता था। बच्चे समूह में खेलते थे। गली मोहल्लों के बच्चे इकट्ठे होकर है हँसते और बातें करते थे। खेलकूद, भाग दौड़ तथा शारीरिक गतिविधियों से बच्चों के मन और शरीर दोनों स्वस्थ रहते थे।

आज के डिजिटल युग में, मोबाइल फोन, टैबलेट और कंप्यूटर सर्वव्यापी हो गए हैं, जो अंतहीन मनोरंजन और शैक्षिक संसाधन प्रदान करते हैं। हालांकि, बच्चों में बढ़ता स्क्रीन समय एक बढ़ती हुई चिंता है। कई अध्ययनों ने अत्यधिक स्क्रीन उपयोग के संभावित शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रभावों को उजागर किया है।

लंबे समय तक स्क्रीन के सामने रहने पर इसका सबसे तत्काल प्रभाव आँखों पर पड़ता है। इसे कंप्यूटर विज़न सिंड्रोम (सीवीएस) के रूप में जाना जाता है, जो सिरदर्द, धुंधली दृष्टि और सूखी आंखों जैसे लक्षण पैदा कर सकता है। बच्चों की आंखें विशेष रूप से कमजोर होती हैं क्योंकि वे अभी भी विकसित हो रही हैं। अत्यधिक स्क्रीन समय से मायोपिया (निकट दृष्टि दोष) भी हो सकता है, जो वैश्विक स्तर पर बच्चों में तेजी से बढ़ रहा है।

स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी मेलाटोनिन के उत्पादन में बाधा डाल सकती है, जो नींद को नियंत्रित करने वाला हार्मोन है। विशेष रूप से सोने से पहले स्क्रीन का उपयोग करने वाले बच्चों को सोने में कठिनाई, नींद की गुणवत्ता में

कमी और नींद के पैटर्न में गड़बड़ी का अनुभव हो सकता है। खराब नींद उनके कार्य, मूड और समग्र स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

बढ़ता हुआ स्क्रीन समय अक्सर शारीरिक गतिविधि में कमी से जुड़ा होता है। जो बच्चे स्क्रीन पर काफी समय बिताते हैं, वे गतिहीन जीवन शैली अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं, जिससे मोटापा और मधुमेह और हृदय रोग जैसी संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। शारीरिक गतिविधि की कमी कौशल और समग्र शारीरिक फिटनेस का विकास भी प्रभावित होता है।

तेज़ गति वाले डिजिटल कंटेंट के निरंतर संपर्क से ध्यान अवधि कम हो जाती है जिससे एकाग्रता में कमी हो सकती है। स्क्रीन द्वारा प्रदान की जाने वाली तत्काल संतुष्टि के आदी बच्चे ध्यान केंद्रित करने और धैर्य के साथ सीखने की प्रवृत्ति से दूर चले जाते हैं जो अकादमिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं।

अत्यधिक स्क्रीन समय का संबंध आक्रामकता, अति सक्रियता और भावनाओं को प्रबंधित करने में कठिनाइयों जैसी व्यवहार संबंधी समस्याओं से जुड़ा हुआ है। हिंसक या अनुचित सामग्री बच्चों के व्यवहार और दृष्टिकोण को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, स्क्रीन की लत से चिड़चिड़ापन हो सकता है।

सहानुभूति, संचार कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने के लिए बच्चों को वास्तविक दुनिया के साथ सीधा संपर्क और समन्वय की आवश्यकता होती है। अत्यधिक स्क्रीन समय इन अवसरों में बाधा डाल सकता है, जिससे सामाजिक अलगाव और स्वस्थ संबंध बनाने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया पर अपरिचित व्यक्तियों द्वारा टिप्पणी बच्चों में चिंता, अवसाद और उनके आत्म-सम्मान में कमी का कारण बन सकती हैं।

हालाँकि स्क्रीन पर शिक्षा संबंधी सामग्री लाभकारी हो सकती है परन्तु अत्यधिक स्क्रीन पर समय व्यतीत करने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह होमवर्क, पढ़ाई और अन्य बौद्धिक गतिविधियों के लिए उपलब्ध समय को कम कर सकता है। इसके अलावा, स्क्रीन के साथ मल्टीटास्किंग से याददाश्त और समझने की क्षमता प्रभावित हो सकती है, जिससे शैक्षणिक प्रदर्शन में कमी आ सकती है।

समग्र विकास के लिए रचनात्मक खेल और शारीरिक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं। अत्यधिक स्क्रीन समय से कल्पनाशीलता, बौद्धिक सोच और समस्या समाधान की क्षमता प्रभावित हो सकती है। जो बच्चे मनोरंजन के लिए अत्यधिक स्क्रीन पर निर्भर होते हैं वे सक्रिय निर्माता बनने के बजाय निष्क्रिय उपभोक्ता बन कर रह जाते हैं।

माता-पिता को स्क्रीन समय के बारे में स्पष्ट नियम स्थापित करने चाहिए। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स 2 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रति दिन एक घंटे से अधिक स्क्रीन समय की सिफारिश नहीं करती है। स्क्रीन से ब्रेक और स्क्रीन-फ्री समय का अनुशासन, विशेष रूप से सोने से पहले कंप्यूटर और मोबाईल से दूर रहने की प्रवृत्ति नकारात्मक प्रभावों को कम करने में भी मदद कर सकता है।

बच्चों को शारीरिक गतिविधियों, और सामाजिक संपर्क में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करने से स्क्रीन समय को काफी हद तक सिमित किया जा सकता है। यह शारीरिक एवं मानसिक विकास में स्वस्थ संतुलन प्रदान करता है। कहानी, कविता या बाल साहित्य पढ़ने, बाहर मित्रों के साथ खेलने और इंडोर खेल जैसी गतिविधियों में अधिक समय देने के लिए प्रेरित कर बच्चों को स्क्रीन से बचाया जा सकता है।

बच्चों के विकास में माता-पिता की अहम भूमिका होती है। इसलिए उन्हें यह सुनिश्चित करते हुए अपने बच्चों के संपर्क में आने वाली सामग्री की निगरानी करनी चाहिए कि वह उनके आयु के लिए उपयुक्त और शैक्षिक उपयोगिता के लिए आवश्यक है। इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री को देखने और उस पर चर्चा करने से बच्चों को आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करने और यह निर्णय लेने में भी मदद मिल सकती है कि वे क्या देखना चाहते हैं।

घर के कुछ क्षेत्र, जैसे भोजन कक्ष और शयनकक्षों को स्क्रीन-मुक्त क्षेत्र के रूप में स्थापित करने से स्क्रीन समय को कम करने और स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। घर के व्यस्क सदस्यों को भी स्क्रीन समय का अनुशासन तथा स्क्रीन मुक्त क्षेत्र संबंधी प्रतिबंधों का पालन करना चाहिए। यदि घर के व्यस्क सदस्य इन नियमों का पालन करें तो बच्चें भी इन्हें पालन करने के प्रति गंभीर होंगे।

इंटरनेट के उदय ने बच्चों के खेलने और बातचीत करने के तरीके में क्रांति ला दी है, जिससे मनोरंजन और सीखने के अनगिनत अवसर मिलते हैं। हालांकि, यह डिजिटल खेल का मैदान महत्वपूर्ण जोखिम भी पैदा करता है, विशेष रूप से ऑनलाइन गेमिंग के क्षेत्र में। कई बच्चे इंटरनेट गेम्स की आकर्षक दुनिया का शिकार बन जाते हैं, जिससे अवसर आर्थिक शोषण होता है। ऑनलाइन गेम्स को अत्यधिक आकर्षक और नशे की लत बनाने के लिए सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किया गया है। रंगीन ग्राफिक्स, आकर्षक कहानियाँ और तात्कालिक पुरस्कारों के साथ, ये गेम बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं। इन खेलों की प्रकृति अक्सर बच्चों को लंबे समय तक खेलने के लिए प्रेरित करती है, जिससे इन-गेम खरीदारी और अन्य वित्तीय जाल में फंसने की संभावना बढ़ जाती है।

बच्चों का दिमाग जब विकास के प्रारंभिक चरण में होता है, खासकर जब तर्कसंगत निर्णय लेने और आवेग नियंत्रण की बात आती है तो उनका अपरिपक्व मन निर्णय लेने में भावनात्मक आवेश में गलती करते हैं। इंटरनेट की काली दुनिया में कुछ ऐसे पिशाच मौजुद होते हैं जो बच्चों की नासमझी का गलत लाभ उठाते हैं। बच्चा उनके जाल में फसकर अक्सर गैर कानूनी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं तथा अपना जीवन नष्ट कर बैठते हैं।

हमे यह स्मरण रखना चाहिए कि हम बच्चों को मोबाईल फोन, कंप्यूटर तथा इंटरनेट की सुविधाओं से वंचित नहीं कर सकते है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था एवं सूचना के ये महत्वपूर्ण उपकरण है। इनके अनगिनत लाभ है तथा बच्चों को अद्यतित सूचना के लिए इन साधनों का उपयोग करना है परन्तु इस संसाधनों के अत्यधिक उपयोग एवं दुरूपयोग से होने वाली हानि भी असीमित है।

माता-पिता की दोहरी जिम्मेदारी यह है कि वे इन संसाधनों की उपलब्धता के साथा-साथ बच्चों में अनुशासन, जागरूकता तथा उपयोग की सीमा की समझ विकसित करें। बच्चों की रूचि रचनात्मक कार्य तथा उच्च मानक संपन्न सामग्री को देखने व सुनने में विकसित करें ताकि बच्चें आधुनिकता के साथ-साथ अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में समन्वय करने में सक्षम हों।

सुस्मिता सरकार
• वरिष्ठ लेखाकार

समोसा : भारत का स्नैक्स सम्राट

ब्रह्माण्ड के किसी भी हलवाई की दुकान पर दोचीजों का होना बहुत ही जरूरी है अन्यथा वह दुकान हलवाई की दुकान नहीं कहलाती.....पहला तो खुद हलवाई और दूसरा समोसा। संसार की एक मात्र ऐसी रचना जिसके तीन कोने (त्रिविमीय) होने के बावजूद भी शान से सीना तन कर खड़ा हो जाता है।

हलवाई की दुकान पर तले जाने के पहले जब समोसे भर कर ट्रे में रखे जाते है तो पूरी समोसा मंडली पंक्तिबद्ध रूप से यूँ खड़ी दिखती है मानो सफ़ेद वर्दी पहने सावधान मुद्रा में खड़े होकर 'गार्ड ऑफ़ ऑनर' दे रहे हो। अपने इसी शाही अंदाज के कारण सैंकड़ो वर्षों से समोसा स्नैक्स फूडका अघोषित सम्राट है और अपने दो महारानियों अर्थात हरी और लाल चटनी कहीं - कहीं सरसों की चटनी के साथ लोगों के स्वादपटल पर एक अविस्मरणीय छाप बना रखा है।

यह अमीर-गरीब में फर्क नहीं करता है.....एयरपोर्ट लाउंज की fancy लुटेरी कॉफी शॉप में"Two Samosas" for□250/-only से लेकर स्ट्रीट फूड के रूप में ""दस के दो"" भी मिल जाया करती है।

ताज होटल की चाँदी की प्लेट से लेकर पुल के नीचे वाले ठेले पर अखबार मे लिपटा हुआ भी मिलता है। कुल मिलाकर बड़े वाले सेठ जी और सेठ जी के घर व दुकान का नौकर दोनों बराबर स्वाद लेते है.....

सड़क के किनारे किसी ठेले पर छोले और चटनी के साथ स्वाद लेते हुए किसी नए नियोजित कूरियर कंपनी के डिलीवरी बॉय को फोन पर जब कॉल आती है, और वो सामने से रिप्लाई करता है कि मैं अभी लंच कर रहा हूँ तो समोसे को इतना प्राउड फील होता होगा कि उसके अंदर के आलू "अजीमोशान शहँशाह'" वाले बैकग्राउंड म्यूजिक पर नाचने लगते होंगे। बस यूं समझिए कि जहां खाने को कुछ भी नहीं मिलता है वहाँ पर भी समोसा प्राणरक्षक बन कर सामने प्रस्तुत रहता है फिर चाहे लंबी दूरी की ट्रेन में हॉकरों द्वारा "समोसा-समोसा" की मधुर आवाज़ के रूप में या किसी अंजान से स्टेशन पर "गरम समोसा और चाय" की मधुर आवाज़ के रूप में अपनी उपलब्धता सुनिश्चित करे। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में मृत्यु और दुकान पर ग्राहक के आने का कोई निश्चित समय नहीं होता है ठीक उसी प्रकार समोसा खाने का भी कोई निश्चित समय नहीं होता है।

पूरे हिंदुस्तान के साथ साथ विश्व के कई देशो में सुबह के नाश्ते के रूप में यह सुगमता से उपलब्ध रहता है। साथ ही देशभर की फैक्ट्रियों तथा कॉर्पोरेट ऑफिसों की कैंटीन में यह दिन भर सजा रहता है। स्कूल- कॉलेज की कैंटीनों में यह अनगिनत बनती बिगड़ती प्रेम कहानियों का निकटस्थ व चश्मदीद गवाह बनने का गुरूर भी रखता है और शान से वहाँ की रसोई की कढ़ाई में दिन भर निरंतर गोते लगा -लगा कर वहाँ की शोभा बढ़ाता रहता है।

लेबर के ओवर टाइम का पैसा भले ही कम दे दिया जाए पर बीच - बीच में ब्रेक देकर चाय के साथ समोसा खिला दो तो फिर देखिये लिंटर और छज्जे ढालने का काम किस स्फूर्ति से निपटाते है।

समोसा, कहीं मैश किए आलू से भरा जाता है तो कहीं कटे हुए चौकोर आलुओं के घनाकार टुकड़ों के स्वादिष्ट मिश्रण से.....अब तो प्रायोगिक तौर पर विभिन्न प्रकार के स्टफ़्ड समोसे, चाइनीज समोसे, अपने बंगाल के मीठे समोसे या पुरानी दिल्ली के मक्खन वाले समोसे सभी बाज़ार में खासे प्रचलन में है। कुल मिलकर यह किसी भी रूप में अवतार ले इसकी डिमांड सर्वत्र अपनी जगह तत्काल ही बना लेती है। हमारे कार्यालय के कैंटीन से आने वाले समोसे का गुरुवार को लगभग सभी को इंतज़ार रहता है। इस दिन चाय वाले भैया की न्यायालय मे बयान देने वाले गवाह से भी अधिक आतुरता से प्रतीक्षा की जाती है एवं उनके जीपीएस पोजिशनिंग को ट्रैक करने के लिए कार्यालय में कई विशेष समूह निरंतर प्रयासरत रहते है।

देश भर में कहीं स्कूल मे निरीक्षक आ जाए, किसी कार्यालय/कंपनी में ऑडिट की टीम आ जाए, कोई पुराना ग्राहक या क्लाईट ख़रीदारी या कोई बिज़नस डील के लिए आ जाए तो ट्रे में चाय के कप के साथ समोसा होना उतना ही स्वाभाविक है जितना कि सेटमैक्स पर बार बार "सूर्यवंशम" का आना.....फिर चाहे चाय के साथ चिप्स, बिस्कीट, भुजीया या कोई अन्य स्नैक्स कुछ भी हो पर अतिथि के लिए विस्मयादिबोधक मुस्कान के साथ "अरे! एक समोसा तो लीजिए" का आग्रह सम्बोधन का एक सम्मानसूचक संस्कार हड़प्पा संस्कृति से ही परंपरागत तौर पर प्रचलन में है।

भारत के राष्ट्रीय स्नैक्स की पदवी/सम्मान के लिए चाहे कोई भी सर्वे करवाया जाए या फिर वोटिंग करा लिया जाए मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पदवी/सम्मान पर समोसे के चुनाव होना 100 प्रतिशत तय होगा। धन्यवाद!

पंकज कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

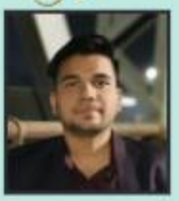

एस्पिरेंट

वैसे तो एस्पिरेंट शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। विशेष रूप से किसी पद की लालसा या इच्छा रखने वाले को एस्पिरेंट या आकांक्षी कहते हैं चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो। इसे आकांक्षी, उम्मीदवार, पदाभिलाषी इत्यादि नामों से जान जाता है। परंतु ये शब्द आज- कल प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे संघ लोकसेवा आयोग (यू.पी.एस.सी), कर्मचारी चयन आयोग (एस.एस.सी.), बैंक, रेल, एवं अन्य राज्य स्तरीय परीक्षाओं इत्यादि और राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं जैसे एन.ई.ई.टी, जे.ई.ई इत्यादि की तैयारी करने वाले लोगों के लिए रूढ़ हो चुका है।

भारत मे प्रत्येक वर्ष करोड़ो लोग एक नौकरी पाने एवं चिकित्सा और तकनीक जैसी पढ़ाई हेतु अच्छे कॉलेज मे प्रवेश के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते है। जिनमें से सिर्फ एक दो लाख लोग ही चयनित हो पाते हैं। ऐसा नहीं है कि ये प्रतिभाशाली नहीं होते परंतु रिक्त पदों में कमी के कारण कुछ उत्कृष्ट एस्पिरेंटही सफल हो पाते हैं। एस्पिरेंट्स के बीच प्रतिस्पर्धा भी बहुत होती है। एक दो नंबर का फासला उन्हें सैकड़ों लोगों के पीछे ढ़केल देता है। सिर्फ एक नंबर का फासला उन्हें सफल एवं मेधावी से असफल एवं मंद बुद्धि का बना देता है। अर्थात् सिर्फ कट-ऑफ जितना नंबर पाने वाले को मेधावी, मेहनती एवं सफल माना जाता है एवं सिर्फ एक नंबर से रह जाने वाले एस्पिरेंटस को असफल, मंद बुद्धि आदि कहकर बुलाया जाता है। इसके अतिरिक्त आरक्षण जैसी व्यवस्था बहुसंख्यक एस्पिरेंटको और भी हताश करती है, जहाँ अपेक्षाकृत कम नंबर पाने वाले भी चयनित हो जाते है और सामान्य वर्ग वाले देखते रह जाते हैं।

ये प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए बड़े शहरों मे जाते है जहाँ बड़े कोचिंग सेंटरों का अलग ही व्यापार चल रहा होता है। सभी संस्थान स्वयं को नंबर 1 कोचिंग संस्थान बताते हैं। टॉपर्स की फोटो बड़े - बड़े बैनरों में छपवाकर ये अपने संस्थानों का प्रचार करते है। लेकिन आश्चर्य की बात तो ये है कि एक ही टॉपर्स की फोटो एक से अधिक संस्थानो के बैनरों मेंभी दिख जाती हैं। जिसका कारण यह है कि ये संस्थान पैसे देकर टॉपर्स को खरीद लेते हैंअर्थात् वे पैसे देकर टॉपर्स से सिर्फ इतना कहने के लिए कहते हैं कि"वे उनके कोचिंग संस्थान से तैयारी कर रहे थे।" इसी दुश्प्रचार के सहारे वे भोले

- भाले एस्पिरेंटका ध्यान आकर्षित करते हैं और लाखों की फीस भी लेते है। इन संस्थानों में सुरक्षा उपायों पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। छोटे कमरे मे इतने लोगों को पढ़ाया जाता है कि आपतकालिन परिस्थितियों में वे तुरंत बाहर भी न आ सके। इसके अलावे बसेमेंट मे पुस्तकालय जैसी सविधा दी जाती है जो सुरक्षा उपायों के बिल्कुल खिलाफ है।

साथ ही कोचिंग हब कहे जाने वाले शहरों जैसे राजेंद्र नगर, मुखर्जी नगर, कोटा जैसे शहरों में पी.जी. (पेईंगगेस्ट) सेवाएं भी व्यापार बन गई है।इनशहरों मे प्रतिवर्ष इतने एस्पिरेंट्सपरीक्षाओं की तैयारी के लिए आते हैं कि यहाँ उन्हें रहने की भी असुविधा का सामना करना पड़ता है। मांग अधिक होने के कारण यहाँ के पी.जी एस्पिरेंट्ससेमनमाने दर पर पैसे लेते है। और सुविधा के नाम पर इन्हें बुनियादी सुविधाएं भी नहीं दी जाती।एक छोटे से कमरे में एक से अधिक एस्पिरेंट्स को रहना पड़ता है एवं पढ़ाई भी करनी होती है।

फिर भी एस्पिरेंटबिना हिम्मत हरे अथक परिश्रम करते हैं। ये अपने घरों से दूर रहकर बहुत ही सीमित संसाधनों मे अपना गुजारा करते हैं। पढ़ाई के साथ - साथ ये अपना सारा दैनिक कार्य जैसे खाना बनाना, कपड़े धोना इत्यादि स्वयं करते हैं। ये वर्षों तक पूरे समाज से कट कर कमरे की चार दिवारी के अंदर ही अपने समाज का निर्माण करते हैं जिसमे पढ़ाई के अलावा उन्हें कुछ सूझता तक नहीं । उन्हेंसमाज के पर्वों - त्योहारों से कोई मतलब नहीं होता। सरकारी नौकरी ही उनका एकमात्र लक्ष्य होता है।

zरक्षा सेवा की तैयारी करने वाले एस्पिरेंट्स के लिए तो शारीरिक रूप से भी तंदुरुस्त रहना होता है। जिसके लिए वे सूरज उगने से पहले ही उठते हैं और पढ़ाई के साथ - साथ वे सुबह शाम दौड़, हाई जंप, लांग जंप इत्यादि की तैयारी भी करते हैं। पहले प्री फिर मेंस, शारीरिक क्षमता, मेडिकल जैसा पड़ाव पार करने के पश्चात सिर्फ मुट्ठी भर लोग ही चयनित हो पाते हैं। फिर अग्निपथ जैसी सरकारी योजनाएं इनके हौसलों पर पानी फेरने का कार्य करती है। सोचिए यह कितनी भयावह स्थिति होगी जहाँ चार वर्ष की सेवा के पश्चात सिर्फ 10 प्रतिशत अग्निवीरों को स्थाई रूप से सेना मे शामिल किया जाता है शेष 90 प्रतिशत अग्निवीरों को कार्यमुक्त कर दिया जाता है। इतने कठीन परिश्रम के पश्चात अभ्यार्थी एक नौकरी पता है एवं चार वर्ष की सेवा के पश्चात जिस समय उसकी उम्र मात्र 25 वर्ष होगी वह फिर से बेरोज़गार हो जायेगा। यह योजना एस्पिरेंट के लिए किसी श्राप से कम नहीं है।

Fee Structure (Inclusive of GST)
(Applicable from 01st April, 2019)

COURSE	Total	One Time Fee	Installment Fee	One Time Fee	Installment Fee
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्री,मैंस, इंटरव्यू जैसे पड़ाव पार करने के पश्चात् इन एस्पिरेंटको पेपर लीक जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। 6 अप्रैल 2024 को प्रकाशित द इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत मे पिछले पाँच वर्षों मे 15 राज्यों मे 41 से ज्यादा बार पेपर लीक की घटनाएं हुई है। जिससे 1.5 करोड़ एस्पिरेंटप्रभावित हुए हैं जो मात्र 1.04 लाख सीट के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। ये सिर्फ आधिकारिक आंकड़ें थे अपंजीकृत या अनाधिकारिक आंकड़ें इससे भी ज्यादा हो सकते है। जब भी पेपर लीक का मामला सामने आता है और मामला न्यायालय जाता है और न्यायालय जब परीक्षा रद्द

कर देता है तो कई मामलों में तो दुबारा परीक्षा होते - होते दो वर्षों तक का समय लग जाता है तो कभी दुबारा परिक्षाएं करायी ही नहीं जाती। जबकि सरकार को दोषियों को जल्द से जल्द सजा देकर तुरंत दुबारा परीक्षा कराना चाहिए ऐसा न होने पर वे एस्पिरेंट्स अत्यधिक प्रभावी होते है जिन्होंने वाकई स्वच्छ तरीके से परीक्षा दी है, जो वाकई पद के हकदार थे। सोचने की बात तो यह है ऐसी घटनाओं से गुजरने के पश्चात एस्पिरेंट्सकी मानसिक अवस्था पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता होगा।

पेपर लीक इतनी गंभीर समस्या होने के बावजूद इसके लिए लोक परीक्षा कानून (Public Examination Act 2024) 2024 से पहले कोई विशेष कानून बनाया ही नहीं गया था। इस कानून के पहले भारतीय दंड संहिता (Indian Penal Code)की धारा 420, 468 और 120B के तहत पुलिस मामला दर्ज करती थी। जिसमे 420 और 468 के तहत चीटिंग और फोर्जरी के अपराध आते थे एवं120B के तहत आपराधिक साजिश के मामले दर्ज होते थे। केंद्रीय कानून से पहले, राज्यों में नकल रोकने और परीक्षा में धांधली रोकने के लिए कई कानून बने हैं। ओडिशा में 1988 में, आंध्र प्रदेश में 1997 में, उत्तर प्रदेश में 1998 में, झारखंड में 2001 में, छत्तीसगढ़ में 2008 में, राजस्थान में 2022 में, गुजरात और उत्तराखंड में 2023 में ऐसे कानून बनाए गए हैं। राज्य स्तरीय कानून बनने के पश्चात् भी पेपर लीक पर लगाम नहीं लग पाई है। अंततः राष्ट्रीय पेपर लीक कानून वर्ष 2024 में फरवरी माह में पारित हुआ था। जो 1 जुलाई 2024 से संपूर्ण देश मे लागू है। इसे 'लोक परीक्षा कानून 2024' (Public Examination Act 2024) नाम दिया गया है। इसके लागू होने के बाद सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों का इस्तेमाल करने पर तीन से पांच साल की सजा और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। संगठित रूप से इस तरह

का अपराध करने पर एक करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। इतना ही नहीं यदि एग्जामिनेशन अथॉरिटी या सर्विस प्रोवाइडर कोई संगठित अपराध करता है, तो जेल की अवधि न्यूनतम पांच वर्ष और अधिकतम 10 वर्ष होगी, और जुर्माना □ 1 करोड़ है। क्या यह कानून अपने आप में इतना कठोर है की यह पेपर लीक जैसी संगीन अपराधों को कम कर पायेगा? देखने योग्य बात होगी।

इतनी कठिनायों इतना सब कुछ झेलने के बाद जब उनसे यह प्रश्न किया जाता है कि नौकरी कब मिलेगी? या क्या कर रहे हो आज कल? इस बार तो परीक्षा पास कर लोगे न? तब ये प्रश्न उन्हें पूरा झकझोर कर रख देता है।उन्हें बेरोजगार जैसे शब्दों से संबोधित किया जाता है। समाज उन्हें नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ता। नौकरी के बिना एस्पिरेंट ना घर का न घाट का - जैसी स्थिति में उलझा रहता है। इसी कारण नौकरी न मिलने पर एस्पिरेंट्स अपने घर जाना भी कम कर देते हैं। और वर्षों के कठीन परिश्रम के पश्चात् जब वे सफल नहीं हो पातें तो कुछ एस्पिरेंट्स आत्महत्या तक कर लेतें है। जो बिल्कुल भी गलत है। कोई नौकरी या पद आपकी जिंदगी से बढ़कर नहीं हो सकता यह बात एस्पिरेंटस को समझनी चाहिए एवं रोजगार के अन्य अवसर ढूँढ़ने चाहिए।

सचिन प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक

एक नारी

"एक नारी है जो खुद से है परिचित
हिम्मत की जिसका अंत नहीं
चलती है अकेली अपने रास्ते पर
ठोकरों की परवाह नहीं करती वह

सपने हैं आँखों में उसके
साहस है दिल में उसका
झूकती नहीं किसी के सामने
खड़ी है अपने पैरों पर वह

लड़ती है अपने हक की लड़ाई
सपनों को पूरा करने की ताकत रखती है
हार नहीं मानती किसी चुनौती से
लक्ष्य को प्राप्त करती है वह

आग है अंदर जो जलती रहती
जुनून जो सपनों को पूरा करने में मदद करता
रुकती नहीं किसी बाधा के सामने
सपनों को हकीकत में बदलती है वह

मालकिन है जीवन की वह
अपने फैसलों की वजह से खड़ी है
झूकती नहीं किसी दबाव में
चुनौतियों से लड़ती है वह

प्रेरणा है कहानी उसकी

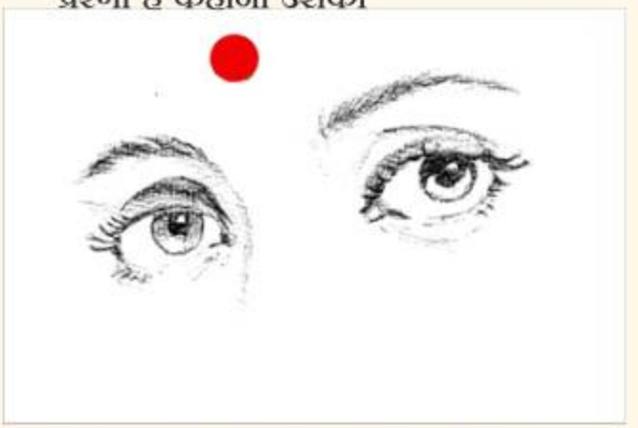

सपनों को पूरा करने में सफल हुई वह
मिसाल है वह सबके लिए
अपने जीवन को अपने तरीके से जीती है वह

अंशु बाला
सहायक लेखा अधिकारी

जीवन का नया अध्याय...

यह कहानी है एक छोटे से गाँव में बहुत गरीब परिवार में जन्मे एक बच्चे की जो बचपन से ही बहुत शरारती था। गाँव के सब लोग उसके माता-पिता को कहते - तुम तो बहुत ही भाग्यशाली हो कि तुम्हारे घर साक्षात कृष्ण के रुप में बालक का जन्म हुआ है, जो बड़ा होकर अपने गाँव का और अपने परिवार का नाम रौशन करेगा। इसके विपरीत उनके माता-पिता को न जाने क्यों ये लगता था कि ये तो बचपन से ही बहुत शरारती है, न जाने आगे जाकर क्या करेगा। परंतु, मन ही मन वे सोचते रहते थे कि बचपन में मैं भी तो इसी तरह से शरारतें किया करता था, तभी तो मेरे बच्चे भी इसी तरह के हैं। मैं तो अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाया,कहीं इसके साथ भी यदि यही हुआ तो मैं क्या करूँगा। ये सोच वे मन ही मन परेशान रहने लगे। माता-पिता उनकी शरारतों में अपने बचपन को देखा करते थे, उन्हें ऐसा महसूस होता था कि यह तो हमारी ही परछाई है। यही सोच कर वे उसकी हर शरारतों को नजरअंदाज किया करते। बच्चे को कुछ भी पता नहीं होता की वह क्या कर रहा है वह ये भी नहीं समझ पाते कि वह जो कर रहा है वह सही है या गलत। बस उसे जो अच्छा लगता है वह वही करता रहता हैऔर उनके माता – पिता को भी उनकी हर शरारतें पसंद आती थी।

इसी तरह शरारतें करते-करते वह धीरे-धीरे बड़ा होने लगा परंतु उसकी शरारतें कम होने का नाम ही नहीं ले रहीं थी। चाहे जैसी भी स्थिति थी उनके माता-पिता के प्यार और स्नेह में कोई कमी नहीं थी। इस कारण दिन-प्रतिदिन उसकी शरारतों को मानों मजबूती मिलती जा रही थी। शरारत करते-करते समय बीतता गया। बच्चा बड़ा हो गया, पास के ही गाँव के स्कूल में उसका दाखिला करवा दिया गया। क्योंकि शहर में जाना और उसे वहाँ पढ़ाना उसके माता –पिता के लिए संभव नहीं था। वे इतना ही कमा पाते कि अपने परिवार का पालन-पोषण कर सके। वे सोचते रहते कि पास के गाँव के स्कूल में तो उसे पढ़ने भेज रहे हैं परंतु वहाँ उसे कैसी तालीम मिलेगी? काश मैं अपने बच्चे को बड़े स्कूल में पढ़ने भेज पाता। यह सोच वे अंदर ही अंदर चिंतित भी रहा करते। उन्हें लगता था कि स्कूल में पढ़ने से उनका बच्चा शरारत कम करेगा। परंतु ऐसा कुछ भी नहीं होता बच्चा स्कूल जाने के नाम से बहुत उत्साहित रहता। वह सोचता मैं तो अब स्कूल

जाऊँगा वहाँ खूब मौज मस्ती करूँगा। यह सब सोच वह बहुत
स्कूल से भी बड़ी-बड़ी शरारतों की लिस्ट आनी शुरू हो गई। उ
पढ़ने लिखने लगेगा तो उसकी शरारतें थोड़ी कम हो जाएंगी
चिंतित रहने लगे। वे अपने बच्चे को समझाने लगे कि शरारत
करता जो उसे अच्छा लगता मानो वह अपने मन का मालिक
वह अपने माता-पिता की सभी बातों को बड़े गौर से सुनता कुछ
परंतु कुछ ही देर में वह खेल-खेल में ही सब कुछ भूल कर वापस

वह अपने माता-पिता से बहुत प्यार करता, वे अपने पि
लिए अमृत के समान था। वह अपनी माँ के लिए कुछ भी कर गुज
मानता था। वह हमेशा ही मस्ती के मूड में रहता उसकी माँ को
क्या करें, सिर्फ शरारत से जिंदगी तो नहीं चलती। इस तरह वह
रहा था, वैसे-वैसे उसमें सोचने समझने की शक्ति बढ़ती जा र
उसके माता-पिता को बहुत अच्छा महसूस होने लगा था। परंतु
क्या हो गया की वह शरारतें कम करने लगा तभी उसने अपने
नहीं है न? तुम हमेशा इतने उदास क्यों रहा करते हो तब बेटे ने
इतना टेंशन हो गया है कि कुछ समझ में ही नहीं आता लाईफ क
पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते हैं परंतु मैं उस तरह से नहीं कर पा र
लाईफ में कमजोर न पड़ जाऊँ। आगे हमारे लाईफ में क्या होग
जो भी हो मैं आपका सिर नहीं झूकने दूंगा। यह सब बातें वो
महसूस होने लगा कि अब हमारा बेटा अपनी लाईफ में आगे के
अपने आप को बदलने की कोशिश कर रहा है। इस बात से उ
मानों माता-पिता की सारी चिंताएँ अब दूर हो गई हो। धीरे-धीरे
अब वह अपनी पढ़ाई – लिखाई में बहुत लीन रहने लगा।उसने
अब किताबों की दुनिया में ही रहने लगा हो। उसे बाहरी दुनिया
आती गई माता - पिता से उसकी नजदीकियाँ कम होने लगी।
पिता चिंतित रहने लगे। उन्हें एहसास होने लगा कि जब बेटा श
ये दिन-भर शरारत करता रहता है मानों इसे कोई काम ही नहीं
भी दिल को तकलीफ ही मिल रही है कि आखिरकार मेरे बेटे को
किताबों की दुनिया में खो गया है। अब तो उसकी शरारतों को ह

कि जब समय आता है तो बच्चों में स्वयं ही बदलाव आना शुरू हो जाता है। एक दिन माता-पिता को रहा नहीं गया तो वे अपने बेटे से पूछते है बेटा आखिरकार ऐसी क्या बात हो गयी कि तुम दिन रात सिर्फ और सिर्फ किताबों की दुनिया में लगे रहते हो मानों अब तुम्हारे जिदंगी में और और कुछ बचा ही न हो। हमलोग तो अब तुम्हारे लिए कुछ हैं भी की नहीं? तब बेटा कहता है ऐसा कुछ भी नहीं है माताजी-पिताजी। आप ही लोग तो कहते रहते तुम्हे दिन – भर शरारत के अलावा और कुछ दिखता नहीं है क्या? शरारत करना छोड़ क्यों नहीं देते? कब तक शरारत करके घरवालों को परेशान करते रहोगे? अब जब मैं बदल गया हूँ तो आपलोग कहते की शरारत क्यों छोड़ दिए हो तुम। सच कहूँ तो मुझे भी पता नहीं कि मैं कब और कैसे बदलता चलागया। हाँ एक बात तो जरूर है जब मैंनेस्कूल जाना शुरू किया उस समय तक तो मैं बिल्कुल पहले की ही तरह शरारती था परंतु कुछ समय बाद जब मैंने औरो को पढ़ते देखता उसे क्लास टीचर का स्नेह पाता देखता मुझे बहुत ही बुरा लगता। मैं यह सोचने लगता कि आखिरकार मुझे इतना प्रेम और स्नेह क्यों नहीं मिलता? मुझे बहुत ही अलग महसूस होता जैसे पूरी क्लास में मैं कहीं अकेला बैठा हूँ। इस बात को मैं समझ ही नहीं पा रहा था बस मेरे मन मे यह हमेशा ही चलता रहता की आखिर मुझसे क्या भूल हो गयी है? मुझमें क्या कमी रह गयी है? यह सब सोच अकेला ही गुमसुम रहने लगा। कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा एक दिन मेरी क्लास में नई टीचर आयी वे अपनी कक्षाएं ले रही थी। वे सभी बच्चों को देखती रहती वे सभी बच्चों के बारे में जानने की कोशिश करती रहती कि कौन – कौन बच्चे किस तरह के स्वभाव के है कौन पढ़ने वालें है, कौन शरारती है, कौन किस तरह के है। उस नई टीचर को सबके बारे में जानने की उत्सुकता का क्या कारण था यह तो पता नहीं परंतु जब क्लास में नई टीचर मुझसे कुछ भी पूछती तो मै ठीक से उसका उत्तर नहीं दे पाता उस नई टीचर को मुझमें कुछ तो अलग सा महसूस होने लगा। तभी एक दिन क्लास की उस नई टीचर ने मुझे बुलाकर पूछा तुम ऐसे क्यों हो?पढ़ाई- लिखाई में तुम्हारा मन क्यों नहीं लगता सिर्फ शरारत ही करते रहते हो और अकेले ही क्लास में गुमसुम से रहते हो मन हुआ तो पढ़ाई किए, मन नहीं तो नहीं किए ऐसा कब तक चलेगा? अब तो तुम बड़े हो रहे हो। माता-पिता तुम्हें कुछ नहीं कहते कि तुम्हारा पढ़ने में ध्यान क्यों नहीं रहता? तुम आगे जाकर क्या करोगे? यह सब बातें कह नई टिचर ने मुझे समझाया कि माता-पिता पर क्या बीतती होगी। वे कितना मेहनत करके तुम्हे पढ़ाते होगें कभी उनके बारे में भी तो तुम्हे सोचना चाहिए तुम्हें क्लास में अकेला क्यों रहना पड़ता है? क्लास के सभी टीचर दूसरे बच्चों को इतना क्यों मानतें हैं तुम्हे भी तो यह समझना होगा ना। कोई तुम्हारा हाथ पकड़ कर नहीं समझा सकता। माता-पिता भी आपको यह सब समझाते होंगे। सिर्फ वे ही है जो तुम्हारे हर गलतियों को माफ कर देते होगें। तब भी तुम्हें समझ नहीं आ रहा और कब तक तुम अपने माता-पिता के दिल को ठेस पहुंचाते रहोगे। इतनी सारी बातें एक साथ मैडम में मुझे कह सुनायी। मेरे पास मैडम के किसी भी सवाल का जवाब नहीं था। तभी मैडम में मुझे प्यार से समझाते हुए कहा बेटा मैं तो तुम्हारी क्लास टीचर हूँ मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही सोचूँगी। ठीक उसी तरह तुम्हारे माता - पिता भी तुम्हारे भले के लिए सोचते होंगे। तुम्हे भी यह सब समझना होगा बेटा... तुम आगे जाकर क्या करोगे अपने माताजी - पिताजी का नाम खराब करोगे या उनका नाम रौशन करोगे। बेटा अभी समय है तुम्हारे पास। तुम अपने आप को थोड़ा बदलने

की कोशिश करो। तभी तुम्हारा और तुम्हारे माता-पिता का मान सम्मान बढ़ेगा। तभी से मैं मैडम की हर बात को ध्यान में रखकर आगे के बारे में सोचने लगा। मैडम का दिया ज्ञान मेरे मन मंदिर में इस तरह बस गया है कि वह अब बाहर ही नहीं निकल पा रहा। यही मेरे जीवन का सबसे बड़ा मोड़ था। मैंने मैडम को वादा किया है कि आपके हर सवाल के जवाब को मैं ढेकर अपना, अपने स्कूल का और अपने माताजी-पिताजी का नाम रौशन करूँगा। तभी से मैने अपने आप को बदलने के लिए कसम खा ली और यह ठान लिया कि मैं अपनी मंजिल की तलाश खुद ही करूँगा। इसी तरह बच्चे ने अपने जीवन के संघर्षों से लड़ते हुए और किताबों को अपना साथी बनाते हुए अपने जीवन का नया अध्याय लिखना शुरू किया। बच्चे पर उसकी मैडम की बातों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि अब वह शरारती बच्चा धीरे- धीरे गंभीर और मेधावी बनने लगा। उसके स्कूल के सभी शिक्षक, प्रधानाध्यापक और माता पिता भी बच्चे के अंदर हुए सकारात्मक परिवर्तन से बहुत खुश हुए। बच्चे के अंदर निरंतर सकारात्मक बदलाव होते गए। धीरे - धीरे बच्चा बड़ा हो गया और अंतत: अपनी प्रतिभा और कठीन परिश्रम के दम पर गूगल जैसी बड़ी कंपनी में लगभग 1.5 करोड़ के आरंभिक पैकेज पर काम करना शुरु किया। मानों उसे अब मंजिल मिल गई हो। उसने अपने जीवन का नया अध्याय शुरू कर लिया है फिर भी उसका मन संतुष्ट नहीं था उसके मन में कुछ प्रश्न चल रहें थे क्या मैंने जो संघर्ष किया वह यहीं तक का था या कुछ और भी है? क्या मेरे जीवन का यही लक्ष्य है। यह सोच उसे कभी –कभी रात भर नींद नहीं आती। उसे लगा कि यह संघर्ष तो हमारे गाँव के हर बच्चे और बूढ़ों को करना पड़ता है। यह सब सोच कुछ समय पश्चात जब वह अपने गाँव आता है तो यही सब सवाल उसके मन को कहीं न कहीं खाए जा रही थी। तभी उसके मन में ख्याल आया क्यों न मैं अपने गॉव के लिए कुछ ऐसा करूँ जिससे गाँव के हर लोग शिक्षित हो सके और उन्हें बाहर जाकर पढ़ने के बारे में नहीं सोचना पड़े। अपने भी गाँव में हर वो सुविधा हो जिससे गाँव के हर बच्चे को अच्छा अवसर मिल सके। हर बच्चे को ऐसा शिक्षक मिले जो उसे ऊंगली पकड़ कर चलना सिखाए, बच्चों को समझे और उन्हें सही मार्ग पर अग्रसर करे। ठीक वैसे जैसे बचपन में मेरी मैडम ने मुझे सिखाया था। यह सब सोच उसने अपने गाँव में स्कूल और अस्पताल बनाने का निश्चय किया और उसमें सफल होकर उसने अपने स्कूल का अपने गाँव का अपने माता–पिता और अपनी मैडम का नाम रौशन कर समाज में अपना परचम लहराया।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

शिकार की अनोखी कहानी

दुमका जिला में एक शिकरिपारा गाँव है, इस गाँव के चारो और घने जंगल है। ये गाँव पहले अपनी रहस्यमयी कहानियों के लिए प्रसिद्ध था । इसगाँवकेलोगजंगलमेंहोनेवालीअजीबघटनाओंऔरखतरनाकजीवोंकीकहानियाँसुनते-सुनतेबड़ेहुएथे।इनकहानियोंमें से एक कहानी आज आप लोगों को सुनाने जा रहा हूँ। एक खतरनाक शेर की कहानी जिसकी आँखोंमें एक अजीब सीचमकथी और जिसके पंजे बहुतही ताकतवरथे। कहाजाताथाकिशेर जंगल के गहरे कोनों में छिपा हुआथा और उसकी खोज में कई शिकारी अपनी जान गंवाचुकेथे।

इस रहस्यमय शेर को पकड़ने का साहस दिखाने वाला एक शिकारियों का समूह गाँव में आया। इन शिकारियों मेंसबसे प्रमुखथे अर्जुन, जिनकी शिकार की कहानियाँ दूर-दूरतक फैली हुईथीं। अर्जुन एककुशल शिकारी थे, जिनका हौसला और साहस अभूतपूर्वथा। उन्होंने निर्णय लिया कि वे शेर को पकड़ने के लिए जंगल की गहराई में जाएंगे। अर्जुन के साथ उनकी टीम में उनकी पत्नी प्रोमिला, उनका प्यारा दोस्त और साथी शिकारी गोपाल, और एक अनुभवी गाइड राजन शामिलथे।
अर्जुन और उसकी टीम ने अपनी यात्रा की तैयारी पूरी की। उन्होंने अपने साथ सभी आवश्यक उपकरण, जैसेकि बंदूकें, फर्स्ट ऐड किट, औरखाना-पीनालिया।वेसभीतैयारहोकरएकसुबहजंगलकीओररवानाहोगए।जंगलमेंप्रवेशकरतेही,
अर्जुनऔरउसकीटीमनेमहसूसकियाकिवेएकअद्भुतऔरखतरनाकयात्रापरनिकलचुकेहैं।
जंगलकीघनीझाड़ियोंऔरऊँचेपेड़ोंकेबीचसेगुजरतेहुए,
अर्जुनऔरउसकीटीमनेमहसूसकियाकियहाँकावातावरणबहुतहीअलगऔररहस्यमयथा।पेड़ोंकीशाखाओंसेलटकेहुएझूलतेहुए औरघनेकालेबादलनेजंगलकोऔरभीभयावहबनादियाथा।अर्जुननेअपनीटीमकोआदेशदियाकिवेबहुतहीसावधानरहेंऔरकिसी भीअजीबगतितिविधिकेप्रतिसजगरहें।

पहलेदिनकेअंतमें,

टीमएकपुरानेऔरजर्जरकैंपमेंरुकी।कैंपकेपासकुछपुरानेसामानऔरलकड़ीकेढेरपड़ेहुएथे।अर्जुननेमहसूसकियाकियेशायद शेरकेशिकारियोंकेनिशानहोसकतेहैं।उन्होंनेकैंपकेचारोंओरध्यानसेदेखाऔरपायाकिकुछअजीबसेनिशानपेड़ोंपरबनेहुएथे।यहनिशा नउन्हेंशेरकीओरइशाराकररहेथे।अर्जुननेअपनीटीमकोइननिशानोंकाअनुसरणकरनेकानिर्देशदियाऔरवेजंगलकीगहराईमेंआगेबढ़े। अर्जुनऔरउनकीटीमनेजंगलकेएकहिस्सेमेंएकपुरानीगुफादेखी।गुफाकेअंदर, उन्हें एक प्राचीन चित्र णमिला, जिसमें शेर के बारे में कुछ संकेतथे।

चित्रणमेंएकशेरकोजंगलकीगहराईमेंएकप्राचीनखजानेकीरक्षाकरतेहुएदिखायागयाथा।अर्जुननेमहसूसकियाकिय हचित्रणशायदशेरकेशिकारकीयोजनाकाहिस्साहोसकताहै।उन्होंनेचित्रणकोअपनीटीमकेसाथसाझाकियाऔरअगलेदिनके लिएयोजनाबनाई।

अर्जुनऔरउसकीटीमनेगुफाकेभीतरएकसुरंगभीदेखा, जिसमें एक अजीब सीगंध और ठंडी हवा आरही थी। अर्जुन ने सुरंग के भीतर प्रवेश किया और पाया कि वहाँ एक पुराना संदूक रखा हुआथा। संदूक को खोलने पर उसमें कुछ प्राचीन कागजात और एक रहस्यमय पत्थर मिला। कागजात में लिखा थाकि शेरको पकड़ने के लिए जंगल के पाँच रहस्यों को सुलझाना होगा। पत्थर पर एकगुप्त कोड बना हुआथा,जिसे सुलझाने पर शेर की उपस्थिति का संकेत मिल सकताथा।

अर्जुनऔरउनकीटीमनेजंगलकेपाँचरहस्योंकीखोजशुरूकी।पहलारहस्यएकप्राचीनमंदिरकेभीतरथा।मंदिरकेअंदरएकपुरा नापत्थरथा, जिस पर एक जटिल कोड बना हुआथा। अर्जुन ने कोड को हलकिया और पाया कि यह कोड शेर के गुप्त ठिकाने का संकेत था। दूसरे रहस्यकी खोज में, वे एक गुफा में पहुँचे, जहाँ एक प्राचीन चित्रण छुपा हुआथा। चित्रण में शेरके शिकार की योजना और उसके पैटर्न के बारे में जानकारी थी।

तीसरारहस्यएकरहस्यमयझीलकेकिनारेथा।झीलकेपानीमेंएकचमकदारमछलीरहतीथी, जिसेपकड़नेसेएकमहत्वपूर्णसुरागमिला।चौथा रहस्यएकगहरेजंगलकेभीतरथा, जहाँएकगुफामेंएकपुरानाखजानाछुपाहुआथा, जोशेरकीताकतकास्रोतहोसकताथा।

औरआखिरकार, पाँचवाँरहस्यएकऊँचाईपरस्थितप्राचीनअवलोकनस्थलमेंथा, जहाँसेशेरकीगतिविधियोंकोस्पष्टरूपसेदेखाजासकताथा।अर्जुनऔरउसकीटीमनेइनसभीरहस्योंकोसुलझायाऔरशेरकेठिकानेकीजान कारीप्राप्तकी।

एकदिन, अर्जुनऔरउसकीटीमनेशेरकीखोजमेंगहरेजंगलकीओरकदमबढ़ाया।वेएकखुलेमैदानमेंपहुँचे, जहाँशेरअर्जुन के स्वागत केलिएतैयारथा।अर्जुननेअपनीपूरीतैयारीकीऔरअपनीटीमकोनिर्देशदिए।अर्जुननेअपनी आँखोंऔरकानोंकोपूरीतरहसेसजगरखा।

अचानक,

एकतेजआवाजसुनाईदीऔरशेरसामनेआया।शेरकीआँखोंमेंएकचमकथीऔरउसकीमांसलपंजेबहुतहीताकतवरथे।अर्जुननेअपनीबंदूकतै यारकीऔरशेरकीओरनिशानासाधा।लेकिनशेरबहुतहीतेजऔरचालाकथा।उसनेअर्जुनकीबंदूक

गरजनेसेपहलेहीकूदकरहमलाकिया।अर्जुननेअपनीपूरीताकतलगाईऔरशेरकोपकड़नेमेंसफलहोगया।उसने अपने साहस और धैर्य से शेर को काबू में किया। उसने शेरकी आदतों और उसके व्यवहार को समझा और पाया कि वह वास्तव में एक साधारण शेर नहीं, बल्कि एक प्राचीन आत्मा का अवतार था, जो जंगल की सुरक्षा कर रहाथा। अर्जुन ने शेर के प्रति सम्मान व्यक्त किया और उसे जंगल के अन्य जीवों की रक्षा के लिए छोड़ दिया।

अर्जुनऔरउसकीटीमनेशेरकोजंगलकेएकसुरक्षितहिस्सेमेंछोड़दियाऔरगाँववापसलौटे।गाँवकेलोगउनकीसाहसिकताऔरखोजकेलिएउ नकीसराहनाकरनेलगे।अर्जुननेशेरकीकहानीकोसबकेसाथसाझाकियाऔरजंगलकेरहस्योंकोउजागरकिया।उसकीसाहसिकताऔरखो जीप्रवृत्तिनेउसेएकमहानशिकारीबनादिया, औरउसकीकहानीहमेशाकेलिएलोगोंकेदिलोंमेंछपगई।

अर्जुननेजंगलमेंबिताएअपनेअनुभवोंकोएककिताबमेंलिखा,

जिसेपढ़करलोगप्रेरितहुएऔरजंगलकीगहराईमेंछिपेरहस्योंकोजाननेकीइच्छाजताई।अर्जुनकीसाहसिकतानेउसेएकसच्चाखोजकर्ताब नादिया।औरउसकीकहानीनेकईलोगोंकोजंगलकीसुंदरताऔरउसकीसुरक्षाकेप्रतिजागरूककिया।अर्जुनऔरउसकीटीमकीयात्रानेसाबित कियाकिसाहस, धैर्यऔरसम्मानकेसाथ, किसीभीचुनौतीकासामनाकियाजासकताहै।

सुभाष चंद्र मंडल
वरिष्ठ लेखाकार

भ्रमण : स्टेच्यू ऑफ यूनिटी

मैं पहले देश भ्रमण या कहीं अनावश्यक यात्रा नहीं करना चाहता था क्योंकि बचपन और वयस्कता का समय उस छोटे-से गाँव में और उसके बाद छोटे-से शहर में बीताया। कभी पुस्तकों में पढ़ता था और आज पास में जाकर घुमने का, देखने का मौका मिलता है। जबसे राजभाषा अधिकारी बना, तबसे विमान द्वारा देश भ्रमण का सिलसिला जारी है। सेवाकाल में बहुत कुछ घूमने, देखने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो रहा है। ऐसा ही एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी भ्रमण का। जब हमारे देश के प्रधान मंत्री जी विश्व की सबसे ऊंची प्रतीमा, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का अनावरण कर रहे थे, तो सोचा, विश्व की सबसे ऊंची प्रतीमा को पास में जाकर देखना बहुत हीं आश्चर्यजनक होगा क्योंकि स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण में जिस स्थान का चयन किया गया है, वह वास्तव में प्राकृतिक दृष्टि से सुन्दरतम है। वेस्टर्न घाट की ऊंची पहाड़ियों के बीच, नर्मदा नदी के कल-कल बहते हुए जल, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी और डैम के बीच में नदी के किनारे एकता नगर पार्क के आस-पास का वातावरण मंत्रमुग्ध कर देती है। सोचा, इन सारी यादों को, सुनहरे पल को, अपने कार्यालय की स्मारिका के 29वें अंक में लेखापित कर दूँ ताकि अपने निजी पुस्तक संग्रह के अलमारी में एक यादगारी बन जाए। वर्ष 2022 के सितम्बर माह में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन गृह मंत्री जी की अध्यक्षता में होना था। देशभर के कोने–कोने से हिंदी प्रेमी, हिंदी सेवक, हिंदी के विद्वान कवि, मंत्री एवं संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य, मुख्यमंत्री, राज्यपाल एवं आई.ए.एस./आई.पी.एस. सम्मेलन में भाग लेने वाले थे। राजभाषा सम्मेलन में भाग लेने के लिए मुझे भी मौका मिला।

दो कार्यालय के राजभाषा एवं राजभाषा से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों की 6-7 संख्या में एक समूह बना। सभी लोग अपने –अपने स्तर से हवाई टिकट बनाए। टिकट इस तरह बना/यात्रा इस तरह शुरु हुई, मानों मनोरंजन की शुरुआत पटना एयरपोर्ट से ही हो गई। यात्रा यदि समूह में हो तो, यात्रा, यात्रा नहीं रह जाता, मनोरंजन में बदल जाता है। सभी लोग टिकट खुद बनाए फिर भी, सभी लोगों का टिकट एक हीं प्लेन में बुक हो गया। मेरे लिए सब कुछ अनोखा, नया ही था क्योंकि मैंने इससे पहले न कभी समंदर देखा था, न हीं कभी प्लेन यात्रा किया था। मुझे तो प्लेन में चढ़ने में थोड़ा डर भी लग रहा था। फिर भी खुशी इस बात की थी कि मैं पहली बार समंदर, स्टेच्यू देखूंगा एवं प्लेन की यात्रा करुंगा। मैं कहां शुद्ध देहात का रहने वाला व्यक्ति को पहली बार यदि प्लेन यात्रा करने का मौका मिलेगा तो, उसके लिए आश्चर्य तो होगा हीं। इसलिए, तो सोचा कि अपने सुनहरे पल को /सुनहरे मौके को स्मारिका मे हीं लेखापित कर दूं ताकि मेरे लिए एक यादगारी बन जाए। सच कहा जाए तो मेरे लिए सब कुछ नया/अनोखा था।

सभी लोग पटना से दिल्ली और दिल्ली से सूरत पहुंचे। होटल वाले को भी पता था कि इस बार राजभाषा वाले को छोड़ना नहीं है। वो भी अपने होटल का रेट दो गुना, तीन गुना किए हुए थे। फिर भी, सभी लोग किसी तरह एडजस्ट हुए। दो दिवसीय सम्मेलन में कुछ समय घुमने का भी मिल जाता है। सम्मेलन से पहले सूरत शहर, डोमास बीच आदि घुमा। सुनता था सूरत 'हब ऑफ सिल्क साड़ी' है। है तो सही परन्तु, एक भी साड़ी का खुदरा विक्रेता नहीं। वहां केवल साड़ी

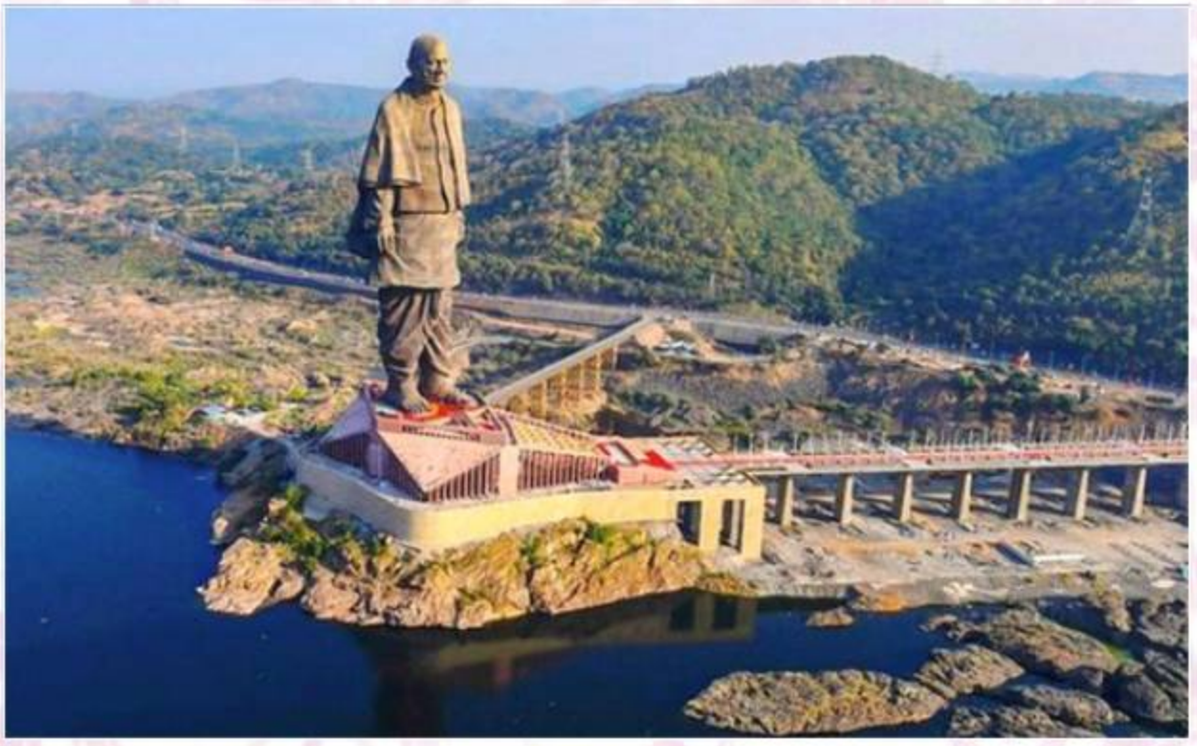

के थोक विक्रेता ही हैं। निराशा ही हाथ लगी। घर से एक-दो साड़ी क्रय करने का आदेश मिल चुका था। इसलिए, सूरत एयरपोर्ट पर क्रय किया। वैसे तो, गूगल सर्च इंजन द्वारा घर बैठे-बैठे सभी चीजों के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है। परन्तु, किसी अनूठा दृश्य को पास जाकर दर्शन करने, घूमने का अनुभव ही कुछ अलग- सा होता है। सम्मेलन समाप्ति के अगले दिन स्टेच्यू भ्रमण का बस से जाने का प्लान बना क्योंकि बस यात्रा से किसी नए जगह के बारे में देखने का अच्छा मौका मिल जाता है। वैसे स्टेच्यू ऑफ यूनिटी जाने के लिए सूरत, अहमदाबाद या बडोदरा एयरपोर्ट से जाया जा सकता है। बस से यात्रा करते हुए गुजरात के गाँव, शहरों, खेत-खलिहानों, वेस्टर्न घाट की पहाड़ियों की खूबसूरती आदि प्राकृतिक सुन्दरता देखते हुए यात्रा पूरी की। सूरत से केबड़िया के लिए बस यात्रा लगभग चार घंटे में पूरी हुई। केबड़िया गुजरात राज्य के नर्मदा जिले में स्थित एक नगर है। यह नगर नर्मदा नदी के किनारे अवस्थित है।

उनके जीवन से जुड़े अनेक ऐतिहासिक चित्रों का, भारत में एकीकृत किए गए सभी राज्यों के राजाओं के साथ सरदार पटेल जी का चित्र आदि देख कर हमें स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाती है। संग्रहालय में हमेशा 'वैष्णव जन ते तेने कहिए पीर पराई जाने रे' आदि अन्य देशभक्ति गाने की धुन हमेशा ही बजती रहती है। संग्रहालय में स्टेच्यू के जैसा छोटा स्टेच्यू भी बना है जिसके पास हम सभी लोग बारी -बारी से बैठकर फोटो खिंचवाए। स्टेच्यू के अंदर स्टेच्यू के शोल्डरतक जाने एवं घुमने के लिए लिफ्ट बना है, जिसमें स्टेच्यू में वास्तविक फ्लोर नहीं है परन्तु, लगभग 50 तल तक के बराबर शोल्डर तक जाने सरदार सरोवर डैम, नर्मदा नदी एवं वेस्टर्न घाट की पहाड़ियों का सुन्दर दृश्य देखते ही बनता है। स्टेच्यू के शोल्डर पर घुमने के बाद वहां भी हमलोगों ने फोटो खींचने –खिंचवाने का कार्य किया।

- सभी लोग बारी-बारी से अलग-अलग स्टाईल में फोटो खींचवाने के कारण समूह के ही अच्छे मोबाईल वाले फोटोग्राफर खीझने लगे। फिर भी, किसी तरह सभी लोगों का फोटो खींचवाया गया। शोल्डर पर से पहाड़ों, नदी, पार्क एवं डैम का दृश्य देखा जा सकता है। डैम का दृश्य बड़ा ही अच्छा लगता है। साथ हीं, डैम के पहले इकट्ठा भरा हुआ पानी का दृश्य देखते ही बनता है। स्टेच्यू घुमने के बाद बारी आई, खाने-पीने की क्योंकि घूमते –घूमते थकावट हो गई थी एवं भूख लगी हुई थी। इसके बाद हमलोग पहले रेस्टोरेन्ट गए। सभी लोग ने अपनी –अपनी पसंद के जंक फूड का लुत्फ उठाया। स्टेच्यू के कुछ ही दूरी पर एकता नगर पार्क है। अब बारी आई पार्क घूमने की। पार्क में घूमते –घूमते लगभग शाम होने ही वाली थी। सभी स्पॉट पर घुमा जाए तो लगभग पूरे दिन का समय लग सकता है। पार्क के अंतिम छोड़ से डैम का दृश्य पास से देखा जा सकता है। पार्क घूमते –घूमते शाम हो चुकी थी। उसी दिन सूरत वापस जाना था। एकता नगर रेलवे स्टेशन से सूरत के लिए ट्रेन पकड़ा। इस तरह जीवन के एक सुनहरे पल का आनंद लिया।

अरुण कुमार
हिंदी अधिकारी

टूटी चप्पल

अतीत... जो समय बीत गया, गुजर गया। अतीत मतलब पुरानी यादों की एक अविरल -निरंतर चलती किसी नदी की धारा सा सिलसिला। कुछ यादें हमें खुशी से रोमांचित कर देती है तो कुछ दुख के अथाह सागर में गोते लगाने को विवश पर मैं आज यहाँ अपनी अतीत के उन पन्नों को पलटने जा रहा हूँ जिस पर समय रूपी धूल अपना घर बना चुकी है। आज अपनी उन यादों के सिलसिले को सिल-सिलेवार रूप से रखने जा रहा हूँ जो हमेशा से ही मुझे अंदर तक झकझोर देती है और साथ-ही-साथ प्रेरणा से ओतप्रोत भी कर देती है।

श्रावण मास यूँ तो हमारे आराध्य देवों के देव महादेव बाबा भोलेनाथ को समर्पित है परंतु सावन मास को और भी पवित्र बनाते है भगवान शिव शंकर के अटूट काँवरिया भक्त जो इस पूरे महीने प्रतिदिन लाखों की संख्या में कांधे पर बाँस से बने सजे-सजाये काँवर लिये दिल में ईश्वर के प्रति असीम श्रद्धा लिये अजगैबीधाम (सुल्तानगंज,बिहार) से गंगाजल लेकर बाबा वैधनाथ (देवधर,झारखंड) को जल अर्पित करने के लिये लगभग 100 किलोमीटर की पैदल यात्रा पर निकल पड़ते हैं। अजगैबीधाम बिहार के सुल्तानगंज में अविस्थत है और बाबा वैधनाथ झारखंड के देवधर में और इन्हीं दो मंदिरों को जोड़ने वाली पावन सड़क (काँवरिया पथ) जिससे होकर लाखों श्रदालु गुजरते हैं, के बीच मेरा छोटा सा गाँव है। सुल्तानगंज से करीब 12 किलोमीटर दूर मेरा गाँव जो श्रावण मास में नारंगी रंग के वस्त्र पहने काँवरिया से भर जाता है। श्रावण मास में गाँव के स्वरूप का एक-एक वर्णन करने लगूँ तो मैं अपनी बात जो आपको बताना चाहता हूँ नहीं रख पाउँगा अपने गाँव के प्रसंग को किसी और रचना के लिये अभी विराम देता हूँ।

ऐसे ही पावन गाँव के ग्रामीण परिवेश में छह सदस्यों के एक छोटे सी प्यारे से परिवार में मैं पला-बढ़ा। माँ, पिताजी और हम चार भाई यही हमारी दुनिया थी। मैं घर का सबसे लाडला था इसलिये नहीं कि मैं मासूम था अपितु इसलिये की मैं चारों भाई में सबसे छोटा था। हमलोग हँसी-खुशी अपने दिन गुजार रहे थे। पापा के पास एक ट्रक था और वो खुद चलाते भी थे। सबकुछ अच्छा चल रहा था मनमुताबिक सा। समय गुजरता गया हम सब की उम्र भी उस रफ्तार में बढ़ रही थी और पापा के व्यापार में बढ़ोतरी के कारण हमारे ट्रक की संख्या भी एक से बढ़के तीन हो गई।

समय किसी का अपना सगा नहीं होता और ना ही उसे कोई आजतक रोक पाया है पर विचित्र बात ये है कि समय को अपना समझने की भूल और समय को अपनी मुट्ठी में कसने की कोशिश समय-समय पर लोग करते ही रहते हैं। जब सबकुछ व्यक्ति के अनुकूल चलता है तो लगने लगता है कि समय की लगाम उसके पास है, वो जिधर चाहे जब चाहे समय की दिशा को मोड़ सकता है, उसे नियंत्रित कर सकता है, उसे अपनी मुट्ठी में कैद कर सकता है परंतु ये पूर्ण असत्य है। समय के करवट बदलने की रफ्तार गिरगिट के रंग बदलने की चाल से भी काफी अधिक होती है और समय की ऐसी ही एक करवट ने हमारे पूरे परिवार को विषम परिस्थितियों में लाकर खड़ा कर दिया। व्यापार में मंदी आई, आमदनी में कमी आई और कमी आई ट्रकों की संख्या में जो साल दर साल घटती चली गयी तीन, दो, एक और अंततः एक भी नहीं। परिवार कर्ज के बोझ तले दबता चला गया, यहाँ तक कि पापा के द्वारा खरीदी गई जमीन के बिक्री से आये पैसे, माँ के सोने-चाँदी के गहने भी इस बोझ के दबाव से परिवार को उभार नहीं पाए। पापा जो कभी अपने ट्रकों के मालिक थे अब जीवनयापन हेतु दूसरे की गाड़ी चलाने लगे सभी को समय के साथ समझौता करना ही पड़ता है। हालात बद से बदतर होते जा रहे थे, आमदनी का एक मोटा हिस्सा कर्ज लिये गये रकम के ब्याज के रूप में खत्म हो जाता था। इतना होने के बावजूद भी हम भाईयों ने पढ़ाई-लिखाई में कोई कसर ना छोड़ी। जब कभी भी उन दिनों को याद करता हूँ शरीर सिहर जाता है। बदहाली का ये आलम था कि चावल के टूटे दाने जिसे देहाती ग्रामीण भाषा में खुदी बोलते हैं वो तक खाना पड़ा क्योंकि वो आधे से भी कम कीमत में मिल जाते थे। कभी दाल तो सब्जी नहीं और कभी सब्जी तो दाल नहीं।

गाँव देहातों में बड़े से एल्युमिनियम या स्टील के बक्से को ट्रंक बोलते हैं पतली चादर से बनी बड़ी परंतु बहुत हल्की होती है। उसी में माँ, पापा के द्वारा दिये गये चंद रूपयों को रखा करती थी। एक शाम रौशनी करने के लिये सलाई खत्म हो गई। मात्र पच्चास पैसे की होती थी माचिस उस समय और उतने भी पैसे हमलोगों के पास नहीं थे। एक-एक कर ट्रंक के सारे कपड़े इस उम्मीद में हमने माँ के साथ मिलकर निकाल दिये ताकि एक सिक्का मिल जाए और जिससे माचिस खरीदी जा सके पर किस्मत ऐसी कि वो भी एस सिक्का मुनासिब नहीं हुआ।

उस समय मैं प्रतिदिन सुबह 4-5 बजे के बीच गाँव की घनी बस्ती से बाहर उसी काँवरिया पथ की ओर टहलने जाया करता था। ऐसे तो सावन मास में वो नहर से सटे मिट्टी के रास्ते काँवरिया श्रद्धालु से भरे रहते थे परंतु बाँकी बचे साल के महीनों में ग्रामीण वासी उस पथ पर सुबह-शाम टहलने के लिये जाया करते थे। यह सिलसिला अभी भी बरकरार है। उस सुबह जब मैं उस कच्चे रास्ते पर चल रहा था, अद्भुत शांति की अनुभूति हो रही थी, लालिमा लिये सूर्य की किरणें धीरे-धीरे मानों अंगड़ाईयाँ लेती हुई निकल रही थी। रास्ते के दोनों तरफ लगे घने पेड़ों से जब हवा टकराती तो पत्तियों की कड़कड़ाहट की आवाज सुनाई दे रही थी। ठंडी हवा के झोंके हमारे कानों से होकर सनसनाहट करते हुए गुजर रही थी। पक्षी चह-चहा रहे थे। दूर बैलगाड़ी में बैलों के गले में बँधी घंटी कानों को सुकून दे रही थी। कुल मिलाकर बड़ा ही मनोरम एवं विहंगम नजारा था और मैं इस नजारे का आभास किये अपनी ही धुन में चलता चला जा रहा था कि तभी मेरी नजर एक चप्पल पर पड़ी जो बिल्कुल सही अवस्था में थी। देखकर मैं ठिठक गया मेरे कदम यकायक रूक गये और नजर इधर-उधर उस चप्पल की दूसरी जोड़ी को तलाशने लगी। मेरी तलाश नहर के बीचों बीच एक गड्ढे पर जाकर खत्म हुई। मैं तुरंत नहर में उतरा जो उस समय बिल्कुल सूखी थी पास गया तो दूसरी चप्पल उल्टी पड़ी हुई थी। मैंने पैर से उसे सीधा किया तो थोड़ा निराश हुआ उसका फीता टूट चुका था। शायद यही कारण रहा होगा कि किसी महिला ने उसे फेंक दिया था। मतलब साफ था कि किसी ने अकारण यूँ ही नहीं फेंक दिया था। हाँलाकि वो औरतों के इस्तेमाल वाली चप्पल थी पर मेरे मन में कुछ चल रहा था मैंने वहीं पास झाड़ी में दोनों चप्पलें छिपा दी। वापस घर आते समय रास्ते में सोच रहा था माँ खाली पैर घर में रहती हैं पैसों के अभाव के कारण अपनी जरूरत की चीजों को भी जरूरी नहीं समझती है। अगर माँ इजाजत दे दे तो रूपये-दो रूपये में मोची से चप्पल की मरम्मत करा दूँगा जो माँ के उपयोग में आ सकता था। घर आया और सर्वप्रथम अपनी माँ को सारा वृतांत बताया, मैं बोलते-बोलते रो पड़ा और माँ की भी आँखें भर आई। उन्होंने गले से लगाया और बोली एक दिन सब ठीक हो जायेगा और धीरे से बोली कल चप्पल लेते आना।

एक वो दिन था और एक आज का दिन है कभी रेलवे कभी बिहार सचिवालय तो कभी स्टाफ सेलेक्शन में कई पदों पर देश के विभिन्न शहरों में नौकरी करते हुये आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा के कारण एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी नौकरी करते हुये वर्तमान में तीनों बड़े भाई रेलवे में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं और मैं आप सबके साथ यहाँ। अब भी माँ से इन घटनाओं पर किस्सों पर समय-समय पर चर्चा होती है और अब भी आँखों में आँसू भर आते हैं पर ये आँसू हमें और अच्छा करने की, हमेशा खुश रहने की और दूसरों को अपने बर्ताव से, अपने व्यवहार से हमेशा खुश रखने की प्रेरणा देती है।

कौशल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

वन्दे मातरम्

कार्यालय में 78वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

78वें स्वतंत्रता दिवसके अवसर पर उपस्थित कार्यालय प्रमुख

मंदिरों का गांव मलूटी

भारत में अनेक मंदिर समूह हैं। विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर समूह से लेकर अपेक्षाकृत कम चर्चित उत्तराखंड के गुप्तकाशी स्थित नारायण-कोटि मंदिर समूह तकालेकिन मलूटी झारखण्ड राज्यके दुमका जिले में शिकारीपाड़ा के निकट एक छोटा सा कस्बा है। यहाँ 72 पुराने मंदिर हैं जो बज बसन्त वंश के राज्यकाल में बने थे। स्थानीय जनश्रुतियों के मुताबिक राजा बाज बसंत राय ने 108 मंदिर और इतने ही तालाबों का निर्माण करवाया था। इसी वंश की कुलदेवी के रूप में माता मौलाक्षी का एक मंदिर भी यहां बना हुआ है। मलूटी के प्राचीन मंदिरों में वही एक मंदिर है जिसमें आज भी पूजा के लिए श्रद्धालु आते हैं। इन मन्दिरों में रामायण तथा महाभारत और अन्य हिन्दू ग्रन्थों की विविध कथाओं के दृश्यों का चित्रण है। मलूटी एक ऐसा गांव है, जहां अभी भी जितने घर हैं उनसे ज्यादा मंदिर हैं। इस तरह से यह गांव मंदिरों के गांव के नाम से जाना जाता है। बहरहाल, कला की दृष्टि से देखा जाए तो मलूटी के शिव मंदिरों के बाह्य भाग में लगे टेराकोटा पैनल उन्हें आम मंदिरों या मंदिर समूहों से अलग करता है।

मलूटी के मंदिरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके पार्श्व भाग टेराकोटा पैनल (फलक) से अलंकृत हैं। माना जाता है कि कभी यहां इन मंदिरों की संख्या 100 से ज्यादा थी, जिनमें 108 सिर्फ शिवमंदिर थे। वर्तमान में यह संख्या लगभग 72 के करीब हैं और 65 तालाब बचे हैं। उनमें कुछ थोड़ी अच्छी अवस्था में हैं, तो कुछ जीर्ण-शीर्ण। बाकी 36 मंदिरों का कोई नामोंनिशां नहीं रह गया है। साथ ही देवी मौलाक्षी, काली, मनसा एवं दुर्गा के भी मंदिर हैं। वर्तमान समय में भी कुछ नये मंदिर बनाये गये हैं जिसमें स्थानीय ग्रामीणों द्वारा नियमित पूजा-अर्चना होती है। यह गांव बंगाल के सिद्ध तांत्रिक समझे जाने वाले स्वामी बामदेव यानी बामाखेपा की साधना स्थली भी रहा है। वैसे राजा बाज बसंत से पहले मलूटी के इतिहास के बारे में जो जानकारी मिलती है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह स्थान पहले से ही तंत्र-पूजा का केन्द्र रहा होगा।

मलूटी मंदिरों के निर्माण में ईट और सूर्खी-चूने के मिश्रण का प्रयोग किया गया है, वहीं जिन टेराकोटा पैनलों की बात की जा रही हैं, उसे देखकर सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ईटों के सांचे की तरह ही इन टेराकोटा पैनलों के लिए भी सांचे का प्रयोग किया गया है। उनके पैनलों में न केवल विभिन्न प्रकार के अलंकरण थे, बल्कि उनमें रामायण और महाभारत के प्रसंगों व देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर वध के प्रसंगों का भी चित्रण दिखता है। उनकी एकरूपता ही यह स्पष्ट करती है कि प्रत्येक पैनल को अलग-अलग डिजाइन करने की बजाये उन्हें सांचे की मदद से बनाया गया है। पैनल में दैनिक क्रियाकलापों या आम जनजीवन का चित्रण भी मिलता है। मसलन दुल्हन को डोली में ले जाते कहार, सैनिकों संग अश्वारोही योद्धा आदि।

वैसे मंदिरों में टेराकोटा पैनल के प्रयोग का पहला उदाहरण हमें ऐतिहासिक भीतरगांव मंदिर, कानपुर में मिलता है। लेकिन, बड़ी संख्या में उनके प्रयोग का प्रमाण पालकालीन राजाओं (नवीं से बारहवीं सदी) के दौर में सामने आते हैं जिसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण विक्रमशिला महाविहार, अंतीचक, भागलपुर, सोमपुरा महाविहार, पहाड़पुर और ढाका (बांग्लादेश) से मिलता है।

दुमका जिले के शिकारीपाड़ा प्रखंड क्षेत्र में श्रृंखलाबद्ध मंदिरों के गांव मलूटी को गुप्त काशी के नाम से भी जाना जाता है। जहां हर दिन भारी तादाद में मां मौलिक्षा के भक्त और पर्यटक दर्शन के लिए आते हैं। जबकि हर दिन झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल सहित अन्य राज्यों से हर साल भारी तादाद में पर्यटक यहां पहुंचे है। पश्चिम बंगाल में वीरभूम जिले के रामपुरहाट के समीप तारापीठ में मां तारा के दर्शन के बाद महज 20 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित मंदिरों के गांव मलूटी में मां मौलिक्षा के दर्शन के साथ श्रृंखलाबद्ध टेराकोटा शैली से निर्मित ऐतिहासिक मंदिरों को देखने आते है। श्रद्धालु मलूटी में अवस्थित मां मौलिक्षा को मां तारा की बड़ी बहन के रूप में पूजा अर्चना करते हैं।

गांव में करीब 250 परिवार निवास करते हैं। हालांकि गांव पक्की सड़क से जुड़ा है लेकिन गांव तक नियमित रूप से कोई यात्री वाहन नहीं चलता है। ग्रामीणों के अनुसार गांव में 100 वर्ष पूर्व स्थापित मध्य विद्यालय और कुछ वर्ष पूर्व स्थापित प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय संचालित है। पूरे जिले में यह गांव सबसे अधिक पढ़े लिखे गांव के रूप में चिह्नित है। लेकिन रोजगार का कोई साधन नहीं रहने की वजह से यहां के शिक्षित युवक भी पत्थर क्रेशर और खदानों में या पश्चिम बंगाल के रामपुरहाट और उसके आसपास के इलाकों में मजदूरी करने को मजबूर हैं।

उचित देखरेख के अभाव में टेराकोटा शैली से बने मंदिरों के साथ उसकी कलाकृतियाँ भी नष्ट होती जा रही है। मलूटी गांव के चारों ओर भगवान शिव, दुर्गा, काली, धर्मराज, मनसा देवी, विष्णु सहित मां मौलिक्षा देवी का मुख्य मंदिर अवस्थित है। गांव के बाहरी भाग में दक्षिण की ओर स्थित मां मौलिक्षा देवी का मंदिर अति प्राचीन बताया जाता है। इसी आहाते में एक शिव मंदिर भी है। मंदिर के बाहर आकर्षक चित्रकारी में बंगला, संस्कृत तथा प्राकृत भाषा में मंदिरों के निर्माण के संबंध में जो कुछ लिखा गया है। उससे स्पष्ट होता है कि सन 1720 से इस गांव में मंदिरों का निर्माण शुरू हुआ जो 1845 तक निरंतर चलता रहा। राजा रखड़ चंद्र राय के समय में मंदिरों के निर्माण का सिलसिला शुरू हुआ। शिक्षाविदों और शोध कर्ताओं के अनुसार मलूटी के निष्कर राज के प्रथम राजा बाज बसंत राय के बंसज और धार्मिक

कार्यों में अटूट आस्था रखने वाले राजा राखड़ चंद्र राय के समय में मंदिरों के निर्माण का सिलसिला शुरू हुआ जिसे बाद में उनके वंशजों ने भी जारी रखा। बंगाल के वाला मंदिरों के अनुरूप मंदिरों का निर्माण समूह में है और लगभग 50 मंदिर इसी श्रेणी के है। छोटी-छोटी ईंटों से निर्मित इन मंदिरों की अधिकतम ऊंचाई 60 और न्यूनतम 15 फीट है। मंदिरों के मुख्य भाग में टेराकोटा शैली की आकर्षक चित्रकारी की गई है। इन चित्रों में राम रावण युद्ध, रामलीला, कृष्णलीला, राम के वन गमन, जटायु युद्ध, सीता हरण, वकासुर युद्ध का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। चित्र मिट्टी के पक्के बरतन के समान सांचे में ढाल कर बनाया गया है।

वहीं टेराकोटा शैली से निर्मित श्रृंखलाबद्ध मंदिरों की ऐतिहासिक धरोहर नष्ट होती जा रही है। झारखंड निर्माण के पूर्व से संताल परगना के प्रमुख दर्शनीय और पर्यटन स्थलों को टूरिस्ट सर्किट में जोड़कर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने का सपना अब तक साकार नहीं हो पा रहा है। हालांकि झारखंड सरकार 'मंदिरों के गांव मलूटी' को यूनेस्को के विश्व धरोहरों की सूची में शामिल कराने का प्रयास कर रही है, लेकिन अब तक इस कोशिश को सफलता नहीं मिल पाई है। इतना ही नहीं इसे ग्लोबल हेरिटेज फंड से संरक्षित किया गया है, जिसे दुनिया की 12 वीं और भारत में एक मात्र सबसे अधिक लुप्तप्राय होती विकसित सांस्कृतिक विरासत स्थलों के रूप में घोषित किया गया है।

2015 में गणतंत्र दिवस पर अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की मौजूदगी में दिल्ली में आयोजित समारोह में झारखंड की ओर से श्रृंखलाबद्ध मंदिरों के गांव मलूटी पर आधारित आकर्षक झांकी प्रस्तुत की गयी थी। इस आकर्षक झांकी की प्रस्तुति से पूरे देश में यह गांव अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। जिसे द्वितीय पुरस्कार भी मिला था। झारखंड और पश्चिम बंगाल की सीमा पर दुमका जिले में अवस्थित सैकड़ों साल पुराने 'मंदिरों के गांव-मलूटी' की एक झलक पाकर तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा भी अंचभित रह गए थे।

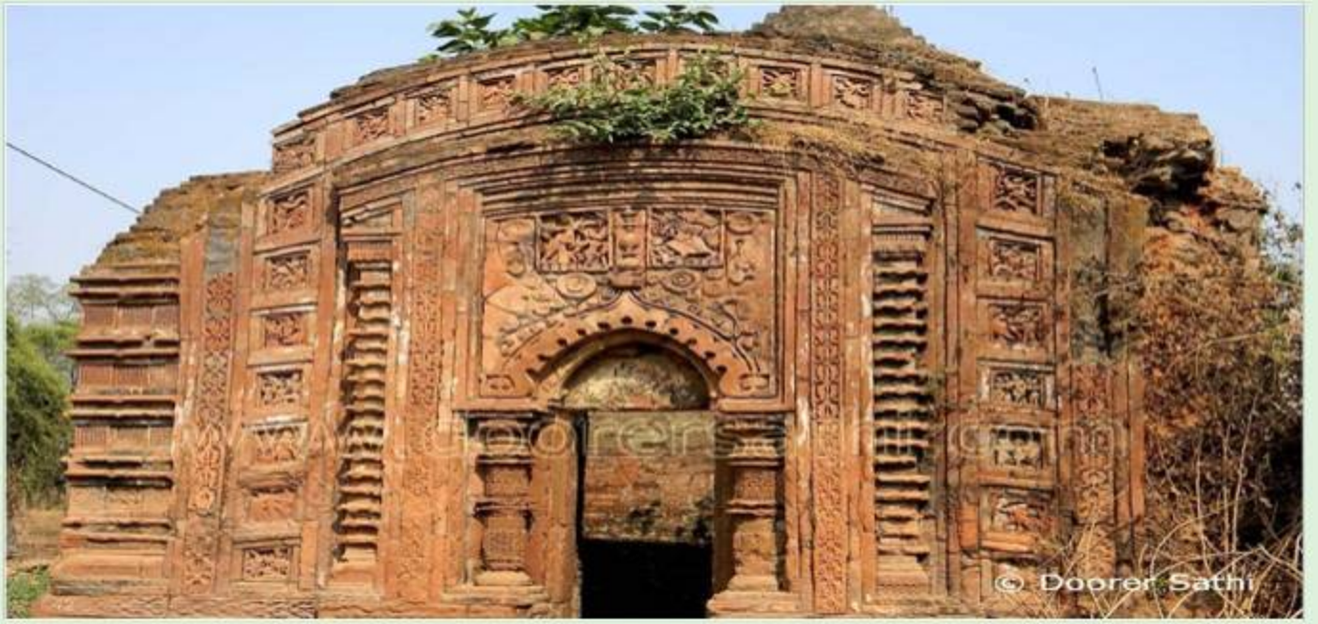

झारखंड गठन के बाद पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने मंदिरों के गांव मलूटी के साथ संतालपरगना के सभी प्रमुख दर्शनीय स्थलों को एक सर्किट से जोड़ कर विकसित करने का सपना देखा था। बाद में पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, रघुवर दास और शिबू सोरेन समेत कई मुख्यमंत्रियों ने भी अपने अपने कार्यकाल में इस दिशा में कदम बढ़ाया। श्रद्धालुओं और पर्यटकों को सभी सुविधा उपलब्ध करा कर मलूटी को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में प्रयास भी किए गए। बड़ी बड़ी घोषणाएं भी हुई, लेकिन झारखंड गठन के 22 वर्ष गुजर जाने के बाद भी मंदिरों का गांव मलूटी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित नहीं हो सका है

साल 2015 में राज्य सरकार की पहल पर केन्द्र सरकार ने मलूटी गांव में देख रेख के अभाव में जीर्ण होते 108 में शेष बचे 72 मंदिरों के मौलिक स्वरूप को बरकरार रखने के वास्ते प्रथम चरण में 20 मंदिरों के जीर्णोद्धार का दायित्व एक स्वयं सेवी संस्था को सौंपा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों 2 अक्टूबर 2015 में लगभग 13.67 करोड़ की लागत से इन नष्ट होते जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया। संस्था की ओर मंदिरों के मूल रूप को यथावत बनाये रखने के उद्देश्य से इसके जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया था। लेकिन जिस संस्था ने करीब 20 मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य किया गया उस पर सवालिया निशान लग गये और ग्रामीणों के साथ शोध करने वाले शोधार्थियों ने विरोध जताते हुए इसपर नाराजगी जाहिर करने लगे। लोगों के विरोध को देखते हुए संस्था ने कार्य बंद कर दिया। फलस्वरूप मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य पिछले करीब साल से ठप पड़ा। हालांकि पूर्व में राज्य के मुख्य सचिव, पर्यटन सचिव सहित वरीय अधिकारी गांव का दौरा कर जीर्णोद्धार कार्यों की समीक्षा कर पुनः कार्य शुरू किये जाने का भरोसा देते रहे हैं।

पंकज कुमार तिवारी

सहायक लेखा अधिकारी।

मोबाइल युग

अब किताब पढ़ने का समय कहाँ?
जितना समय हाथ में, मोबाइल में बिताता हूँ।
हाथ का काम छोड़कर, मोबाइल उठाता हूँ
आँखें रखकर रंगीन स्क्रीन में, सब भूल जाता हूँ।
आँखें रखकर रंगीन स्क्रीन में, सब भूल जाता हूँ।
किसी और की ओर नहीं देखता,
जब कोई कॉल करता है
यूट्यूब और फेसबुक में खो देता हूँ।

पहले अपने काम को, खुद करते थे हम
चारों ओर अच्छे से देखते थे हम।
आसपास के लोग क्या कर रहे हैं?
"किसी को क्या कुछ चाहिए?
बार- बार आगे बढ़ने के लिए हम
समझते हैं कि क्या आवश्यक है।
अब समय कहाँ है? मोबाइल पर सब कुछ
अपने घर में लगा के आग फोन पर देख रहा हूँ।
होश उड़ जाने पर मन खो जाता है
और फिर मोबाइल में डूबा रहता है,
मोहक ताकत से बूंद हो जाते हैं,

अच्छे बुरे का फर्क नहीं किया जा सकता।
मज़ेदार खबरें, नाटक के टुकड़े, ज्ञान से भरी बातें
अशिष्टता, जंगलीपन, वहाँ क्या कुछ नहीं है?
आँखें झाले कुछ अन्यमनस्कता हो तो,
कोई छवि खो जाए और खोजक नहीं पाव।
इसलिए हमेशा मोबाइल पर रहते हैं।
इसलिए हमेशा मोबाइल पर रहते हैं,
यह सबकुछ से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।
पढ़ाई ज़बरदस्ती होती है, किसे क्या परवाह है?
बिना मोबाइल के ज़िंदगी सुधारू।
आज भी जो लोग किताबें लिख रहे हैं या कविताएं,
किस युग में पढ़ रहे हैं वह भगवान जानता है।
मोबिली पर दोस्ती, मोबाइल पर ही मिलना,
मोबाइल पर प्यार बेवफ़ाई, मोबाइल पर ही बातें।
गेम खेल रहा हूँ मोबाइल पर, बार- बार जीत रहा हूँ
साथ ही हाथ में गरम वर्चुअल पुरस्कार है।
मोबाइल पर खाना ऑर्डर, मोबाइल पर ही टिप्पणी
माँ के घर का बचा खाना, जी पे किया तो पेमेंट।
ऐसे युग में पढ़ाई? लगता है सही।
ठाकुरदादा के समय सुविचार आते हैं।

तब क्या वो भी किताबों एन सोया करते थे और सुख से
अब हम समय काट रहे हैं मोबाइल में इंटरव्यू करके।
बहुत सारे रास्ते चलकर तेरे युग से हम चले गए हैं
फिर क्यों पीछे बुलाते हो, आगे नहीं जाना चाहिए।

अभिजीत दत्ता
सहायक लेखा अधिकारी

मौन स्वीकृति

एक परेशानी खत्म नहीं हो रही थी कि दूसरी मुंह बाए खड़ी हो जाती। आनंद को समझ नहीं आ रहा था कि पहले क्या ठीक करें। उसे नौकरी करते करीब दस साल हो चुके थे लेकिन अब तक कुछ भी स्थिर नहीं हो पाया था। कार्यालय में टूर पार्टी के कारण कभी इधर, कभी उधर जाना पड़ता था। पूरा समय बस एक बैग लेकर कभी इस ट्रेजरी, कभी उस ट्रेजरी। उसको सबसे ज़्यादा बुरा इस बात का लगता कि छुट्टी के दिन भी परिवार के साथ सुकून से समय नहीं बीता पाता।

आज ऑफिस में घुसते ही अगले टूर प्रोग्राम का ऑफिस ऑर्डर मिल गया। आनंद का चेहरा थोड़ा उतर गया था। अगले हफ्ते उसे घर भी जाना था। उसने सोचा था आज जाते ही छुट्टी की अर्ज़ी लगा देगा। खैर घर तो वो जाएगा ही। तभी यह काम हो पाएगा और उसके जीवन की समस्याएँ कुछ कम हो पाएँगी। कई महीनों से वह बहुत परेशान चल रहा था। गाँव के घर के लिए उसने लोन ले रखा था। लेकिन छोटे भाई की पढ़ाई के लिए अचानक कुछ महीनों पहले उसे पाँच लाख रुपयो की ज़रूरत आ पड़ी। उसने सोचा कि घर के लिए जो लोन चल रहा है उसी पर टॉप – अप लेकर इस लोन का भी काम हो जाएगा। उसने अपने आफ़िसर को बता दिया कि अगले सप्ताह कुछ दिनों के लिए वो छुट्टी पर जा रहा है। उसे पता था कि इतना सुनते ही उनका मुंह बन जाएगा, पर न चाहते हुए भी उसकी छुट्टी अप्रूव हो ही गई।

लोन से संबंधित सभी काम उसने फोन पर पहले से ही जान रखा था। बस अब घर पहुँच कर साईन और कुछ और औपचारिकताएं पूरी करनी थी। आनंद की ट्रेन रात की थी। वह ऑफिस में सुबह ही अपना सामान लेकर आ गया था। शाम को सीधे वहीं से स्टेशन चला गया। पूरे दिन की थकान के बाद बस उसे इतनी राहत थी कि उसको अपर बर्थ मिला था। ऑफिस के पास से ही कुछ हल्का- फुल्का खाकर वह एक ही बार अपनी सीट पर चला गया। जैसे ही सीट पर लेटा उसकी आँख लग गई। पूरे दिन के ऑफिस की थकान के कारण कब ट्रेन चल दी, उसे कुछ पता ही नहीं चला। उसकी आँख तब खुली जब सीट कन्फ़र्म करने के लिए टीटी ने हल्के से उसके कंधे पर हाथ रखा।

आनंद को आज भी वो दिन अच्छे से याद है, जब वह गाँव से पहली बार पढ़ने के लिए किसी शहर और वो भी दिल्ली जैसे बड़े शहर में आया था। घर की माली स्थिति ठीक नहीं थी। कलकते में लगी बाउजी की नौकरी को छूटे अभी कुछ ही दिन हुए थे। तब कोलकाता, कलकत्ता हुआ करता था। बिड़ला जैसी बड़ी कंपनी की नौकरी को बाउजी ने कुछ लोगों के बहकावे में आकर छोड़ दिया था। वैसे भी पहले के ज़माने में नौकरी को हेय दृष्टि से देखा जाता था। वहाँ का बसा- बसाया संसार छोड़ वो गाँव में आ बैठे। फिर उन्होंने बहुत सी चीजों में अपना हाथा आज़माया। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उनका मन उचट जाता और फिर से वही फाँकें लगने लगते। गाँव की एक आधी ज़मीन बची थी। उसे उन्होंने कुछ अनाज़ और रुपयों पर जान- पहचान के एक परिवार को खेती करने के लिए दे दिया था।

माँ ने बाउजी की सभी गलतियों का ज़िम्मा खुद पर उठा लिया। जैसे- तैसे घर का गुज़ारा हो पाता था। उन्हें समझ नहीं आता कि खाने का जुगाड़ करें या बच्चों की पढ़ाई का। कुछ बातों में माँ बाउजी से एकदम अलग थी। बाउजी अपनी जिम्मेदारियों को जितना कम समझे थे, माँ ने उन्हें उतनी ही गंभीरता से समझा। शायद यही कारण था कि बाउजी से छुप- छुपाकर वो बहुत से ऐसे छोटे- मोटे काम कर लेती थी, जिससे घर की परेशानी थोड़ी कम हो सके। सिलाई में हाथ साफ था ही, जैसे अवसर मिलता अपनी यह कला आस- पास की औरतों, लड़कियों को सिखाती और घर चलाने में अपना छोटा ही सही लेकिन महत्वपूर्ण योगदान देती। माँ ने सबसे पहले यह समझा था कि जीवन सिर्फ दो टाइम भरपेट खाना खाने से नहीं चलता, आगे बढ़ने के लिए समाज के तानों के साथ ही शिक्षा भी बहुत ज़रूरी है।

आनंद, छोटे भाई से करीब नौ साल बड़ा था। शुरू से ही उसने उसे भाई नहीं, बल्कि खुद के बच्चे जैसा लाड़- प्यार दिया था। माँ ने चूंकि पहले ही मन बना लिया था कि वो उन दोनों को धरोहर के रूप में भटकाव नहीं, बल्कि शिक्षा देंगी। अत: जैसे भी हो, लेकिन जोड़ - जाड़कर उन्होंने आनंद को ज़िले के सबसे अच्छे मिशनरी स्कूल में भर्ती करवा ही दिया। आनंद की पहली शिक्षिका भी वही थी, सो उन्हें अच्छे से पता था कि वह उनके इस फैसले का सम्मान करेगा। आनंद ने भी उन्हें निराश नहीं किया। घर से अब तक उसने जो कुछ भी और जितना भी सीखा था, सबको उसने अपने आगे के जीवन को प्रारूप और आकार देने में लगा दिया।

उसने दसवीं की बोर्ड परीक्षा में इतिहास में सबसे ज़्यादा अंक प्राप्त किया था। उस समय मिले सम्मान को वो आज तक नहीं भूल पाया। सरकारी नौकरी मिलने पर भी उसे इतनी खुशी और सम्मान शायद नहीं मिला था, जितनी उस दिन उसे मिली थी। बाउजी ने भी उस दिन बड़े गर्व से घर पर मुबारकबाद देने आए लोगों से उसकी जमकर तारीफ़ की थी। उनकी आँखों की चमक ने उनके हृदय उद्गार को स्पष्ट कर दिया था। जीवन में कुछ बड़ा ना कर पाने की उनकी पीड़ा को कुछ राहत मिली, उनके चेहरे की बदली आभा को आज भी याद कर आनंद का मन हर्षित हो जाता।

पूरे परिवार के लिए आनंद की नौकरी एक ऐसा मील का पत्थर साबित हुआ जिससे सबको बड़ी आशाएँ थी। आसपास के मुहल्ले में ये खबर आग जैसी फैली। बाउजी उस दिन थोड़े हताश थे। अपनी नाकामियों का बोझ उन पर इतना था कि उन्हें ये नौकरी छोटी लगी, उम्मीद इसकी थी कि एक दिन बेटा नीली बत्ती की गाड़ी में बैठकर उनके पास आएगा। लेकिन लोगों की शुभकामनाओं ने उनके बिखरे मन को थोड़ा ढाढ़स दिया। उस दिन आनंद को अपनी ये सफलता थोड़ी अधूरी लगी। हालांकि समय बीतने के साथ उसे अपने विभाग की आंतरिक परीक्षा पास की और अंतत: एक अधिकारी बन ही गया।

इस बीच गाँव की एक ज़मीन बेचकर पास के ही शहर में थोड़ी ज़मीन लेकर एक घर का ढांचा खड़ा कर लिया गया। एक लंबे भटकाव से मुक्ति मिली और सबके आशानुरूप उस ढांचे को घर बनाने का ज़िम्मा आनंद ने उठाया। घर के विस्तार के लिए लोन लिया गया और परिवार का एक अधूरा सपना पूरा होने को आया था। देर से ही लेकिन धीरे – धीरे जीवन के संघर्षों से जूझते हुए अब थोड़ा ठहराव आने लगा। घर वालों की इच्छानुसार आनंद ने शादी भी कर ली। अपना परिवार अब उसे पूरा लगने लगा।

देखते- देखते अब छोटा भाई भी कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने वाला था। उसकी इच्छा थी कि वह एम.बी.ए करे और किसी बड़ी कंपनी में नौकरी करे। सरकारी नौकरी करने की उसकी कोई खास इच्छा नहीं थी। पढ़ाई – लिखाई में भी बस ठीक ठाक ही था, लेकिन सबसे छोटा होने के कारण सब उसकी इच्छा का मान करते थे। अब एम.बी.ए की पढ़ाई थोड़ी तो खर्चीली थी। कुछ दिन पहले ही घर बनाने के लिए आनंद ने अच्छा- खासा लोन ले रखा था। जिस बैंक से उसने लोन ले रखा था, उसी के मैनेजर से बातचीत कर वर्तमान लोन पर ही टॉप – अप करवा लिया। उसी से संबन्धित सारी औपचारिकताएं पूरी करने के लिए वह घर जा रहा था।

ट्रेन करीब आधे घंटे लेट चल रही थी। एक पावर नैप उसने ले लिया था। वैसे भी यात्रा के दौरान उससे पक्की नींद नहीं आती थी। यही कारण है कि ऑफिस के काम कारण लगातार टूर पर रहने से उसकी नींद का पैटर्न एकदम खराब हो चुका था। खैर जैसे – तैसे सीट पर करवट बदलते वह बस सुबह का इंतज़ार करने लगा। लगभग अपने नियत समय से ट्रेन ने उसे छोड़ दिया। स्टेशन से घर की दूरी कुछ खास नहीं थी। बीस मिनट में ही वो घर के दरवाज़े पर खड़ा था। सुबह का समय था, घर से पूजा के घंटी की आवाज़ आ रही थी। सीधे वह हॉल में गया। अभी सामान रखा ही था कि माँ ने कहा – 'आ गए बेटा' अभी आनंद कुछ कहता तब तक बाउजी सीढ़ियों से उतर आए। दोनों के पैर छूकर उसने आशीर्वाद लिया। फिर हाथ मुंह धोकर बरामदे में लगी चौकी पर आ बैठा। माँ को पता था कि पूरे घर में ये जगह उसकी फेवरेट थी। सो उसके चाय नाश्ता का प्रबंध उन्होंने वहीं कर दिया। अभी कुछ महीनों पहले ही वह होली में घर आया था। लेकिन उसके बाद का कुछ टाइम इतनी भागादौड़ी में बीता कि वह मानसिक रूप से त्रस्त हो चुका था। कितना भी बड़ा पद मिला जाए, कहीं भी घर बना लो, लेकिन जो सुकून उसे आज मिल रहा था – इसकी आवश्यकता उसे कई महीनों से थी।

नहा – धोकर वह नीचे आ गया था। उसका और छोटे भाई का कमरा ऊपर था। आगरा में रहकर वह अपनी पढ़ाई कर रहा था। आखिरी साल था उसका वहाँ। लास्ट सेमेस्टर का रिज़ल्ट आने के बाद ही वह आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाना चाहता था। माँ ने आज आनंद के पसंद की कढ़ी, साग, लाल चावल और हथरोटी बनाई थी। ऐसी तृप्ति और संतुष्टि उसे बहुत दिनों बाद मिली। अगला दिन चूँकि रविवार था, सो उसने आराम करना ही ठीक समझा। बैंक से संबंधित जो भी काम था, सोमवार से पहले नहीं हो पाएगा।

सोमवार की सुबह नाश्ता कर वह नियत समय से बैंक पहुँच गया। चूंकि पहले से ही सारी चीज़ें तय थी, इंतज़ार था तो बस ब्रांच मैनेजर का। दोपहर तक सारी प्रक्रियाएँ पूरी हो चुकी थी। आनंद घर लौट आया। खाना खाकर लेटा ही था कि उसके फोन की घंटी बजी। कॉल किसी अंजान नंबर से था। उसने उठाया- हैलो, कौन? कॉल पुलिस स्टेशन से था। आनंद की आँखों के सामने अंधेरा छा गया।

डॉक्टर ने बताया कि अब स्थिति नियंत्रण में है। घबराने की कोई बात नहीं है। आनंद ने तुरंत बाउजी को फोन कर बताया। उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि ये सब सच में हुआ था। तीन दिनों से वह लगातार हॉस्पिटल और डॉक्टरों के अथक चक्कर लगा रहा था। जो छोटा भाई घर की जान था, आज उसकी जान के लाले पड़े थे। इतना बड़ा कदम उठा लेगा, ऐसा किसी ने सोचा भी ना था। आखिर ऐसी क्या परेशानी थी कि उसने अपनी जान लेने का प्रयास किया। आनंद ने उसके कई दोस्तों से जानने की कोशिश की। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ बताया। लेकिन वह अपने छोटे भाई को बहुत अच्छे से जानता था। वह अपने मन और पेट दोनों में कोई बात नहीं रख पाता था। इतना बड़ा कदम किस दबाव और किस मानसिक स्थिति में उसने उठा लिया था – ये बात आनंद को खाए जा रही थी। खैर यह समय इन सब बातों का नहीं था। कैसे भी बस वह ठीक होकर घर लौट आए, यही चिंता उसे सता रही थी।

पाँच दिनों के बाद छोटे भाई को लेकर आनंद घर लौटा। इस एक सप्ताह में घर और बूढ़े माँ बाउजी की रंगत पूरी तरह से उतर चुकी थी। लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई कि कोई इस घटना पर किसी से कुछ भी बात करे। माँ ने घर का माहौल हल्का करने का पूरा प्रयास किया। छोटा भाई कुछ हद तक उनके इस प्रयास को समझ कर अपनी गलती मानने की कोशिश भी कर रहा था। इन्हीं सब चक्करों में वह ऑफिस भी ज्वाईन नहीं कर पा रहा था। हालांकि उसने औपचारिक तरीके से ऑफिस को सूचना दे दी थी। उसने चार दिन बाद की वापसी का टिकट भी बना लिया। उसे लगा कि शायद इस बीच छोटा भाई खुद से ही अपने मन की बात रखेगा।

लौटने में अब बस दो ही दिन बचे थे। आनंद चाहता था कि उसके जाने के पहले घर का माहौल कुछ ठीक हो जाए। सो शाम की चाय पर जुटे सभी के साथ उसने अपनी बात घुमाकर रखने का प्रयास किया। छोटा भाई समझ गया, उसने भी अपनी मौन

सहमति से उसका स्वागत किया। क्या कारण था कि उसने अपने जीवन के साथ ऐसा करने का प्रयास किया। उसकी बातों को सुनकर सब हैरान हो गए। सबसे ज़्यादा आनंद क्योंकि वह मुख्य कारण था इसके पीछे। उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। जिस छोटे भाई के लिए उसने अब तक इतना कुछ किया, आज वो उसे सबसे बड़ा दुश्मन मान रहा था। उसे आज इस बात का पता चला कि माँ बाउजी हर बात पर जो उसकी और छोटे भाई की तुलना करते थे, वो उसे कितना नापसंद था। आगरा में रहकर भी वह कुछ खास नहीं कर पा रहा था। पढ़ाई पर ध्यान ना देकर इधर – उधर की बातों में उलझकर लास्ट सेमेस्टर में उसकी अटेंडेंस भी बहुत कम हो गई थी। उसे पता था कि वह परीक्षा नहीं दे पाएगा। इस डर से कि घर से फिर उसे वहीं सब बातें सुननी पड़ेंगी। ऐसा भी नहीं था कि घरवाले कुछ ताना या व्यंग्य कसते थे। बस बात इतनी थी कि उसको आनंद से खुद की तुलना बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। इन सब बातों के दबाव में उसने ये कदम उठाया। आनंद के लिए यह किसी झटके से कम न था। उसने घर का बोझ कम करने के लिए ये सब बात शुरू की थी। माँ बाउजी की हालत भी उसके जैसी ही थी। इसके बाद कोई किसी से कुछ ना पूछ पाया, ना बता पाया। आनंद को ऐसा अनुभव हो रहा था कि काश! उसकी वापसी की टिकट कल की ही होती। जिस भाई के लिए उसने इतनी मेहनत की थी, वही उसे अपना दुश्मन मान बैठा था।

उसके लौटने का दिन आ गया था। अजीब से मनोभाव ने उसे घेर रखा था, एक तरफ थोड़ा दुख था, दूसरी ओर कहीं ना कहीं इस बोझिल वातावरण से निकलने की संतुष्टि भी थी। माँ रास्ते के लिए खाना लेकर आई तो बाउजी ने आश्वासन दिया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। आनंद ने मौन स्वीकृति दी और अपने मन के बोझ के साथ घर से निकल गया।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

सभ्यता की निर्मिति

'रोम एक दिन में नहीं बनाथा' यह उक्ति अपने आप में इतिहास, वर्तमान और भविष्य की सभ्यताओं और संस्कृतियों के उद्भव, सौष्ठव और नैरंतर्य को प्रदर्शित करती है। सभ्यता एवं संस्कृति, जीवन के विभिन्न आयामों एवं संघर्षों से निर्मित होते हैं। उनका विकास और सौष्ठव कि सीक्षणिकयालघुकालिक क्रिया से नहीं होता है ज्ञान के सभी संभावी आयाम, कला के सभी रूप, विज्ञान के सभी क्षेत्रआदि मनुष्य द्वारा सतत्किए गए प्रयासों पर निर्भर थे। किसी भी क्षेत्र की महत मऊँ वाइयों का स्वरूप विभिन्न आरोहों-अवरोहों सेभराहु आहोसकता है। महत्वाकांक्षा ओंकेरथपर सवार मनुष्य की चित वृत्ति, सबसे उत्कृष्ट होने, सबसे बेहतर करने एव सबसे आगे रहने जैसे आदर्श वादी लक्ष्यों को पूरा करने हेतु प्रयासरत रहती है। ये एक तरह से एक दौड़ की तरह है जिसमें स्पर्धाओं का अस्तित्वकि सीन किसी के स्वार्थ पर ही निभर होता है। ये स्वार्थ, निश्चय ही एक बहुधा समाज के निर्माण के लिए सहयोग कारी हो ता है।

मनुष्य आज भव्य, आलीशन, चमचमाती, बहु मंजिला इमारतों का स्वामी है। आज यह अकल्पनीय है कि बन्दरों की प्रजाति, गुफाओं, नदियों के किनारे रहने वाली मनुष्य जाति ने इतनी तरक्की कैसे करली? यह एक अविश्वसनीय तथ्य जैसा काल्पनिक लगता है। पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों से शिकार करने वाली मानव जाति के पास आज विनाशकारी परमाणु बम है। क्या परमाणुबम एक दिन में बना? नहीं। आजभी दुनिया में कुछही देशों के पास यह तकनीक है। ज्यादातर देशों के पास चुनिंदा हथियारमात्र है। आज भी जबहम अल्पविकसित औरविकासशील देशों के सापे क्षविक सित देशोंकी उन्नति और बहुमुखी प्रगति को देखते हैं तो प्रतिस्पर्धा का ऐतिहासिक युग सम्मुख आजाता है। क्या यूरोप और अमेरिका की प्रगति निरपेक्ष भाव से होती आई है? नहीं, इसके पीछे युद्धों, संघर्षों और चिरंतन सृजन के प्रतिस्पर्धी मूल्यों की महत्व पूर्ण भूमिका रही है।

कुछ सभ्यताएँ सम्पन्न और कुछ विपन्न कैसे होगई? आद्य-ऐतिहासिक सभ्यता ओंके बारेमें जो साक्ष्य प्राप्त होते हैं, वेदर्शाते हैं कि प्राचीन सभ्यताएँ भले ही एक साथ अस्तित्व में रही होंले किन उनकी संस्कृति का स्तर बहुत अलग-और विविधता पूर्णथा। यूनान, मिस्र और भारतीय सभ्यता ओंकासां स्कृतिक साम्य और वैषम्य उनसभ्यता ओंकी विशिष्ट अस्मिता के कारण दिखता था। यह एक उपयुक्त सवाल है कि पुरानी सभ्यताएँ अथवा प्राचीन काल की सभ्यताएँ आज कहाँ खड़ी है? यह स्पष्ट है कि शक्तिशाली अतीतभी एक दिन मेंन हीं बनाथा और नही आज की महान, अभूतपूर्व शक्तिशाली सभ्यताएँ पलक झपक ते ही चाँदतकजा पहुंची है।
अल्लामाइक़बाल की पंक्तियाँ भारत की चिरंतन सांस्कृतिक और सामाजिक सौष्ठव को रेखांकित करती हैं-

"यूनान मिस्र रोमांस बमिटग ए जहाँ से
अब तक मगर रहा है नामो-निशांहमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहांहमारा।"

ये पंक्तियां सामाजिक और सांस्कृतिक दीर्घ कालिकता के गौरवका अनु नाद करती हैं।

सभ्यताओं की प्रगति की ही बात है तो मानवीय सभ्यता को आधुनिक बनाने वाले वैज्ञानिक आवष्किा रोंकी बात होगी ही। ज्ञान के साहित्य सर्जना की दर्जनों विधाओं का क्रमागत विकास हुआहै। आज उनकी मौजूदा स्थितियों को देख कर उनके अतीत का कोई विशिष्ट स्वरूप समझना बहुत मुश्किल है। नभचर पाखियों को उड़ते हुए देख आकाश में उड़ने की कल्पना तो मनुष्य अनादिकाल से ही करता आया है। आज ये स्वप्न वास्तविकता हैं। हवासे बातें करते हवाई जहाज में बै ठ कर उनस्थितियों की कल्पना करना मुश्किल लगता होगा लेकिन आज उसी मनुष्य का प्रेषित वायजस्यान, धरती सेकरोड़ों किलोमीटर दूर ब्रह्मांड में चक्कर लगा रहा है तो मुख आश्चर्य से खुला रह जाता है। सह साय कीन नहीं होता है किय हभी हो सक ताहै।

ऐसे ही दृश्यों को देख कर रामधारी सिंह दिन करने लिखा होगा-

"यह मनुज जिस का गगन में जा रहा है यान
काँपते जिसके कानों को देख कर परमाणु"

यह एक संयोग मात्र नहीं है कि सदियों की पराधीनता से मुक्त भारत देश भी आज अंतरिक्ष की गहराइयों में अपना व्यापक अभियान संचालित कर रहा है।

उत्कृष्ट प्रथाओं और ज्ञान के समेकित आयामों के संबंध में भीयहबात लागू होती है। जो कुछ भी महान और उत्कृष्ट हासिल हुआ है उसे सरलता और शीघ्रता से हासिल नहीं किया जा सकता है। बेशक आज का युग सूचना प्रौद्योगिक भी के बहु आयामीविका सकाहै जहाँ मानवीय जीवन के सभी क्षेत्र प्रौद्योगिकी क्रांति से पूरि तहैं लेकिन इस तकनीकी क्रांति का वर्तमान रूप जितना प्रौढ़ और सजीव दिखता है, उसे बनाने में सदियाँ गुजर गई। धार्मिक, जातीय एवं वर्गीय संघर्षो के आतपको सहते हुए प्रगति का दौर यहाँ तक पहुँचा है। मनुष्य जाति की महान सभ्यताओं का ऐतिहासिक संघर्ष, आदिम जिजीविषा और स्वप्निल भविष्य की कामनाओं ने आज की सभ्यता का एक ऐसे बहु आयामी संभावनाओं के द्वार पर पहुँचाया है जहां से वह अखिल ब्रह्मांड के अनुसंधान की अपनी महती आकांक्षाओं को आकार दे सकताहै।

अर्नेस्टरेनन ने कहा है-

"आज स्कूल का साधारण बच्चा भी उस तथ्य से भली भाँति परिचित है जिसके अनुसंधान के लिए आर्किमीडिज ने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।"

यह टिप्पणी ऐतिहासिक विकास की चिरंतन जारी प्रक्रिया के युगी नसंघर्षों की जीवंत गाथा है और सभ्यता ओंके विकास में सूक्ष्म जान पड़ने वाली चीज़ों की वास्तविक महत्ता को रेखांकित भी करती है।

आज हम प्रायः एक स्थान पर बैठे-बैठे दूसरों से बातें कर सकते है, उन्हें देख सकते हैं, उन्हें सूचनाएँ भेज सकते हैं और सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान आज हर जगह अपनी सर्व-संभाव्य उपस्थिति दर्ज करा रहा है, ज्ञान और अनुसंधान के नवीन क्षेत्र उभर कर सामने आ रहे हैं। आज, सभ्यता के इस विकास मानसमय में विज्ञान की प्रगति के बिना आधुनिक मानवीय सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जीवन के विविध क्षेत्रों को गति देने वाला, उन्हें अस्तित्व में लाने वाला विज्ञान हमेशासे ऐसा नहीं था।अंधविश्वास, धार्मिक पाखंड, कर्मकाण्ड आदिने मनुष्य को अपने जाल में जकड़ रखाथा। समाज की चिन्त नगतिप्रापः रेखिक होती थी। वहाँ विविधता के लिए या अलग सोच के लिए जगह नहीं होतीथी। सच वत र्कपूर्ण विचारों के उद्गार के कारण सुकरात को जहर दिया गया। ऊपर अर्नेस्टरेनन की उक्ति भी दी गई है जो ऐतिहासिक द्वंद्व को दर्शाती है।

यहाँ एक उचित सवाल ये भी है कि क्या सभ्यताओं के शासक, सभ्यताओं की प्रगति के नियामक अथवा विनाशकथे? जो समाज नवीन भावों, नईसोच, तार्किक सवालों को और उन्मुक्त चिंतन को नहीं स्वीकार कर सकता वह निश्चय ही तालाब के ठहरे हुए पानी की तरह की चड़ हो कर अंततः सूखजा एगा। सुकरात के विचारों ने दुनिया बदली और यूनान की सभ्यता इतिहास में विलीन हो गई। क्यों यूनान की प्राचीन, गौरव मयी और भव्य सभ्यता समाप्त हो गई? क्या उन्मुक्त चिंतन के बिनाविज्ञान आज यहाँ पहुँच सकताथा? उत्तर है नहीं। रोकनेवालों ने हजारों कोशिश की लेकिन नई चीजोंको आविष्कार होता रहा और नए आविष्कार और नई खोजों ने सनसनी की तरह सभ्यताओं को परि वर्तित किया। लोगोंने अपनी आस्थाओं को भले ही नछोड़ाहो लेकिन उन्हों ने नई खोजों को अपनालिया।

लोहे का खोज ने लौहयुगी नसभ्यताओं को जन्मदिया, जहाँ इस धातु ने युद्धों की दिशा बदल दी। युद्ध सभ्यताओं की रक्षा व स्थापना के सबसे प्रमुख आया महोते थे। कहते हैं कि चीनयों के बारूद के आविष्कार ने परंपरागत युद्ध क प्रणालियों को बदल लिया दिया और दुनिया भरमें सभ्यताओं का काया पलट कर दिया। दुनिया भरमें उनकी हैरान कर देनेवाली विजय गाथाएँ भरी पड़ी हैं जिसे मंगो लोंने नया आगर दिया था। उस समय की सबसे शक्तिशाली सत्ताभी आज की अत्याधुनिक तकनीक के सम्मुख कुछभी नहीं है। मध्यकाल की ताकतवर सभ्यता ओंनेभी विज्ञान को धर्मवरूढ़िगत मान्यताओं के सम्मुख बहुत वरीयता नहीं दी। इस के विपरीत नया सोचनेवालों को दण्डित किया जाना जारी रहा। यद्यपि हर समाज में बेहतर और तार्किक समझ रखने वाले लोगथे लेकिन वह समय था जबविज्ञान ने अपने संघर्ष को और बल दिया। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, गैलेलियो, कोपरनिकस आदि वैज्ञानिकों ने तार्किक चिंतन को नया आयाम दिया। गिरते हुए सेबकी व्याख्या में न्यूटन ने नए सिद्धांत का प्रति पादन किया। औद्योगिक क्रांति ने दुनिया की दशावदि शाही बदलदी। आज क्या विज्ञान, क्या चिंतन, क्या धर्म, क्या शिक्षा, सर्व त्रविज्ञान है। हर शाखा अपने आपमें शक्ति है और विज्ञान की पूर कहै। आज, इक्की सवीं शताब्दी का ये समुन्न तस्वरूप कई सदियों तक मनुष्यता की दी गई 'होम' का परिणाम है। सब बदल रहा है, बदलाव की गति और तेज हो रही है लेकिन सभ्यता विद्यमान है। महान उपलब्धियाँ नभ से गिरती नहीं हैं, इसी धरती पर अपनी सभ्यताओं के प्रति सापेक्षया निरपेक्ष भावसे किए गए संघर्षों से प्राप्त की जाती है। वे मनुष्य की अदम्य आकाँक्षाओं की प्रती कहैं। विशाल और महान बनना एक सतत और विस्तृत प्रक्रिया की अपेक्षा रखता है। जो मानवीय सभ्यताएं इसे पूरा करती है उसे नैतिक-अनैतिक, शुभ-अशुभ आदि से परेतर्क पूर्णचिंतन में देखा जाना चाहिए। मानव सभ्यता की असीम संभावनाओं पर महा कवि जयशंकर प्रसाद के शब्दों में कहेंतो-

"शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरेहों हो निरुपाय।
समन्वय उनका करें समस्त
विजयनी मानवता बनजाए।"
अस्तु।

आशीष कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

सुनो जानेवाले

"माँ! देखो दूर कितनी सारी बत्तियाँ दिख रही हैं" - सोमा ने कहा।

माँ हँसकर बोली- "दूर गाँवों में जो लोग रहते हैं, वो सब उन्हीं लोगों के घर हैं। यह बात सोमा के मन को छू गई। कितने अंजान लोग हैं ये सब। एक दूसरे से कभी मिले भी नहीं फिर भी आज सब कितने पास हैं। ट्रेन में बैठे- बैठे यही सब बातें उसके मन को लुभा रहीं थी। सोमा और उसकी माँ पदातीक मेल से उत्तर बंग जा रही थी। घर पर सिर्फ उसके पिता जी ही थे, कुछ ज़रूरी काम होने के कारण उन्हें रुकना पड़ा। सोमा का मन इस बात से थोड़ा दुखी था। वो अपने किसी रिश्तेदार की शादी में जा रहे थे।

सोमा ने माँ से फिर पूछा – "माँ हम कितने बजे पहुंचेंगे?" माँ बोली –"सुबह के नौ बजे! अगर मौसम अच्छा रहा तो पहाड़ भी दिखेगा तुम्हें।"

सोमा बहुत उत्साहित होकर बोली –"पहाड़ तो मेरी जान है। कब और कहाँ दिखेगा पहाड़?"

उनकी बगल की सीट पर एक और परिवार बैठा था, जिसमें माँ, बाबा, पुत्र एवं पुत्री थे। उनलोगों से भी सोमा की जान- पहचान हुई। वो सब अपनी गर्मी की छुट्टियों में पहाड़ घूमने जा रहे थे। सब बहुत खुश थे। कहाँ- कहाँ घूमने चला जाएगा? कितनी ठंड रहेगी? -यही सब बातें चल रही थी।

रात के दस बज गए। सोमा को अपर बर्थ और उसकी माँ को लोवर बर्थ मिला था। मिडिल वाले बर्थ पर लड़का था, जिसका नाम प्रकाश है। उसकी नई- नई शादी हुई है। उसकी पत्नी उत्तर बंगाल के किसी स्कूल में टीचर है। वह एक सप्ताह की छुट्टी लेकर वहीं जा रहा है। सोमा की माँ ने उससे पूछा- तुम खाना लाये हो? सबका ख्याल रखना उसकी आदत है। वह परिवार का तो ध्यान रखती ही है, साथ ही कोई अंजान मिले तो उसके भी खाने- पीने की चिंता से लग जाती है। प्रकाश को देख उन्हें लगा कि उसने बहुत देर से कुछ भी नहीं खाया है।

प्रकाश ने कहा- "नहीं, मैं अब आरती के साथ ही खाऊँगा।" आरती प्रकाश की पत्नी का नाम था। दूरी होने के कारण दोनों का प्यार थोड़ा ज़्यादा बढ़ गया था।

ट्रेन बहुत तेज़ी से चल रही थी। दूर दिखने वाली सारी बत्तियाँ भी जैसे मद्धम पड़ रही थी। हवा का शोर भी बहुत बढ़ गया था। सोमा के लिए इस बहती हुई हवा में मानो उसके बाबा का पैगाम गूंज रहा था कि "जल्दी लौट आना मेरी बच्ची।" उसकी आँखें भर आईं। बगल में बैठे हुए परिवार के बच्चे अब सोने की तैयारी में लगे थे। प्रकाश आरती की यादों में खोया हुआ था।

कमरे की बत्ती बुझ चुकी थी। उस साम्य तक लगभग सभी लोग सो चुके थे। सोमा को नींद नहीं आ रही थी। उसके मन में अपने बाबा की बातें चल रही थी। मन हुआ कि एक बार बस उनसे बात हो जाती। सोमा ने फोन में समय देखा तो रात के साढ़े बारह बज रहे थे। लेकिन उससे ना रहा गया और उसने बाबा को फोन मिला ही दिया। "हैलो बाबा" – उसने मीठे से स्वर में कहा। बाबा बोले –"सोमा मेरी बच्ची..... "। "पापा..... "

ऐसा लगा जैसे पूरी दुनिया घूम गई। बहुत ज़ोर का एक झटका लगा, डिब्बे की खिड़की टूटी और सोमा खिड़की से बाहर आ गिरी। सब तरफ से चीखने की आवाज़ आने लगी। देखते – देखते वहाँ चारों ओर खून की धारा बहने लगी। रोने की, चिल्लाने की, अपनों को पुकारने की चीख से

पूरा वातावरण भर गया। जैसे- तैसे सोमा माँ के पास पहुंची। देखा तो माँ के सिर से खून बह रहा था। माँ को उस हालत में देख कर सोमा चीखती हुई बोली बाबा और धीरे – धीरे उसकी आँखें बुझने लगी।

अगले दिन की सबसे बड़ी खबर यही थी – "उत्तर बंग जाने वाली एक पैसेंजर गाड़ी की मालगाड़ी से हुई भयानक भिड़ंत, जिसमें दो सौ से भी अधिक यात्रियों ने अपनी जान गंवाई।"

इस एक ट्रेन दुर्घटना ने कई परिवारों को हमेशा के लिए एक दूसरे से अलग कर दिया।

श्रीजिता नाग

सहायक लेखा अधिकारी

पछतावा

उमा जी अपने गाँव के एक प्रतिष्ठित परिवार की महिला थी। कद-काठी से काफी हृष्ट-पृष्ट थी। वो काफी बुद्धिमान एवं दयालु थी। उनके बुद्धिमता की चर्चा हर जगह होती थी। वो जैसा भी बन पड़े हर किसी की मदद करने को तैयार रहती थी। अगर किसी को कुछ जानना या समझना हो या किसी बड़े की नसीहत की आवश्यकता हो, तो वे बेझिझक उमा जी से सलाह ले लेते थे और वो भी बड़ी खुशी से उनकी मदद किया करती थी। उनके दो बेटे एवं एक बेटी थी। दोनों बेटे अपने अपने व्यापार मे काफी तरक्की कर रहे थे। बेटी पूजा की शादी हो चुकी थी। लेकिन ससुराल वाले उसे बहुत प्रताड़ित करते थे। इसी बात की चिंता उमा जी को सताती रहती थी। उसके दामाद विकास जी वैसे तो काफी अच्छे स्वभाव के थे, लेकिन पत्नी के साथ होने वाले नाइंसाफी को नज़रअंदाज़ कर देते थे। पूजा के सास-ससुर को पता नहीं क्यों दोनों का रिश्ता पसंद नहीं था। शादी जबकि बड़ों ने ही तय की थी। दहेज की रकम भी पूरी मिली थी, पर अब उन्हे लड़की पसंद नहीं थी। इसीलिए वे दिन रात पूजा को ताना मारते रहते थे।उमा जी को लगा की संतान के हो जाने के बाद शायद पूजा के सास-ससुर का व्यवहार बदल जाएगा पर पूजा की बेटी के अदिति के होने के पश्चात भी उनके व्यवहार पर कोई असर नहीं पड़ा। बल्कि वो तो पोता न होने की वजह से दुखी हो गए थे। उमा जी के बेटों की भी एक-एक पुत्रियाँ थी, लेकिन सभी लोग बच्चियों को वही प्यार और दुलार देते थे, जो एक बच्चे को मिलना चाहिए। इस कारण से भी उमा जी की इज्ज़त हर कोई करता था। खैर, दिन बीतते गए अब पूजा की पुत्री अदिति भी स्कूल जाने लगी थी और इधर पूजा की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति दयनीय होती जा रही थी। उसे आय दिन अस्पताल में भर्ती करना पड़ता था। उसकी सास को इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वो बस उसे एक मशीन की तरह इस्तेमाल करना जानती थी। वो मरे या जिए उससे अब उन्हे कोई मतलब नहीं था। कुछ दिनों बाद पता चला कि पूजा फिर से माँ बनने वाली है। इस बार तो उसकी सास ने पोता होने के लिए अनेकों मन्नतें मान ली थी। पूजा को कहीं न कहीं इस बात का डर था की अगर लड़का नहीं हुआ तो उसकी सास उसे जीने नहीं देंगी। कुछ दिनों के पश्चात सासू माँ ने पूजा को कहा कि तैयार हो जाओ, हमें शहर जाना है। लेकिन क्यूँ माँ जी? पूजा ने प्रश्न किया। सासू माँ ने कहा जो बोला है बस वही करो, कुछ ज़रूरी काम है। पूजा को यह बात अटपटी लगी कि इस हालत में आखिर क्या ज़रूरी काम हो सकता है और मैं शहर जाकर क्या करूंगी। सासू माँ ने अपने बेटे विकास को भी कुछ नहीं बताया। उसे गाँव में अदिति के साथ रुकने को बोला और स्वयं ससुर जी और पूजा के साथ शहर की ओर चल पड़ी। उमा जी को जब ये बात पता चली तब उनको समझ आ गया की कुछ तो गड़बड़ है, जो अचानक पूजा को शहर लेकर जाना पड़ा। वो भाग कर पूजा के ससुराल जा पहुंची। दामाद से पूछने पर किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं मिली। पूजा का फोन भी नहीं लग रहा था। फोन को बंद करके सासू माँ ने अपने पास रख लिया था। शहर जाकर वो पूजा को एक अस्पताल ले गयी। पूजा ने उन्हे डॉक्टर से कुछ गुपचुप बाते करते देखा। वो समझ नहीं पा रही थी की आखिर बात क्या है, लेकिन उसे कुछ कुछ अंदाज़ा हो रहा था की कुछ सही नहीं हो रहा है। लेकिन सासू माँ पूजा की कोई बात सुनने को तैयार नहीं थी। डॉक्टर ने पहले पूजा का अल्ट्रासाउंड किया उसके बाद आगे की तैयारियों में जुट गयी। सासू माँ यहाँ पूजा के संतान की लिंग जांच करवाने आई थी। उन्होंने फैसला कर लिया था कि अगली संतान उन्हें पोता ही चाहिए। विकास उनका इकलौता बेटा था और उन्हें अपने परिवार के लिए एक वारिस की लालसा थी, जो वो किसी भी हाल में हासिल करना चाहती थी। इसके लिए भले ही उन्हें कोई नियम या कानून तोड़ना पड़े, वो तैयार थी। आनन फानन में डॉक्टर ने एक मोटी रकम के बदले यह गैरकानूनी काम कर डाला। पूजा का स्वास्थ्य पहले ही काफी नाजुक स्थिति में था। इस प्रकिया के बाद उसकी हालत और भी खराब हो गयी थी। वो खुद पर हुये इस नाइंसाफी के खिलाफ आवाज़ भी नहीं उठा सकी। उसका शरीर अभी बस एक ज़िंदा लाश के जैसे पड़ा हुआ था। उसे अपने लड़की होने का आज दुख हो रहा था। काम हो जाने के बाद सभी घर की ओर निकल पड़े। घर वापस लौटते रात हो गयी। घर पहुँचने पर पूजा ने सामने अपनी माँ को खड़े देखा। वो उन्हें देख कर अपने आप को रोक नहीं पायी और वो दरवाजे पर ही खड़े होकर फूट फूट कर रोने लगी। मानो वो अब इस घर की दहलीज़ पार करके अंदर जाना नहीं चाहती हो। अपनी बेटी की ऐसी दशा देख कर उमा जी समझ गयी कि जिस

बात का डर उन्हें सता रहा था, पूजा की सास ने बिलकुल वही काम किया है। विकास बुत बन कर खड़ा था। वो अपनी माँ के मुँह से सुनना चाहता था कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यूँ किया, वो भी बिना उसे बताए। वो व्यवहार में थोड़ी सख्त थी पर ऐसा अपराध वो कर सकती है, ऐसा उसने सपने में भी नहीं सोचा था। विकास को अपने आप पर शर्म आने लगी कि वो अपनी पत्नी की सुरक्षा करने में असमर्थ रहा। उधर उमाजी के सब्र का पहाड़ टूट पड़ा। उन्होंने गुस्से में पूजा की सास को काफी भला-बुरा कहा, पर इससे उसकी सास को कोई फर्क नहीं पड़ा। वो उल्टा अपने किए को सही बता कर उसका औचित्य सिद्ध करने की कोशिश में लगी थी। उनके अनुसार उन्होंने जो किया वो अपने परिवार के वंश की खातिर किया। पूजा की हालत ठीक नहीं लग रही थी। उमाजी ने पूजा को सोफ़े पर बैठाया और उसके कमरे में जाकर उसका सामान बांधने लगी। वो अपनी बच्ची को ऐसी जगह पर अकेला नहीं छोड़ सकती थी जहां लोगों को उसकी परवाह नहीं थी। वो अदिति और पूजा को अपने साथ ले जाने लगी। सासू माँ ने विकास को उन्हें रोकने को बोला, लेकिन विकास ने उनकी एक न सुनी और पूजा को जाने दिया। वो खुद अब इस घर में रुकना नहीं चाहता था, जहां लोगों के जान की कोई कीमत नहीं थी। उमाजी, अदिति और पूजा को लेकर वहाँ से निकल गयी। सासू माँ का घमंड अभी भी टूटा नहीं था। उन्होंने ससुर जी से बड़बड़ाते हुये कहा कि जो हुआ अच्छा ही हुआ, खुद ही इस घर से चली गयी। मैं तो कब से चाहती थी की मैं विकास की दूसरी शादी करवाऊँ पर मेरा बेटा इस कमबख्त पर जान छिड़कता है। अच्छा हुआ बला टली। अब मैं अपने बेटे की शादी एक सुंदर सी लड़की से करवाऊँगी जो मुझे एक पोता दे सके। उनकी ये बातें विकास ने सुन ली। उसे पछतावा होने लगा कि काश मैं अपनी माँ की गलतियों को नज़रअंदाज़ न करता और कभी अपनी पत्नी का भी साथ दिया होता। भले ही मैंने पूजा के साथ कभी गलत व्यवहार न किया हो लेकिन उसके साथ होने वाले गलत व्यवहार के खिलाफ कभी आवाज़ भी नहीं उठाई। अब विकास को अपने आप से भी नफरत होने लगी। वो पूजा और अदिति से दूर होने के गम में उदास रहने लगा। आत्मग्लानि इतनी थी की उनसे मिलने भी नहीं जा पा रहा था। कुछ दिन बीतने के बाद उसे अपने खुद के घर में घुटन होने लगी। इधर सासू माँ को अपने किए पर कोई पछतावा नहीं हो रहा था। वो तो बल्कि विकास की दूसरी शादी करवाने की फिराक में थी। उसने विकास को बिना बताए उसके तलाक के कागज भी तैयार करवा लिए। मौका मिलते ही वो उससे धोखे से विकास से दस्तखत भी करवा लेती। लेकिन अब विकास अपनी माँ के चाल को समझ चुका था। उसे अब अपनी खुद की माँ से नफरत होने लगी थी। जब उसने तलाक के कागज देखे तो उससे रहा नहीं गया। उसने अपनी माँ से कहा कि माँ मैंने पूजा के साथ सात जन्मों तक साथ रहने की कसम खाई है, ओर आप मुझे उससे बस इसलिए अलग कर देना चाहती हैं क्योंकि आपको पोता चाहिए। नहीं रहना मुझे ऐसे घर में जहां रिश्तों की कोई कदर नहीं हैं। मैं ये घर छोड़ कर अपनी पत्नी और बेटी के पास जा रहा हूँ। आप मुझे रोकने की कोशिश भी मत करना, क्योंकि मुझे घुटन होती है आपके साथ इस घर में रहने पर। जहां एक दूसरे के लिए प्यार और इज्ज़त नहीं है वहाँ मैं एक पल भी नहीं रुकूँगा। इतना कहकर विकास अपना समान लेकर घर छोड़ कर निकल पड़ा। उसकी माँ के मुंह से एक शब्द भी न निकला। वो आज अपने आपको हारा हुआ महसूस कर रही थी। उन्हें लग रहा था कि जिसके लिए मैंने ये सब किया उसी ने मुझे अकेला छोड़ दिया और वो फूट फूट कर रोने लगी। उनकी नज़रों में अपनी बहू पूजा के लिए नफरत और भी बढ़ गयी। वो मन ही मन उसे अपनी इस हालत के लिए कोसने लगी। उधर विकास पूजा के पास पहुँच कर उससे माफी मांगने लगा। पूजा की तबीयत पहले से काफी बेहतर लग रही थी। पूजा का चेहरा मुरझाने के कारण उसके घर का नकारात्मक माहौल ही थी। अपने घर आकर वो अब संभलने लगी थी। अदिति भी इतने दिनों के बाद अपने पापा को देख कर काफी खुश थी। विकास को भी समझ आ गया था कि जीवन में अगर प्यार और इज्ज़त न हो तो, जीवन नीरस लगने लगता है।

दिन बीतने लगे। विकास ने इधर ही अपना नया घर बसा लिया। पूजा भी अब खुश रहने लगी थी। उमाजी भी बेटी और दामाद को खुश देख निश्चिंत रहती थी। इधर पूजा के ससुर के व्यवसाय में अचानक बहुत नुकसान होने लगा। चूंकि विकास ने सब कुछ संभाल रखा था, उसके न होने से अब व्यवसाय के बिखरने की नौबत आ गयी थी।

इसी बीच एक दिन पूजा की सास जब सुबह भगवान की पूजा कर रही थी, तो अचानक दिए की आग में उनकी साड़ी भी लपेटे में आ गयी। वो चीखने चिल्लाने लगी, लेकिन घर में कोई नहीं था, जो उनकी आवाज़ को सुन पाता। पड़ोसियों ने जब आवाज़ सुनी तब तक वो काफी जल चुकी थी। सबलोगों ने मिलकर उन्हें अस्पताल पहुंचाया। उनके पति और बेटे को भी खबर पहुंचाई। सब अस्पताल पहुंचे। पूजा, उमाजी एवं अदिति भी विकास के साथ आए। सास की हालत ठीक नहीं थी। वो काफी ज़्यादा जल चुकी थी। डॉक्टर ने सभी को एक-एक करके जाकर मिलने को कहा। सास कुछ बोलने की हालत में नहीं थी। पूजा को देख कर बस वो हाथ जोड़ कर माफी ही मांग पायी। शायद वो समझ चुकी थी की उन्होंने आज तक पूजा के साथ जैसा भी बर्ताव किया, वो सही नहीं था। उन्हें अब समझ आ गया था कि अपने किए गए पापों की सज़ा मिली है, जिससे अब वो कभी पहले की तरह नहीं हो पाएँगी। अपने हाथों से अपने परिवार को बिखेर दिया मैंने, ऐसा सोच कर वो मन ही मन खुद को कोसने लगी। डॉक्टर ने किसी तरह उनको बचा तो लिया। पर उन्हें काफी दिनो तक अस्पताल में रुकना पड़ेगा। विकास और पूजा रोज़ उनसे मिलने अस्पताल आने लगे। अब उनका हृदय परिवर्तन हो चुका था। एक महीने के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। वहाँ से निकलते वक़्त उन्होंने पूजा और विकास से हाथ जोड़ कर माफी मांगी। उन्हें साथ चलने को नहीं बोल पायी क्योंकि बोलने पर भी अगर वो साथ नहीं आते तो उनके मन को काफी चोट पहुँचती।

ससुर जी लेकर घर पहुँच गए। घर जाकर सासू माँ ने देखा कि अदिति और उमाजी पहले से वहाँ मौजूद हैं। वो कुछ समझ नहीं पा रही थी। कुछ देर के बाद विकास और पूजा भी वहाँ आ गए। उनके हाथ में उनका सामान भी था। उमाजी उनके पास आकार बोली की ये तीनों आपकी अमानत है। मैं इन्हे आपको सौंपने आई हूँ। उमाजी की ये बातें सुनकर वो अपने आपको रोक नहीं सकी और उनके पैरों में गिर कर उनसे माफी मांगने लगी। अपनी बेटी का घर फिर से बस जाये, और वो हंसी खुशी अपने परिवार के साथ रहे, इससे ज़्यादा और क्या चाहिए एक माँ को। इतना कह कर उमाजी ने वहाँ से विदा लिया। विकास, पूजा और अदिति फिर से अपने घर आकर खुश थे क्योंकि अब ये घर पहले जैसा नहीं रहा। यहाँ भी अब लोग एक दूसरे को प्यार और सम्मान करते हैं और अपने से ज़्यादा दूसरों की खुशी के बारे में सोचते हैं।

आस्था गुप्ता

लेखाकार

स्वाधीनता का सुख

यदि मैं होता वन का पंछी, वन में रहता,
तो फिरता, उस वन में इधर – उधर, आता- जाता।
जो मिलता सो खाता, निर्भय रात बीताता वन में,
खोने को ना कुछ फिर होता पास मेरे जीवन में।
करता – फिरता देशाटन मैं ऐसे देश- देश को,
मन होता आनंदित देख नए- नए देशों को।
खुश होता मैं सीख विभिन्न रीति- नीति भाषा को,
घूम अगर सकता मैं ऐसे, पूरी करता इच्छा को।

अलग देश, जलवायु अलग आबोहवा से परिचय होता,
रही अधूरी ये इच्छा, इस जनम ना पूरी हो पाई।
यही कामना प्रभु से मेरी, पंछी अगले जनम बनाए,
देखू दुनिया, भ्रमण करूँ, ताकि मैं अगले जनम में।
रोक सके ना घर में कोई, हो नाराज़ न कोई मुझसे,
सच्चा सुख तब स्वाधीनता का मिलेगा मुझको।

तुषार बरन मारिक
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्रकृति का बदला

ठूँह! देखो तो, कैसे बेशर्मों की तरह सोया हुआ है, मेरी छाया में। आज इसके घर का बिजली और पंखा कहाँ गया? गुस्सा इतना आ रहा है कि मन करता है, जो एक-दो डाली बची हुई है इसमें से एक डाली गिराकर इसका सर फोड़ दूँ।

हाँ, सही कहा पेड़ भाई आपने, ये इंसान बहुत बेशर्म और स्वार्थी होते हैं। एक और पतली सी आवाज उसके कानों में पड़ी। वह गर्दन घुमाकर आवाज की दिशा में देखने लगा, और आश्चर्यचकित रह गया। उसने देखा कि वह जिस पेड़ की छाया में सुस्ताने बैठा था, वही पेड़ किसी से बातें कर रहा है। दूसरा कौन है वह दिख नहीं रहा है।

पेड़ फिर बोला, तुम ठीक कह रही हो हवा बहन, ये इंसान स्वार्थी के साथ-साथ बेरहम भी बहुत होते हैं, देखो न कितनी बेरहमी से मेरे एक-एक डाली को काट डाला है। अपने ऐशो-आराम के लिए, अपने महल अट्टालिकाएँ बनाने के लिए, उसके साजो-सामान के लिए जिस तरह ये लोग हम पेड़ों और जंगलों की कटाई कर रहे हैं, ऐसा लगता है कुछ वर्षों में ये धरती पेड़ विहीन हो जाएगी। चारों ओर केवल बड़े-बड़े कल-कारखाने और ऊँची इमारतें ही दिखेंगी। ये लोग अपनी सुख-सुविधा जुटाने के चक्कर में इतने अंधे हो गये हैं कि आनेवाले कल की परेशानी इन्हें समझ ही नहीं आती।

हवा बोली, तब तो पृथ्वी पर न हरियाली रहेगी, न हवा, तब क्या होगा इन्सानों का? क्यों ये लोग अपने ही विनाश का कारण बन रहे हैं? कौन समझाएं इन्हें? ये अपने स्वार्थ के पीछे इतने पागल और अंधे हो गये हैं कि इन्हें अपना भविष्य दीख ही नहीं रहा है....बोलते-बोलते पेड़ रुक गया। उसने मुझे अपनी ओर देखते हुए देख लिया था, वहीं से लताड़ते हुए कहा- क्योंरे! तु यहाँ क्या कर रहा है?

उसने डरते-डरते कहा- बहुत गरमी हो रही है, धूप भी बहुत तेज है इसलिए आपकी छाया में थोड़ा देर सुस्ताने बैठ गया था। क्यों तुम्हारे घर का ए.सी. और कूलर कहाँ गया? पेड़ ने फिर कहा। वो बिजली नहीं है, सुबह से कटी हुई है वह हकलाते हुए बोला। बिजली नहीं है तो मैं क्या करूँ चल भाग यहाँ से पेड़ ने फिर उसे लताड़ा। उसने खुशामद किया, आप तो बहुत दयालु हैं, परोपकारी हैं। कृपया मुझपर भी एक उपकार कीजिए और दया करके थोड़ी देर और अपनी छाँव में बैठने दीजिए। देखिए न धूप कितनी तेज है और हवा भी नहीं चल रही है, एक पत्ता भी नहीं हिल रहा है। ऐसे में क्या करूँ, कहाँ जाऊँ?

क्या कहा, धूप तेज है। सूरज दादा भी गुर्राते हुए सामने आ गये। बहुत गुस्से में थे, धूप अगर तेज है, वायुमंडल गरम हो रही है तो क्या इसमें मेरी गलती है? ये सब तुम इंसानों की करनी है और जैसा करोगे वैसा ही तो भरोगे। जैसी करनी, वैसी भरनी। और काटो पेड़, और लगाओ घर में ए.सी.। और खाओ पंखे और कूलर की ठंढ़ी हवा। बाहर की नमी को सुखाकर ठंढ़क ढूँढ़ रहे हो। पेड़ भी काट रहे हो और पेड़ की छाँव भी ढूँढ़ रहे हो। बड़े ढीठ होते हो तुमलोग प्रकृति से सिर्फ लेना जानते हो। परंतु, प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी भूल जाते हो, क्यों?

हवा भी तुनककर पहली बार सामने आकर बोली – क्यों चलेगी हवा? अब तुम इंसानों को मेरी क्या जरुरत, तुम तो अब कृत्रिम (बिजली पंखे, कूलर) हवा के आदी हो चुके हो। जाओ यहाँ से और खाओ वो कृत्रिम हवा। हवा गुस्से से बोली, जब तुम प्रकृति और पर्यावरण से छेड़-छाड़ करोगे तो प्रकृति तो अपना बदला लेगी ही। तभी कुछ छोटे-बड़े जीव-जंतु भी वहाँ आ गये और सूरज दादा से शिकायत करने लगे। हमलोग तो और भी परेशान हैं दादा। इनलोगों की वजह से हमारा घर उजड़ गया। जंगल कट जाने से हमलोग बेघर हो गये हैं। इनलोगों की गलती के कारण वर्षा भी नहीं होती है।

हवा अभी भी गुस्से में थी। सूरज दादा आज इसे अपना रंग दिखा ही दो। आज इसे छोड़ना नहीं। सूरज, पेड़, हवा और सभी जानवर गुस्से से उसकी ओर बढ़ने लगे अपना अपना बदला लेने के लिए। वह डर से थर-थर काँप रहा था और भाग रहा था कि अचानक वह किसी चीज से ठोकर खाकर गिर गया।

गिरते ही उसकी आँखें खुल गई। उसका पूरा शरीर पसीने से भींगा हुआ था। वह घबराकर आँखें फाड़कर अपने चारों ओर देखने

लगा पर वहाँ पर तो कोई नहीं था सिवाय उस पेड़ के जिसकी छाँव में वह लेटा हुआ था। उसकी समझ में बात आ गई कि वह सपना देख रहा था, जो शायद एक सपना नहीं आने वाले कल की हकीकत थी, जो बहुत ही भयानक था जिसे याद करके वो फिर से डर गया।

उसने कुछ सोचा और मजबूत इरादे के साथ अपने-आप से वादा किया। नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे। हम अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को सुधारेंगे। बड़े पैमाने पर पेड़ लगाएँगे और अपने पर्यावरण को बचाएँगे, उसकी रक्षा करेंगे ताकि कल होकर प्रकृति हमसे अपना बदला न ले.....।

राकेश भारती

वरिष्ठ अनुवादक

क्षण भर का जीवन

क्षण भर के जीवन का
हर क्षण जीना जीवन है
जीवन का क्षण, क्षण
जी लेना पर उलझन है।

जीवन के विशेष क्षण हेतु
तरसना भी क्या जीना है?
क्षण भर के जीवन का
हमें हर क्षण तत्क्षण जीना है।

समझना शोभन प्रत्येक क्षण

न क्षण विशेष पर हँसाना हैं

न क्षण विशेष पर रोना है

जीवन बस एक क्षण है

हर क्षण का अपना जीवन है।

क्षण अनचाहा हो या मनचाहा

सबका जीवन क्षण भर है

सुख के जीवन पर हंसना क्या?

दुख के जीवन पर रोना क्या?

सुख दुख का जीवन क्षण भर है।

क्षण भर के जीवन का

हर क्षण जीना जीवन है।

अंकित कुमार झा

एम टी एस

नई पोस्टिंग

विशाल 28 साल का शादीशुदा युवक है। वह एक सार्वजनिक क्षेत्र बैंक में क्लर्क के पद पर कार्यरत है। विशाल की शादी को अभी 4 साल हो चुके है जबकि उसकी नौकरी को 5 साल हुए है। अपने गृह नगर में पोस्टिंग होने के कारण विशाल अपने घर से ही बैंक शाखा तक का आवागमन करता है। पिछले 5 वर्षों से होम पोस्टिंग होने के कारण उसने कई सरकारी नौकरियों को ठुकराया भी है। विशाल की पत्नी एवं माता-पिता उसकी जीवनचर्या से बहुत संतुष्ट एवं प्रसन्न रहते है। विशाल अपने मोहल्ले में बहुत प्रसिद्ध भी है क्योंकि उसकी मदद से मोहल्ले के कई लोगों ने अपना बैंक खाता शाखा में खोला है एवं बैंकिंग से संबन्धित अन्य कार्य भी मोहल्ले के लोग बिना विशाल की सलाह से नहीं करते। होमेपोस्टिंग होने के कारण शाखा में उसकी काफी धाक भी है क्योंकि उसके सभी सहकर्मी अपने गृह नगर से दूर कार्य कर रहे है। हालांकि अब विशाल के लिए भी यही स्थिति होने वाली है।

दरअसल विशाल ने अफसर के पद पर पदोन्नति के लिए परीक्षा पास कर ली है। इसके साथ ही हाल ही में उसने बैंक अफसर की ट्रेनिंग भी समाप्त की है। अब उसे यह भय सता रहा है कि कहीं उसकी पोस्टिंग किसी सुदूर स्थान पर न हो जाए। यह भय उसके अलावा उसकी पत्नी को भी है क्योंकि स्थानांतरण पश्चात वह भी अपने पति के साथ ही जाएगी। विशाल के माता-पिता भी इस बात से चिंतित है। बहरहाल स्थानांतरण की लिस्ट आ गयी एवं सब का भय सच हुआ। विशाल का स्थानांतरण हिमाचल प्रदेश के स्पीति जिले के एक गाँव मे हो गया। अब उसे जाने की तैयारी करनी थी। ज्वाईन करने के लिए विशाल शुरू में अकेले ही गया। उसका विचार था कि वहाँ पहुँचने के पश्चात वह पहले रहने के लिए घर की व्यवस्था करेगा तब वह अपनी पत्नी को वहाँ लेकर जाएगा।

यहाँ का काम निपटाने के बाद विशाल ने शिमला की ट्रेन पकड़ ली। ट्रेन पर चढ़ते वक़्त वह काफी उदास था। जीवन के 28 साल उसने हमेशा परिवार वालों के साथ ही बिताए थे। अब वह एक नयी जगह जा रहा था जिसके बारे में सिर्फ किताबों में ही पढ़ा था उसने। शिमला पहुँचने के बाद उसने एक दिन वहीं आराम किया एवं अगले दिन स्पीति के लिए बस ली। लगभग 6 घंटे की कठिन बस यात्रा के बाद वह स्पीति पहुँचा। रास्ते में विशाल ने मनोरम दृश्यों का भी आनंद लिया। स्पीति पहुँचते ही वह शाखा में गया और अपना परिचय दिया जिससे ज्वाइनिंग संबंधी कार्रवाई शुरू हुई। अगले दिन से ही उसे मैनेजर के पद पर अपनी सेवा देनी थी। अब इसके साथ ही वह एक घर की तलाश करने लगा। काफी तलाश करने के बाद उसे किराये पर एक अच्छा मकान मिल गया। घर का किराया भी बाकी के घरों से कम था। हालांकि घर थोड़ा पुराना था पर इस घर से उसे एक आकर्षण का एहसास हुआ। घर एक छोटी सी धारा के किनारे था तथा उसके पीछे बर्फ से ढके पहाड़ उसे किसी सपने का आभास करा रहे थे। विशाल मन ही मन बहुत प्रसन्न था। वह यह सोच कर ही गदगद हो रहा था की उसकी पत्नी आभा यहाँ आकर कितनी खुश और आश्चर्यचकित होगी।

शुरू के कुछ दिन विशाल के जैसे तैसे गुजरे। घर काफी बड़े क्षेत्र में फैला था और दो मंज़िला था। विशाल को ऊपरी मंज़िल में प्रवेश ना करने की केयरटेकर से सख्त हिदायत मिली थी क्योंकि ऊपर के मंजिल के कमरों में इस घर के मालिक के निजी सामान थे। विशाल की मुलाकात कभी उस घर के मालिक से नहीं हुई थी। अक्सर रात को दरार से हवा की आवाज़ पुराने खिड़कीयों और दरवाजों का अपने आप ही खुलना उसे विचलित कर रहे थे। केयरटेकर ने बताया की बहुत दिनों से यहाँ कोई रहा नहीं है इसलिए थोड़ी बहुत मरम्मत की जरूरत है। इसके बाद दूसरे गाँव से बढ़ई, मिस्त्री आदि को बुलाया गया जिससे यह समस्या कुछ कम हुई। विशाल ने इसके साथ ही एक नौकरनी रखने की सोची पर जब भी वह किसी से वहाँ काम करने की बात किसी से करता उसे ना सुनने को मिलता। विशाल को लगाकि आखिर ऐसा क्या है कि कोई वहाँ आना नहीं चाहता। फिर उसे पता चला की 10 वर्ष पहले वहाँ पर किसी की मौत हुई थी। उसके बाद वहाँ पर अजीब - अजीब घटनाएँ घटित होने लगी। विशाल को यह भी पता चला की इस घर का आखिरी किरायेदार 5 साल पहले यहाँ रहता था जो पास के बांध निर्माण कार्य में इंजीनियर था। यहाँ रहने के 3 महीने के दौरान ही उसका मानसिक संतुलन खराब होता चला गया जिसके बाद उसे नौकरी से निकाल दिया गया और फिर उसके परिवार वाले उसे ले गए। इतना सुनने के बाद भी विशाल को किसी भी प्रकार के डर का आभास नहीं हुआ। बल्कि उसने हंसी उड़ते हुए इसे छोटे शहर की मनगढ़ंत कहानी करार दे दिया। उसने सोचा कि यहाँ के लोग कितने भोले है, आज भी इस तरह की कहानियाँ पर कितना विश्वास कर लेते है

कुछ ही दिनों के बाद विशाल अपनी पत्नी आभा को लेकर उस गाँव में आ गया। उसने आभा के आने के पहले ही सारी व्यवस्था कर रखी थी। हालांकि नौकरानी की व्यवस्था उससे नहीं हो पायी थी। पर दोनों ने मिलकर यह निर्णय लिया कि घर के कार्य वे स्वयं ही कर लेंगे। इससे पैसे की भी बचत होगी। आभा को यह घर और उसके आसपास के दृश्य बहुत पसंद आए। विशाल अब रोज अपने कार्यस्थल को चला जाता और फिर आभा घर के कार्यों में समय व्यतीत करती। फिर एक दिन आभा अकेले बाज़ार के लिए निकली। नयी होने के कारण बहुत से लोगों ने उसके बारे में जानना चाहा। पर जैसे ही किसी को पता चलता कि वह बैंक के नए मैनेजर की पत्नी है तथा वह नदी के किनारे वाले बड़े मकान में रहने आई है, लोग उससे और कुछ पूछना बंद कर देते। एक सब्ज़ीवाली ने उससे ये भी पूछा की क्या उसे डर नहीं लगता, उस डरावने घर में। यह सब होने के बाद आभा काफी विचलित हो गयी थी। विशाल के घर आते ही उसने सबकुछ उसे बता दिया। पर विशाल ने इन सब बातों पर ध्यान नहीं देने को कहा और मकान के बारे में होने वाली बातों अफवाह बताया। आभा विशाल की बातें सुनकर थोड़ी आश्वस्त हुई और उसने भी सोचा की गाँव वाले अक्सर अनपढ़ ही होते है। उसका पढ़ा लिखा पति ठीक ही कह रहा होगा।

कुछ दिन बीते। आभा अक्सर रात को किसी न किसी प्रकार की आवाज़ से नींद से उठ जाया करती थी। रात के अंधेरे में पास बहती धारा की आवाज़ साफ सुनाई देती थी। इसके साथ ही हवा की सनसनाहट, कभी किसी जानवर की आवाज़ आभा को अक्सर कौतूहल में डाल देती थी। आभा को ऊपर वाले मंज़िल में नहीं जाने का नियम भी अजीब लगता था। सीढ़ी के खत्म होते ही वहाँ एक दरवाजा था जिसपर कई बड़े ताले लगे रहते थे। उसने विशाल को कहा भी था कि वे बाकी के गाँव वालों से अलग क्यों रहते है। ऊपर से गाँव वाले भी इस घर को लेकर तरह - तरह की बातें करते है। इसपर विशाल कहता है कि गाँव वाले जलते है क्योंकि हमें इतने कम किराए पर इतना बड़ा घर मिला है। आभा भी विशाल के समझाने पर मान जाती पर जब विशाल काम पर चला जाता तो उसे अकेलापन बहुत कचोटता था। इसी तरह एक दिन आभा अकेली थी और दोपहर का समय था। आभा ऊपर जाने वाली सीढ़ी से कुछ आगे कुर्सी पर बैठी थी। तभी उसकी नज़र सीढ़ी के ऊपर बंद दरवाजे पर पड़ी। उस दरवाजे से आभा को एक आकर्षण का एहसास हुआ जैसे कुछ है जो उसे खींच रहा हो। आभा कुर्सी से उठी और सीढ़ी चढ़ने लगी। दरवाजे के पास पहुँचने पर उसने देखा कि सारे ताले खुले हुए थे। उसने दरवाजा खोलने का सोचा पर उसे याद आया की अंदर प्रवेश करने की सख्त मनाही है। पर उसने दरवाजा फिर भी खोल दिया और फिर उसने जो देखा वो विश्वास से परे था। उसकी आँखों के सामने एक गलियारा था जो दोनों तरह से रोशन था। दरवाजे नए नए पेंट किए लग रहे थे। फर्श पर लाल कालीन बिछी थी। आभा को ये समझ नहीं आ रहा था कि सबकुछ इतना साफ-सुथरा और रोशन कैसे हो सकता है जबकि ये जगह हमेशा बंद रहती है। फिर आभा के पैर मानों अपने आप आगे को चलने लगे। उसे भय के साथ रोमांच की भी अनुभूति हो रही थी। गलियारे के आखिर में एक काले रंग का दरवाजा था जिसकी ओर वह बढ़ती चली जा रही थी। उस दरवाजे की ओर बढ़ते हुए वह ये देख रही थी की गलियारे के दोनों तरफ दो-दो कमरे और थे पर आभा की नज़रें आखिरी कमरे पर ही टिकी थी। जब वह उस कमरे के करीब पहुंची तो अपने आप ही कमरा अंदर की ओर खुल गया। कमरे में अंधेरा होने के कारण उसे अंदर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तभी अचानक से कमरा रोशन हो गया। आभा अंदर जाने से घबराने लगी। उसे यह समझ नहीं आया की आखिर वो यहाँ तक आई ही क्यों?तभी गलियारे से रोशनी समाप्त हो गयी। अब सिर्फ उस कमरे में रोशनी थी। आभा काफी डर चुकी थी पर वह उस अंधेरे गलियारे में जाने से संकोच करने लगी। आखिर में वो उस कमरे में प्रवेश कर गयी। अंदर जाते ही उसने देखा की कमरे में कई आईने थे। एक बड़ा सा पलंग था जो काफी पुराने जमाने का लग रहा था। ऊपर एक झूमर लगा था कमरे की साज-सज्जा देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि किसी लड़की का कमरा हो। तभी उसकी नज़र एक बड़ी सी पेंटिंग पर पड़ी। वो एक लड़की की पोर्ट्रेट थी। आभा बड़े ध्यान से उस पेंटिंग को देखने लगी। देखते-देखते उस पेंटिंग की लड़की की छवि बदलने लगी। ये देखकर आभा के रोंगटे खड़े हो गए पर उसे ऐसा लगा मानो

उसके पैर वही पर जम गए हो। पर कुछ ही सेकंड के बाद उस लड़की की छवि आभा में बदल गयी। यह देख आभा की आँखें फटी की फटी रह गयी, अचानक से उसके अंदर ऊर्जा का संचार हुआ। फिर वह इतनी तेज़ भागी की उसने पीछे न देखते हुए सीधे सीढ़ी से नीचे उतर कर ही दम लिया। इसके बाद वह घर से बाहर आ गयी। आभा पसीने से लथपथ हो चुकी थी। उसने केयरटेकर को ढूँढने कि कोशिश की पर वह नहीं मिला। पर आभा ने बिना विशाल के घर के अंदर नहीं जाने का सोच लिया था।

आभा ने जो कुछ देखा था वो उसे दिमाग में प्रोसैस नहीं कर पा रही थी। उसने ऐसा कभी महसूस नहीं किया था और और ये अनुभव किसी दुःस्वप्न से कम नहीं लग रहा था उसे। उस लड़की की छवि और उसका आभा की छवि में बदलने कि प्रक्रिया लगातार उसके दिमाग में घूम रही थी। दो घंटे घर के बाहर रहने के बाद आभा ने देखा कि विशाल वापस आ गया है। उसने विशाल के आते ही उसे सारी कहानी बता दी।

(आगे की कहानी भाग- 2 में)

अतुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

काव्य सुधा

बचपन का एक प्यार था
सुधा नाम की एक लड़की,
जादू भरी दो आँखें थी उनकी
होंठ जैसे गुलाब की पंखुड़ी॥

कभी न आँखें मिलायी मुझसे वो
हमेशा दृष्टि जमीन तरफ की

शर्म से चेहरा रंगीन हो उठता
जब मिलता हुआ मैं चौराहे पर ही॥

पचास साल की पुरानी बात है यह
सुधा तब पन्द्रह और मैं बीस की था,
दिल धड़कने लगता था मेरा
याद उनकी आते ही॥

रिश्ता लेकर आया था
एक स्वजन मेरा ही,
चमक उठा था मेरा मन
जब सुधा से मेरे रिश्ते की बात की॥

पर उनकी सम्मति मिले बिना
कैसे सम्पन्न होता वह मिलन?
कविता की डाली भरकर
शुरु किया मैं अपना भाव उन्मोचना॥

अचानक एक मौका आया
एक शादी के न्योते पर मैं गया,
और लड़कियों में से सुधा भी
खिलती हुई दिखाई दी॥

दिल का धड़कना शुरु हो गया
क्या सम्मति की बात पूछ जाए,
पता नहीं कब वह मेरी पीछे चली आई
जैसे चंद्रमा बादल से निकल आए॥

मैंने घुमकर सीधा उनकी ओर देखी
पल भर के लिए वह आँखें मिलायी,
बालों से निकालकर एक गुलाब की कली
सीधा मेरी ओर फेंककर भागी॥

पर बात तब न हुई पक्की
बीच में पचास साल बीता
काम के चलते मैं चला था दूरदेश
सुधा भी किसी और की बनी रानी॥

अवसर के बाद काव्य चर्चा में
धीरे धीरे मैं डुबने लगा,
जिंदगी पर लिखी कविताओं की
संकलन भी कुछ प्रकाश होने लगा॥
कई बार कवि सम्मेलनों में
मेरा बुलावा भी आने लगा था,
प्रतिष्ठित कवियों के साथ
मेरा नाम भी लिया जा रहा था॥
पर आज के दिन कुछ और ही था
मेरे लिए बहुत खुशी ही सही
नाती की शादी जो कराने आया
शहर के ईस परिवार में ही॥

खातिरदारी मेरी बहुत हुई।
मैं जो दुल्हन के दादाजी निकले,
एक प्रख्यात कवि होने के नाते
लोगों की भीड़ थोड़ा ज्यादा ही बनें॥

अचानक अतिथियों की भीड़ हटाते हुए
चमकती हुई एक सुश्री आने आये,
सफेद बालों के बीच सिंदुर की आभा।
आभूषणों की जुलूस को फीके कर दिए॥

वह सामने आयी
सीधा आँखों से आँखे मिलायी॥
मेरा संकलित प्रेम कविताओं की
पंक्तियों की झरना बहाने लगी॥

उनकी मधुर आवाज से
मैं पिघलने लगी
एक पल के लिए वह पलक झपकाना
फिर याद आने लगी॥

कौन है यह सुधा?
बदलाव उसमें बहुत ही हुआ
पर आंखों में उस दिन जैसा गहराई
अभी तक छिपाया न गया॥

अपने बालों में से चमेली की हार
निकालकर
उसने मेरी हांथो में पहनायी,
सुधा के नाम मेरी प्रेम कथा
आज असली सम्मान पायी॥

उनकी एक आवाज सुनने के लिए
मैं जब तरसता था,
आज उनकी बातें श्रोतों की तरह
कहाँ से कहाँ तक बहने लगा॥

मिलन न हो पाया था हमें
इस नश्वर जीवन में,
हमारी प्रेमगाथा अक्षय हुआ
पचास साल बाद इस नयी दोस्ती में॥

आमंत्रित सज्जनों ने तालियों से
हमारी दोस्ती को स्वीकार की,
गुलाब की कली चमेली की हार
मिलकर एक सुधामयी काव्य बनी॥

तापसी आचार्य बसाक
सहायक लेखा अधिकारी

क्या जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण में मदद करेगा AI?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) प्रौद्योगिकियों को प्राय: भविष्य के प्रवेश द्वार के रूप में देखा जाता है। वर्ष 2022-2023 के केंद्रित वजट के रूप में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को"सनराइज टेक्नोलॉजी" के रूप में वर्णित किया गया है, जो वृहत पैमाने में सतत विकास में सहायता प्रदान करेगी और देश का आधुनिकीकरण सुनिश्चित करेगी।"

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में पर्यावरण-अनुकूल अवसंरचना के विकास हेतु AIबेहद मददगार साबित हो सकता है, जो जलवायु अनुमानों और उद्योगों के डी-कार्बोनाइजिंग में सहायक हो सकता है। लेकिन विडंबना यह है कि AI स्वयं में प्रोद्योगिकी विकास के संबंध में एक पर्यावरणीय लागत रखता है।

यदि हम एक बेहतर भविष्य की आकांक्षा रखते हैं तो यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने में AI के उपयोग से प्राप्त लाभ इसमें निहित कमियों से अधिक महत्वपूर्ण साबित हो।

चारों तरफ हरे-भरे खेत, पेड़-पौधे, पहाड़, पक्षियों की चहचहाहट, नदियों का कल-कल बहता हुआ जल, बारिश की फुहारें और गुनगुनी सी धूप किसे पसंद नहीं आती है। जाहिर सी बात है कि हर इन्सान प्रकृति के मनोरम नजारे को देखना चाहता है, उसके करीब रहना चाहता है। उत्तराखंड और हिमाचल जैसे राज्यों में लगातार बढ़ते पर्यटकों की भीड़ इस बातका प्रमाण है कि भले ही लोग बड़ी-बड़ी इमारतों में रहते हो, बड़े-बड़े कारखानों व कंपनियों में काम करते हो लेकिन मानसिक सुकून के लिए वे प्रकृति की गोद ही ढूंढ़ते हैं। अब जरा एक क्षण के लिए सोचिए की अगर आपसे यह गोद छिन ली जाए, आप जिधर भी नजर दौड़ाए उधर ऊँचे-ऊँचे भवन, होटल, दुकाने, शोरूम और हाइवे आदि के सिवाए और कुछ न दिखे तो.....डर गए ना.....। असल में, जिस परिस्थिति की कल्पना मात्र से ही हमारी रूह कांप जाती है, वो हकीकत में घटित हो जाए तो कितना खतरनाक होगा - इसी संदर्भ में अनामिका अंबर जी लिखती हैं -

"धरा पर चंदा की चाँदनी और गगन पर तारा नहीं मिलेगा,
कदर जो कुदरत की न हुई तो कोई नजारा नहीं मिलेगा।
पनाह देते हैं छाँव देते, सफर में चलने को पाँव देते,
हरा-भरा न हो जहान तो कहीं गुजारा नहीं मिलेगा।"

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणप्रदूषण काAIके माध्यम से भी कुछ हद तक निदान किया जा सकता है। AI मशीनों द्वारा उन कार्यों को पूरा करने की क्रिया है जिसके लिए ऐतिहासिक रूप से मानव क्षमता / बुद्धि की आवश्यकता रही है। इसमें मशीनलर्निंग, पैटर्न रिकग्निशन, बिग डाटा, न्यूरल नेटवर्कस, सेल्फ एल्गोरिदम जैसीप्रौद्योगिकियाँशामिल है। विकासशील देशों की सरकारें जटील सामाजिक-आर्थिकसमस्याओं को हल करने के लिए AI को किसी जादुई उपाय के रूप में देखती है, इसलिए आने वाले समय में प्रौद्योगिकी संबंध उत्सर्जन में AI की उच्च हिस्सेदारी नजर आना तय है।

वर्तमान समय मेंमानव जाति के लिए सबसे बड़ा खतराजलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में AI अत्यन्त मूल्यवान साबित हो सकता है। दुनियाभर में AI संबंधी चैट बॉक्स यानि चैट जी.पी.टी.बहुतप्रचलित हो रही है, जो कि वर्तमान समय में माइक्रोसॉफ्ट के अंतर्गत आता है। कई जानकार इसके पक्ष में खड़े है जबकि कई लोग इसके विरोध में हैं। लोगों का कहना हैं किचैट जी.पी.टी जैसी एप्लीकेशन हैं यह आगे चलकर लोगों के रोजगार एवं आजीविका पर खतरा उत्पन्न कर सकती है। इसके विपरित जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण के क्षेत्र में AI किस प्रकार मदद कर सकती है वह हम निम्नलिखित रूप में समझ सकते हैं:-

जलवायुपूर्वानुमानों का सुदृढ़ीकरण।

निर्माण से परिवहन तक उद्योगों की डी-कार्बोनाइजिंग के लिए कुशलनिर्णयन सक्षम करना।

अक्षय ऊर्जा के आवंटन के तरीके पर विचार।

शहरों को हरा-भरा करना था वेंटिलेशन निर्माण के लिए विंड चैनलआर्किटेक्चर का उपयोग करना,शहरों को चरम गर्मी से मुकाबला करने में सक्षम बनाने के लिए कुछ तरीके है जिसे AI द्वारा निर्देशित कियाजा सकता है।

AI निम्न उत्सर्जन वाली अवसंरचना का विकास कर जलवायुसंकट के प्रभावों को कम करने में मददकर सकता है।

AIवृक्षों को बचाने में किस प्रकार मदद कर सकता है यह हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते है:-

वनों की कटाई और भूमि उपयोग में परिवर्तन (उत्सर्जन -10%)

पेड़कार्बन-डाई-ऑक्साइडको अवशोषित और संग्रहित करते हैं

वृक्षों की कटाई से कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा वातावरण में बढ़ती है फलस्वरूप प्रदुषण होता है।

दुनियाभर के अन्तर्राष्ट्रीय रेनफारेस्ट कनेक्शन संगठन AI आधारित तकनीक विकसित करपेड़ों की कटाई पर नजर रख उसे रोका जा सकता है।सेंसर डाटा विश्लेषण के माध्यम से पेड़ काटने की आवाजों कोयाट्रक ले जाने की आवाजों को AI के माध्यम से कैपचर करने का प्रयास किया जा सकता है।

कार्बन फुटप्रिंट :-AI का जलवायु पर प्रभाव प्रमुख रूप से वृहत AI मॉडल्स के प्रशिक्षण और संचालन में होने वाले ऊर्जा उपभोग के कारण है।वर्ष 2020 में वैश्विक उर्सजन में डिजिटल प्रौद्योगिकीयों का योगदान १.८% से ६.३% के

बीच रहा थाइसी अवधी में विभिन्न क्षेत्रों में AI विकास और अंगीकरण में वृद्धि हुई और इसके साथ ही वृहत से वृहतरAI मॉडल्स से संबद्ध प्रसंस्करणशक्ति की मांग भी बढ़ी थी। AI के जलवायु प्रभाव को कम करने में एक मुख्यसमस्या है इसकी ऊर्जा खपत और कार्बन उत्सर्जन की मात्रा निर्धारित करना तथा इस सूचना को पारदर्शी बनाना।

यूनेस्को के प्रयास :-AI की नैतिकता और सतत विकास पर मुख्यधारा बहस में तेजी से संवहनीयता के विचार का प्रवेश हो रहा है। हाल ही में यूनेस्को ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता पर अनुशंसा को स्वीकार कर लियाऔर विभिन्न अभिकर्ताओं से आह्वान किया कि "AI प्रणाली के पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जाए, जिसमे कार्बन फुटप्रिंट को कम करना भी शामिल है।"

इस संदर्भ में अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट, अल्फाबेट और फेसबुक जैसे टेक-दिग्गजों ने अपनी 'नेट जीरो' नीतियों एवं पहलों की घोषणा की है, जो एक अच्छा संकेत है, लेकिन ये प्रयास मामुली और अप्रयाप्त हैं। AI के माध्यम से विभिन्न रणनीतियों को अपना कर विज्ञान तकनीकी के क्षेत्र में पर्यावरण का निदान कर सकते हैं।

विकासशील और अल्पविकसीत देशों की समस्या : इन देशों को विशेषकर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि AI जलवायु प्रभाव एवं पर्यावरण परिवर्तन संबंधो पर पर्तमान प्रयास एवं आख्यान पश्चिमी देशों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।

समर्पित अनुसंधान जलवायु परिवर्तन औरAIके बीच के संबंधों पर अधिक अध्ययन नहीं हुआ है। इस विषय का अध्ययन करने वाली बड़ी कंपनियों नतो इस अध्ययन के लिए सार्थक रूप से प्रतिबद्ध रही हैं, न ही वे पारदर्शी हैं। वे बाहरी दिखावा तो करती हैं लेकिन अपने परिचालनों के जलवायु प्रभावों और पर्यावरण परिवर्तन को पर्याप्त रूप से सीमित करने को लेकर अधिक गंभीर नहीं है।

* इस क्षेत्र में समर्पित अध्ययन, अनुसंधान एवं विकास में आधिकारिकनिवेश एवं बेहतर नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

* AI को विकसित एवं कार्यान्वित करने की जरूरत है, ताकि यहसमाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सके औरखर्च से अधिक उर्जाबचाकर पर्यावरण की रक्षा कर सके।

सतत विकास के साथ प्रौद्योगिकी का विलय करना :-यह सुनिश्चित करने के लिए की AI का उपयोग सहायता प्रदान के लिए किया जाए, न की समाज में बाधा डालने के लिएयह उपयुक्त समयहै कि वर्तमान समय के दो बड़े विषयों- डिजिटल प्रौद्योगिकी और सतत विकास (विशेष रूप से पर्यावरण) को आपस में संयुक्त कर दिया जाए।

यदि हम डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग सतत विकास को बचाने के लिए करेंगे तो यह निश्चित ही हमारे पास उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम संभव उपयोग हो सकता है।

विकासशील विश्व के लिए अवसरों की खोज :- भारत सहीत सभी विकासशील देशों की सरकारों को AI की जलवायु लागत के संदर्भ में अपनी प्रौद्योगिकी आधारित विकास प्राथमिकताओं का आकलनकरना चाहिए।

विकासशील राष्ट्र किसी प्रकार की विसरात अवसंरचना से त्रस्त नहीं है, इसलिए उनके लिए बेहतर निर्माण करना आसान होगा। इस देश को उसी AI नेतृत्व वाले विकास प्रतिमान का पालन करने की आवश्कता नहीं है जिसका पालन पश्चिमी देश करते हैं।

डब्लू.ई.एफ. की सिफारिश :- वर्ष २०१८ में विश्व आर्थिक मंच (डब्लू.ई.एफ.) की एक रिपोर्ट से पता चला कीAI

पृथ्वी की कुछ पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकता है, बसइसे बेहतर तरिके से प्रबंधित करना महत्वपूर्ण है। किसी प्रतिकूल परिस्थिति से बचने के लिए डब्लू.ई.एफने प्रस्ताव किया कि सरकारों और कंपनियों को 'सुरक्षित' AI में प्रगति की ओर आगे बढ़ाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मानव जाति इस तरह के AI का विकास नहीं कर रही जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है।

* A□ डेवलपर्स को " प्राकृतिक पर्यावरण के स्वास्थय को एक मौलिक आयाम के रूप में सन्निहित करना चाहिए।"

AI अवैध शिकार को रोकने में भी सहायक हो सकती है जिससे पर्यावरण के क्षरण में कमी आएगी। वर्तमान समय में गैंडो की संख्या अवैध शिकार की वजह से एवं निवास स्थान की कमी के वजह से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं। दुनिया भर में इसकी आबादी लगातार कम होती जा रही है फिर भीदुनिया भर में गैंड़ों का शिकार नहीं रूक रहा क्योंकि उसका सींघ बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। इसी शिकार को रोकने के लिए दक्षिण अफ्रीका की एक कंपनी ने AI आधारित एक मॉडल विकसित किया है एक कंगन बनाया है जो मुख्य तौर पर गैंड़ों के साथ जोड़ दिया जाता है और उस कंगन को मशीन लर्निंग एल्गोरिदम पर इस्तेमाल करता है और जानवरों के व्यवहार में जो असामान्य परिवर्तन आया है उन परिवर्तनों कोजानने का प्रयास करता है। इस प्रकार जानवरों को बचा कर पर्यावरण क्षय को रोक सकते हैं। AIमें मानव बुद्धि से परे जाने की पूरी क्षमता है और यह किसी भी विशेष कार्य को सटीक और कुशलता से कर सकता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि AIमें अपार क्षमता है। हालांकि किसी भी चीज पर अधिक निर्भरता अच्छी नहीं होती और कुछ भी पूर्ण रूप से मानव मस्तिष्क के समान नहीं हो सकता है।

इसलिए AI का अत्याधिक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि बहुत अधिक स्वचालन और मशीनों पर निर्भरता, वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। चूंकि आज के वैश्विक परिदृश्य को देखते हुए AI एक महत्वपूर्ण आयाम की ओर बढ़ते नजर आ रही हैं जो पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन में भी सहायक हो सकती हैं।

अर्थात यह उपयुक्त समय है AI को अधिक पर्यावरण अनुकूल तरीके से विकसित करने के बारे में विचार किया जाए।

अनुज साव
लेखाकार

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान
हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन
करते हुए महालेखाकार महोदय
एवं अन्य

कार्यालय प्रमुख द्वारा वर्ष 2024 के हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित पोस्टर/बैनर प्रतियोगिता प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए महालेखाकार महोदय एवं अन्य।

हिंदीं पखवाड़ा 2024 के उद्घाटन समारोह के दौरान उपस्थित महालेखाकार महोदय एवं अन्य

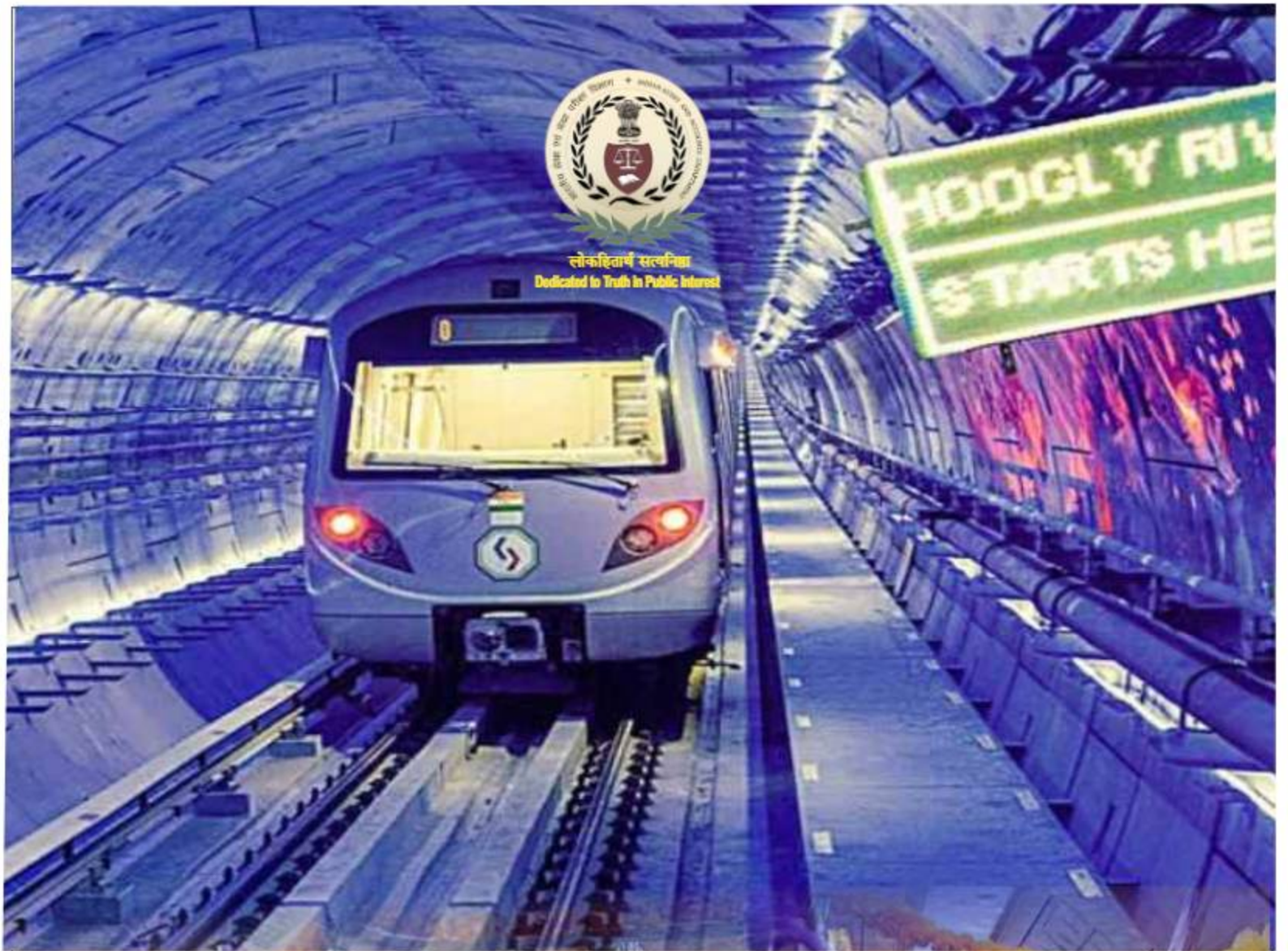

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता- 700 001